# शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

https://epaper.shubhamsandesh.net

रांची, सोमवार 20 अक्तूबर 2025 ● कार्तिक अमावस्या, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 191 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

अयोध्या में मनी भव्य दीपावली

## दीपावली आज : कार्तिक अमावस्या पर प्रकाश का पर्व

### समुद्र मंथन से प्रकट हुईं मां लक्ष्मी, दीपों से झिलमिलाता भारत-पर्व एक, मान्यताएं अनेक

विजय केसरी

दीपावली... नाम आते ही आंखों में रौशनी और दिल में उल्लास की लहर दौड़ जाती है. यह सिर्फ एक पर्व नहीं, बल्कि प्रकाश, ज्ञान, समृद्धि और आध्यात्मिक ऊर्जा का उत्सव है. भारत सहित विश्वभर में जहां भी भारतीय समुदाय निवास करता है, यह पर्व पूरे श्रद्धा, प्रेम और परंपरा के साथ मनाया जाता है.

**मां लक्ष्मी का प्राकट्य: कार्तिक अमावस्या का दिव्य महत्व**

हिंदू मान्यता के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक मास की अमावस्या को मां लक्ष्मी प्रकट हुई थीं. यही कारण है कि इस दिन मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की विशेष पूजा होती है. लोग अपने घरों, प्रतिष्ठानों की साफ-सफाई कर दीपों से सजाते हैं और धन, समृद्धि और शांति की कामना करते हैं.

**दीपावली एक दिन का नहीं, बल्कि पांच दिवसीय पर्व श्रृंखला है:**

**धनतेरस:** समुद्र मंथन से प्रकट हुए धन्वंतरि देव की पूजा, बर्तन व आभूषण खरीदने की परंपरा.

**नरक चतुर्दशी:** भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध की स्मृति में.

**दीपावली:** मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा, रात्रि जागरण और दीप सज्जा.

**गोवर्धन पूजा:** श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन उठाने की कथा पर आधारित.

**भाई दूज:** भाई-बहन के पवित्र प्रेम का पर्व.

**अघोर परंपरा और मां काली की उपासना :** इस रात को अमावस्या होने के कारण, इसे अघोर साधना और मां काली की पूजा के लिए भी विशेष माना जाता है. देशभर के काली मंदिरों में इस रात को विशेष पूजा-अर्चना होती है.

**विविध धर्मों की एकता का प्रतीक :** हिंदू धर्म में यह राम के अयोध्या लौटने और लक्ष्मी पूजन से जुड़ा है. जैन धर्म में यह दिन भगवान महावीर के निर्वाण का स्मरण कर मनाया जाता है. सिख धर्म में इसे बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है.

**फसल उत्सव से आध्यात्मिकता तक :** भारत एक कृषि प्रधान देश है, और दीपावली को फसल उत्सव के रूप में भी देखा गया है-फसल कटाई के बाद दीप जलाकर उत्सव मनाने की परंपरा. यह त्योहार समय के साथ केवल कृषि पर्व न रहकर एक धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महोत्सव बन गया.

**ऐतिहासिक ग्रंथों में उल्लेख :** पद्म पुराण, स्कंद पुराण और काव्यमीमांसा जैसे ग्रंथों में दीपावली का उल्लेख है. अल-बेरुनी जैसे विदेशी इतिहासकारों ने भी इसे भारतीय संस्कृति का प्रमुख पर्व माना है.

**उपनिषदों का संदेश :** "तमसो मा ज्योतिर्गमय"-अंधकार से प्रकाश की ओर चलो, इसी भावना का प्रतीक है.

#### पूजा विधि और धार्मिक अनुशासन

- पूजा के दौरान मन शांत और केंद्रित रहना चाहिए.
- पुरोहित अथवा आचार्य द्वारा बताए गए पूजा मुहूर्त और विधियों का पालन करना चाहिए.
- महिलाएं भी इस दिन घर पर लक्ष्मी-गणेश की पूजा विधिपूर्वक करती हैं.
- पूजा के अगले दिन प्रतिष्ठान में मूर्तियों की स्थापना और दैनिक पूजन की परंपरा सुख-समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है.
- दीपावली : सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता का पर्व
- इस पर्व को देश के हर पंथ, भाषा और समुदाय के लोग मिलजुल कर मनाते हैं. यह पर्व आज केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक अखंडता और सामाजिक समरसता का पर्व बन चुका है.

### दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

पाठकों, वितरक बंधुओं, विज्ञापनदाताओं और तमाम शुभेच्छुओं को हिंदी दैनिक शुभम संदेश परिवार की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं.

### आज अवकाश

शुभम संदेश का कार्यालय दीपावली के शुभ अवसर पर सोमवार 20 अक्तूबर 2025 को बंद रहेगा. इसका अगला अंक बुधवार 22 अक्तूबर को प्रकाशित होगा.

-संपादक

### ब्रीफ न्यूज

#### दिल्ली-एनसीआर की हवा जहरीली हुई

**नयी दिल्ली ।** दिल्ली-एनसीआर में दिवाली का समय वायु प्रदूषण के लिए चुनौती बन जाता है. हालांकि दिवाली से पहले ही दिल्ली-एनसीआर में हवा की जहरीली हो गई है, सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के मुताबिक रविवार को सुबह दिल्ली के अक्षरधाम इलाके में एयर क्वालिटी इंडेक्स 426 दर्ज किया गया है, जो एक खतरनाक कैटेगरी में आता है. दीवाली के मौके पर पटाखों और धूल-मिट्टी के कारण हवा बेहद गंदी हो जाती है. इस प्रदूषण से बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों को खासतौर पर खतरा होता है, उनको सांस लेने में तकलीफ होती है. इसलिए अगर आप नहीं चाहते हैं कि दीवाली के बाद आपके परिवार की पॉल्यूशन से हालात खराब हो जाए, तो कुछ जरूरी काम हैं, जिन्हें सबको दिवाली से पहले करना चाहिए.

अयोध्या । अयोध्या में प्रभु श्रीराम के आगमन पर दीपोत्सव का आयोजन अत्यंत भव्य एवं प्रभावशाली ढंग से किया गया. इस खास अवसर पर 56 घाटों पर कुल 26.11 लाख दीयों का प्रज्ज्वलन कर एक नया विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया गया, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है. यह लगातार नौवीं बार है जब अयोध्या ने दीपोत्सव के माध्यम से विश्व कीर्तिमान बनाया है. इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे और इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने.

## अयोध्या में प्रभु श्रीराम का भव्य स्वागत : गिनीज बुक में दर्ज हुआ विश्व रिकॉर्ड

# 29 लाख दीयों से जगमगाई रामनगरी

**दीपोत्सव में दो विश्व कीर्तिमान: दीपों की गिनती और सरयू आरती**

दीपोत्सव के दौरान न केवल दीपों के नए रिकॉर्ड की घोषणा हुई, बल्कि दूसरा रिकॉर्ड भी स्थापित किया गया. सरयू आरती में एक साथ 2100 वेदाचार्यों ने हिस्सा लिया, जो योगी सरकार द्वारा दूसरी बार हासिल किया गया अनूठा विश्व रिकॉर्ड है. दीपोत्सव के इस अनोखे दृश्य को देखने के लिए देशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु, पर्यटक और भक्त अयोध्या पहुंचे. कार्यक्रम के बाद भव्य आतिशबाजी और ड्रोन शो ने माहौल को और भी रोमांचक बना दिया.

**विश्व रिकॉर्ड की प्रक्रिया: 75 सदस्यीय टीम ने किया गणना का निरीक्षण :** गिनीज बुक की 75 सदस्यीय टीम ने शनिवार को सरयू नदी के 56 घाटों पर जलाए गए दीयों की गणना की. यह गणना विश्वविद्यालय के पर्यवेक्षक, घाट प्रभारी, समन्वयक और गणना वॉलंटियर्स की उपस्थिति में की गई. दीये जलाने से पहले घाटों पर तेल गिरने से बचाव का विशेष ध्यान रखा गया. दीयों में तेल भरने के बाद बाती के आगे वाले हिस्से पर कपूर का पाउडर लगाया गया, जिससे दीये जलाने में आसानी हुई. समन्वयकों को घाटों के अनुसार आवश्यक सामग्री जैसे कि कैंडल, माचिस, डंडे लगे कैंडल एक साथ ही वितरित की गई. सभी स्वयंसेवक एवं समन्वयक सूती कपड़ों में घाटों पर उपस्थित रहे, जिससे दीपोत्सव का आयोजन सुरक्षित और सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न हो सका.

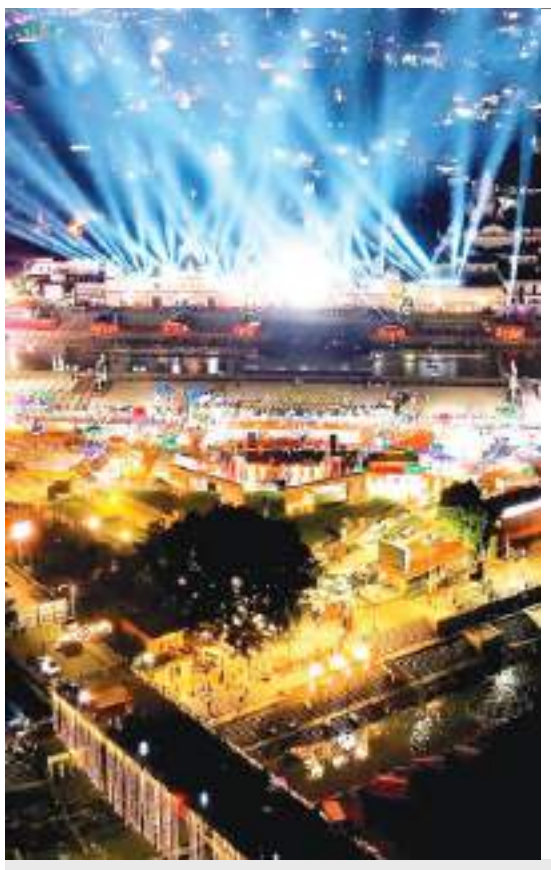

### मुख्यमंत्री योगी ने किया श्रीराम का राजतिलक

दीपोत्सव से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामकथा पार्क में आयोजित श्रीराम राज्याभिषेक समारोह में प्रभु श्रीराम का राजतिलक किया. इस समारोह के दौरान रामकथा पार्क जय श्रीराम के उद्घोष से गूंज उठा. मुख्यमंत्री ने श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और गुरु वशिष्ठ को तिलक लगाकर माल्यार्पण किया तथा आरती उतारी. प्रदेश सरकार के मंत्री सूर्य प्रताप शाही, जयवीर सिंह, राकेश सचान और सतीश शर्मा ने भी आरती में भाग लिया. राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय समेत अयोध्या के संत महंतों ने भगवान के स्वरूपों की आरती की. इस समारोह में हजारों संत, महंत, श्रद्धालु और पर्यटक शामिल हुए, जिन्होंने इस पावन आयोजन का हिस्सा बनकर उत्साह बढ़ाया.

### चित्रकूट दीपोत्सव में उमड़ा श्रद्धा का सागर

### पांच दिन में 25 लाख श्रद्धालु आएंगे

भोपाल . मध्य प्रदेश के सतना जिले के पवित्र तीर्थस्थल चित्रकूट में दीपावली के शुभ अवसर पर शुरू हुआ पांच दिवसीय दीपोत्सव इस बार पहले ही दिन धार्मिक उत्साह और भव्यता का अद्भुत संगम लेकर आया. शनिवार को दीपोत्सव के पहले दिन ही करीब चार लाख श्रद्धालुओं ने धर्मनगरी पहुंचकर भगवान की आराधना और कामदगिरि परिक्रमा का पुण्य लाभ लिया. मंदाकिनी तट दीपों की जगमग रोशनी से आलोकित हो उठा, मानो स्वयं देवताओं ने धरती पर उतरकर इस अलौकिक दृश्य को निहारा हो. प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रविवार को आगमन पूरे आयोजन का केंद्र रहेगा.

**25 लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने का है अनुमान :** इस बार के आयोजन में अनुमान है कि अगले पांच दिनों में लगभग 25 लाख श्रद्धालु देशभर से चित्रकूट पहुंचेंगे. इनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र और राजस्थान से आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सर्वाधिक रहेगी. मेले में धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ स्थानीय कारीगरों और व्यापारियों के लिए भी यह अवसर रोजगार और प्रदर्शन का बन गया है.

**स्वयंसेवकों की भूमिका और व्यवस्था**

अवध विश्वविद्यालय से आए स्वयंसेवक बसों के माध्यम से हनुमानगुफा चौराहे तक पहुंचे. बसें फटिकशिला पार्किंग में पार्क की गईं, जहां से स्वयंसेवकों ने पैदल अपने निर्धारित घाटों तक जाने का मार्ग अपनाया. प्रशासन ने भीड़ नियंत्रित करने के लिए विशेष सतर्कता बरती और 20 अक्टूबर को भीड़ कम होते ही यातायात व्यवस्था सामान्य कर दी जाएगी.

## विस चुनाव : बिहार कांग्रेस अध्यक्ष और विधायक की बातचीत का ऑडियो वायरल !, राजेश बोले-

# टिकट बंटवारे में सांसद पप्पू यादव कर रहे हैं खेल

- बिहार विधानसभा चुनाव में टिकट बंटवारे को लेकर कांग्रेस के अंदर की यह कलह पार्टी की छवि के लिए चिंताजनक है.

**संवाददाता । पटना**

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी के अंदर टिकट बंटवारे को लेकर उथल-पुथल बढ़ती जा रही है. पार्टी के भीतर असंतोष की लहर तब तेज हुई जब सोशल मीडिया पर एक ऑडियो क्लिप वायरल हो गई. इस क्लिप में कथित रूप से पूर्णिया जिले की कस्बा विधानसभा सीट से कांग्रेस विधायक अफाक आलम और बिहार कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम के बीच बातचीत सुनी जा सकती है. बातचीत में टिकट को लेकर हो रही खींचतान और राजनीतिक खेल की बात सामने आई है.

**वायरल ऑडियो में टिकट को लेकर तीखी बहस :** वायरल ऑडियो में अफाक आलम प्रदेश अध्यक्ष से अपने टिकट (सिंबल) जारी करने की मांग करते दिख रहे हैं. अफाक ने कहा कि उन्होंने पार्टी के सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली हैं, लेकिन अब तक उनका टिकट नहीं जारी किया गया है. इसके जवाब में राजेश राम ने बताया कि उन्होंने अपनी तरफ से सब कुछ 'ओके' कर दिया है, लेकिन टिकट प्रभारी ने इसे रोक रखा है. बातचीत के दौरान राजेश राम ने कहा कि इस पूरे मामले में निर्दलीय सांसद पप्पू यादव खेल कर रहे हैं और वह किसी अन्य उम्मीदवार के लिए लॉबिंग कर रहे हैं. इस पर अफाक आलम ने सवाल किया, "पप्पू यादव हमारी पार्टी में क्या हैं?"

### बिहार कांग्रेस में टिकट बंटवारे को लेकर विवाद

जिसका जवाब देते हुए राजेश राम ने कहा, "यह तो ऊपर पूछिए कि पप्पू यादव क्या हैं." यह बातचीत सोशल मीडिया पर तेजी से फैल रही है और राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनी हुई है. हालांकि, अभी तक पार्टी की ओर से इस वायरल ऑडियो की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की गई है.

**टिकट कटने से नाराज विधायक ने लगाए गंभीर आरोप :** कस्बा सीट से दो बार विधायक रह चुके अफाक आलम को इस बार कांग्रेस ने टिकट नहीं दिया है. इसके बाद उन्होंने पार्टी नेतृत्व पर गंभीर आरोप लगाए हैं. उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि टिकट वितरण पूरी तरह से अपारदर्शी और पक्षपातपूर्ण रहा है. अफाक ने प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम, पार्टी प्रभारी कृष्ण अल्लावारु और शकील अहमद खान पर पैसे लेकर टिकट बांटने का आरोप लगाया. उन्होंने कहा, "पैसे लेकर टिकट बांटे गए हैं, कई योग्य नेताओं को दरकिनार कर दिया गया है. पार्टी में विचारधारा खत्म हो चुकी है, अब पैसा बोल रहा है. जो पैसा दे रहा है, उसे टिकट मिल रहा है." अफाक ने पार्टी में कुछ अन्य नेताओं पर भी ऐसी गड़बड़ियों में शामिल होने का आरोप लगाया और उच्चस्तरीय जांच की मांग की.

**कांग्रेस में टिकट बंटवारे को लेकर बढ़ता संकट :** बिहार विधानसभा चुनाव में टिकट बंटवारे को लेकर कांग्रेस के अंदर की यह कलह पार्टी की छवि के लिए चिंताजनक है. विधायकों और नेताओं के बीच टिकट को लेकर पैदा हुई खींचतान ने पार्टी को आंतरिक असंतोष के दौर में डाल दिया है. साथ ही, बाहरी हस्तक्षेप और पार्टी के अंदरूनी मामलों में बाहरी नेताओं के दखल की बातें पार्टी नेतृत्व के लिए बड़ी चुनौती बन गई हैं. यह विवाद कांग्रेस की चुनावी रणनीति पर भी असर डाल सकता है, खासकर ऐसे वक्त में जब बिहार में विपक्षी पार्टियों के बीच गठबंधन और सीट बंटवारे को लेकर भी तनाव बढ़ रहा है. पार्टी नेतृत्व के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे इस विवाद को जल्द से जल्द सुलझाएं और अपने प्रत्याशियों को लेकर साफ स्थिति दें.

## जेईई मेंस 2026 का शेड्यूल जारी

# जनवरी-अप्रैल में होंगे दो सेशन

**नयी दिल्ली ।** संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) मेंस 2026 की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए अच्छी खबर है नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने जेईई मेन्स 2026 परीक्षा के डेट्स की घोषणा अपने आधिकारिक वेबसाइट पर कर दिया गया है. एनटीए द्वारा जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक, यह परीक्षा दो सेशन में आयोजित की जाएगी. पहले सेशन की परीक्षा 21 से 30 जनवरी, 2026 के बीच निर्धारित परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जाएगी. वहीं, दूसरे सेशन की परीक्षा का आयोजन 1 से 10 अप्रैल, 2026 तक किया जाएगा. उम्मीदवार जारी ऑफिशियल नोटिफिकेशन को चेक करने के लिए आधिकारिक वेबसाइट jeemain.nta.nic.in या फिर नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक कर सकते हैं.

**रजिस्ट्रेशन अक्टूबर 2025 में होने की उम्मीद :** जेईई मेन्स 2026 सेशन-1 परीक्षा का रजिस्ट्रेशन अक्टूबर 2025 में शुरू होने की संभावना है. वहीं, सेशन-2 परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया जनवरी के अंतिम सप्ताह में शुरू होने की उम्मीद है.

## रूस और यूक्रेन का मामला

# यूक्रेन ड्रोन हमले में रूसी गैस प्लांट जलकर राख

**कीव ।** रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध के बीच एक बार फिर ऊर्जा प्रतिष्ठान निशाने पर आ गया है. यूक्रेन ने दक्षिणी रूस के ओरेंबुर्ग क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख गैस प्रोसेसिंग प्लांट पर ड्रोन हमला किया, जिससे वहां भीषण आग लग गई. यह संयंत्र रूस की सरकारी ऊर्जा कंपनी गैजप्रोम के नियंत्रण में है. स्थानीय गवर्नर येवगेनी सोलनत्सेव के अनुसार, ड्रोन हमले से संयंत्र के एक कार्यशाला हिस्से में आग लगी और उसका कुछ हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया. हालांकि, हमले में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है. वहीं रूस के रक्षा मंत्रालय ने रविवार को बयान जारी कर बताया कि उसकी वायु रक्षा प्रणाली ने रातभर में 45 यूक्रेनी ड्रोन को मार गिराया. इनमें से एक ड्रोन ओरेंबुर्ग क्षेत्र में, जबकि 23 ड्रोन समारा और सारातोव क्षेत्रों के ऊपर गिराए गए.

## सुप्रीम कोर्ट ने लिया ऐतिहासिक फैसला

# दिवाली पर जेल में बंद गरीब कैदियों की अब होगी रिहाई

**नयी दिल्ली ।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने करीब तीन साल पहले तत्कालीन चीफ जस्टिस के सामने मंच से कहा था कि जमानत राशि नहीं होने के कारण गरीब आदिवासी बेल मिलने के बावजूद जेल में बंद हैं. बाद में सुप्रीम कोर्ट ने इसका अपडेट लेकर मामले का स्वतः संज्ञान लिया और अब दिवाली के त्योहार पर गरीबों की रिहाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने एक यूनिक एसओपी (मानक संचालन प्रक्रिया) तैयार कर ली है. देश की सबसे बड़ी अदालत ने निर्देश दिया है कि किसी अपराध के लिए गिरफ्तार और मुकदमे की सुनवाई के दौरान जेल में बंद कोई भी गरीब व्यक्ति अगर जमानत के लिए पैसे दे पाने में असमर्थ है तो सरकार उसकी रिहाई सुनिश्चित कराएगी. स्पष्ट कहा गया है कि सरकार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से जमानत राशि उपलब्ध कराएगी.

## उद्योग जगत ने सितारा खो दिया

# झारखंड के जानेमाने उद्योगपति रामचंद्र रुंगटा का निधन, प्रदेश में शोक की लहर

**रांची ।** झारखंड के वरिष्ठ और प्रख्यात उद्योगपति रामचंद्र रुंगटा का रविवार को

दिल्ली में निधन हो गया. वे लंबे समय से गले के कैंसर से पीड़ित थे और इलाज के दौरान अपराह्न लगभग तीन बजे उन्होंने अंतिम सांस ली. उनके निधन की खबर से रांची, रामगढ़ समेत पूरे राज्य के उद्योग जगत में शोक की लहर दौड़ गई. रुंगटा ने अपने व्यावसायिक सफर की शुरुआत कोयले के कारोबार से की थी. आगे चलकर उन्होंने रामगढ़ जिले में कई प्रमुख औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की, जिनमें झारखंड इस्पात (अरगड्डा), आलोक स्टील (करमा) और मां छिन्नमस्तिका इस्पात (हेहल-बरकाकाना) शामिल हैं. उन्होंने आरसी रुंगटा ग्रुप की भी स्थापना की, जिसने झारखंड में उद्योग और इस्पात क्षेत्र को नई पहचान दी.

# सारंडा से बिहार तक न्याय की अदृश्य होती परछाइयां

सुधीर पाल

बिहार के मतदाताओं और सारंडा के जंगलवासियों के बीच सैकड़ों किलोमीटर का फासला है, पर दोनों के अनुभव एक जैसे हैं. दोनों जगह नागरिकों ने यही कहा—हमें सुना नहीं गया. बिहार में मतदाता अपनी लोकतांत्रिक पहचान खोज रहा है, और सारंडा में आदिवासी अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं. सुप्रीम कोर्ट और प्रशासन ने अपने-अपने स्तर पर आदेश दिए, लेकिन जनता को अभी भी न्याय "दिख" नहीं रहा. बिहार में नाम हटाने का कारण जनता को स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया, और सारंडा में ग्राम सभा की सहमति के बिना निर्णय लिया गया. दोनों ही मामलों में न्याय की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं रही.

**लोकतंत्र की नींव में दरारें**

सुप्रीम कोर्ट ने पहले तो यह माना कि बड़ी संख्या में नाम कटना चिंता का विषय है, और बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण को हटाए गए मतदाताओं की मदद के लिए कहा . परंतु 13 अक्टूबर 2025 को कोर्ट ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि राहत के लिए याचिकाकर्ता चुनाव आयोग के पास जाएँ —यानी जिस संस्था पर अनियमितताओं का आरोप था, उसी के पास न्याय के लिए जाने का सुझाव दिया गया.

याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि यह प्रक्रिया संविधान के अनुच्छेद 14, 21, 324, 325 और 326 का उल्लंघन है . उनका कहना था कि मतदाता की पहचान के लिए आयोग द्वारा निर्धारित 11 दस्तावेज़ों की सूची अव्यावहारिक है और लाखों गरीब व प्रवासी मतदाता इसके कारण सूची से बाहर हो जाते हैं. सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला लोकतांत्रिक अधिकारों की सुरक्षा को लेकर गंभीर प्रश्न उठाता है, क्या यह न्याय केवल प्रक्रिया का पालन है या वास्तव में अधिकारों की रक्षा का उपक्रम?

भारत के संविधान का अनुच्छेद 324 चुनाव आयोग को व्यापक शक्तियाँ देता है लेकिन साथ ही यह अपेक्षा भी रखता है कि आयोग "स्वतंत्र और निष्पक्ष" तरीके से काम करेगा. चुनाव केवल वोट डालने का क्रियाकलाप नहीं है; यह नागरिकों के "राजनीतिक अस्तित्व" का अधिकार है. यदि नागरिक की मतदाता सूची से नाम ही ग़ायब कर दिया जाए, तो यह उसके संवैधानिक अधिकार पर सीधा हमला है.

ब्रिटिश न्यायविद लॉर्ड ह्यूवर्ट ने कहा था—न्याय केवल होना नहीं चाहिए, बल्कि दिखना भी चाहिए. भारत के नागरिकों का विश्वास न्यायपालिका की पारदर्शिता पर टिका है. जब सर्वोच्च न्यायालय नागरिकों को उसी संस्था के पास लौटाता है, जिस पर आरोप है, तो यह विश्वास डगमगा जाता है. लोकतंत्र केवल संस्थाओं का ढाँचा नहीं है; यह विश्वास की संरचना है. और यह विश्वास तभी बचता है जब न्याय निष्पक्ष दिखता भी हो.

लोकतंत्र केवल वोट डालने का अधिकार नहीं, बल्कि इस अधिकार के भरोसे की सुरक्षा भी है. मतदाता सूची से नाम हटना सिर्फ प्रशासनिक गलती नहीं, बल्कि नागरिकता के अधिकार पर चोट है. बिहार में विपक्षी दलों और नागरिक संगठनों ने कहा कि इससे लोकतंत्र की विश्वसनीयता पर असर पड़ा है. अगर अदालत ने आयोग को पारदर्शिता का आदेश दिया, तो उसे लागू होते भी दिखना चाहिए. हर स्तर पर जनता को यह महसूस होना चाहिए कि उसका वोट सुरक्षित है."न्याय" का अर्थ केवल निर्णय देना नहीं है, बल्कि लोगों के मन में यह विश्वास जगाना भी है कि उनके साथ समानता का व्यवहार हुआ. बिहार का मामला यही सवाल उठाता है—क्या लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व, चुनाव में, न्याय दिख रहा है?

पश्चिमी सिंहभूम जिले में हो सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है. इसकी आबादी 51.52% है. मुंडा जनजाति 9.33%, उरांवः 2.15%, भुइंया 1.36%, संतालः 1.01% एवं अन्य छोटी जनजातियां है. ये मुख्यतः वन उत्पादन संग्रह और कृषि पर निर्भर हैं. सिंचाई सुविधा सीमित हैं, वर्षा आधारित कृषि है. लौह अयस्क खनन में सीमित स्थानीय रोजगार है. गौण वन उत्पादों में साल पत्ता, महुआ, शहद, साबाई घास आदि का संग्रह होता है. यह डेटा दर्शाता है कि सारंडा अभयारण्य घोषणा से एक विशाल आदिवासी जनसंख्या प्रभावित होगी, जिनकी आजीविका और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान इसी वन क्षेत्र से जुड़ी हुई है.

वनाधिकार कानून 2006 और पेसा कानून 1996, दोनों ही स्पष्ट रूप से कहते हैं कि किसी भी वन क्षेत्र को पुनर्वर्गीकृत (जैसे अभयारण्य या आरक्षित वन) करने से पहले संबंधित ग्राम सभाओं की पूर्व सहमति आवश्यक है. लेकिन सारंडा में ऐसा नहीं हुआ. वनाधिकार कानून के तहत वनवासियों को वन भूमि पर व्यक्तिगत और सामुदायिक अधिकार दिए जाते हैं, जिसमें "संरक्षण, पुनर्जीवन और प्रबंधन" का अधिकार शामिल है. इस अधिकार के बिना किसी क्षेत्र को वन्यजीव अभयारण्य बनाना कानून के मूलभाव का उल्लंघन है. स्थानीय 10 वनग्रामों को वनाधिकार के तहत राजस्व गाँव घोषित कर आवश्यक बुनियादी सुविधाएँ यथा सड़क, स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र देने का कानूनी प्रावधान था, जो आज तक लागू नहीं हुआ. इसके उलट बिना ग्राम सभा की सहमति के पूरा क्षेत्र अभयारण्य घोषित कर दिया गया. इसका सीधा असर लोगों के आजीविका अधिकारों पर पड़ा है, अब वे न तो लकड़ी-बाँस ला सकते हैं, न खेती का दायरा बढ़ा सकते हैं, न मवेशी चराने की स्वतंत्रता पहले जैसी है. लोग कहते हैं कि हम जंगल को बचाने वाले हैं, उसे नष्ट करने वाले नहीं. लेकिन अब हमें ही घुसपैठिया कहा जा रहा है.

झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री व मंत्रियों ने कहा है कि ग्रामवासियों की भावना का ध्यान रखा जाएगा लेकिन आंदोलनरत जनता कह रही है कि ग्राम सभा की अनुमति के बिना यह अधिसूचना पेसा और FRA दोनों कानूनों का उल्लंघन है. विरोध में ग्रामीण 25 अक्टूबर को कोल्हान अंचल में आर्थिक नाकेबंदी की योजना बना रहे हैं.

सारंडा के लोग यह नहीं कह रहे कि जंगल अभयारण्य न बने. वे बस यह कह रहे हैं कि हमसे पूछिए तो सही.

उनका कहना है कि संरक्षण की परिभाषा केवल सरकारी अधिसूचना नहीं, बल्कि समुदाय के सह-अस्तित्व से बनती है. जिन जंगलों को उन्होंने सदियों से बचाया, आज वही जंगल उनके खिलाफ़ दीवार बन गया है. अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन - आईयूसीएन का दिशानिर्देश है कि संरक्षित क्षेत्रों को वहाँ बसे देशज समुदायों के अधिकारों का सम्मान करना और उनकी सहमति लेना अनिवार्य है. लेकिन सारंडा में यह सिद्धांत कागज़ पर ही रह गया.

**न्याय "दिखाया" जाना चाहिए:** लोकतान्त्रिक व्यवस्था का मूलाधार पारदर्शिता है. न्यायालय या चुनाव आयोग न केवल आदेश दे बल्कि सार्वजनिक रूप से विस्तृत विवरण, कारण, प्रभावित लोगों की सूची, आपत्तियों व तर्कों को प्रकाशित करें. प्रभावित लोगों, ग्राम सभा, आदिवासी समुदायों आदि को सुनने की प्रक्रिया अनिवार्य होनी चाहिए. घोषित निर्णयों से पूर्व सार्वजनिक सलाह-समय, आपत्तियों की सुनवाई, पुनरीक्षण और पारदर्शी संवाद होना चाहिए. कमजोर और प्रभावित वर्गों को कानूनी सहायता, पैरा लीगल वॉलंटियर्स और न्याय प्रक्रिया तक पहुंच सुनिश्चित होनी चाहिए. जैसे कि एसआईआर मामले में कोर्ट ने जिला विधिक प्राधिकरण को निर्देश दिए. वनाधिकार कानून और पेसा के प्रावधानों का सक्रिय पालन होना चाहिए.

पर्यावरण और मानवाधिकार के बीच संतुलन जरूरी है. वन संरक्षण तभी न्यायोचित होगा जब स्थानीय आबादी की आजीविका, संस्कृति, तरीके सुरक्षित हों. यदि खनन या उद्योग क्षेत्र बाहर रखे जाते हैं, तो मुआवजा, वैकल्पिक रोजगार और सामाजिक योजनाएं हों. सरकारी योजनाओं, आदेशों का नियमित मॉनिटरिंग हो. रिपोर्ट, ग्राम स्तर की समीक्षा, त्रुटियों का समय रहते सुधार प्रक्रिया का हिस्सा हो. यदि आदेशों का उल्लंघन हो रहा हो, नागरिकों को सीधे शिकायत-न्यायालय मार्ग उपलब्ध होना चाहिए. लोकतंत्र का एक स्वर यह है कि अगर न्याय नहीं दिखता है, जनता को शांतिपूर्ण प्रदर्शन, सामाजिक आंदोलन, जनसुनवाई, मीडिया अभियान आदि का अधिकार है.

**दोनों मामलों का साझा संदेश :** चाहे बिहार में मतदाता सूची से नाम काटने का मामला हो या सारंडा में ग्राम सभाओं की उपेक्षा का, इन दोनों में न्याय का वह स्वरूप नहीं दिखता जो नागरिक भागीदारी और संवैधानिक नैतिकता का आधार है. बिहार में न्याय का दरवाज़ा खुला लेकिन राहत नहीं मिली. सारंडा में अधिकारों का कानून बना लेकिन पालन नहीं हुआ. दोनों जगह यह सवाल उभरता है —क्या न्याय केवल कागज़ी दायरे तक सीमित रह जाएगा? क्या जनता के भरोसे की बुनियाद कमजोर नहीं हो रही?

**(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

### सारंडा अभ्यारण्य और आदिवासी अधिकार

दूसरा बड़ा विवाद झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा वन क्षेत्र को अभयारण्य घोषित करने को लेकर है. सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि एक सप्ताह के भीतर 31,465 हेक्टेयर क्षेत्र को सारंडा वाइल्डलाइफ सेंचुरी घोषित किया जाए . इस फैसले पर झारखंड मंत्रिमंडल ने 14 अक्टूबर को मुहर तो लगा दी, परंतु ग्राम सभाओं से सहमति नहीं ली गई . सारंडा वन क्षेत्र में कुल 52 गांव हैं . इसमें 42 राजस्व गांव और 10 वन ग्राम है . हालांकि कुछ रिपोर्ट्स में 56 गांवों का उल्लेख भी मिलता है , जो संभवतः आसपास के प्रभावित क्षेत्रों को शामिल करके बताया गया है . सारंडा वन क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की कुल जनसंख्या 2011 करीब 1,25,000 थी . यहाँ लगभग 10,000 आदिवासी परिवार निवास करते हैं . अभयारण्य की घोषणा में शामिल मुख्य वन क्षेत्र अंकुआ, सामता, करमपाड़ा, कुदलीबाग, तिरिलपोशी आरक्षित वन क्षेत्र हैं

## बिहार विधानसभा चुनाव : सीटें नहीं मिलीं तो झामुमो ने चला अलग राह...एकला चलो रे

# सीटों को लेकर राजद और झामुमो में तकरार झारखंड में महागठबंधन पर संकट के बादल!

- झारखंड में गठबंधन की समीक्षा की चेतावनी, राजद को बाहर करने की अटकलें तेज
- कांग्रेस ने दोनों दलों से किया शांत रहने का आग्रह, कहा–अब भी संभव है समाधान

शुभम संदेश। रांची

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर सीट बंटवारे पर झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के बीच गहराता विवाद अब झारखंड तक पहुंचने लगा है. शनिवार शाम झामुमो ने राजद पर राजनीतिक धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए बिहार की छह विधानसभा सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी. पार्टी महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि अब बिहार चुनाव के बाद झारखंड में महागठबंधन की समीक्षा की जाएगी.

झामुमो की नाराजगी खुलकर सामने आने के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या अब झारखंड में हेमंत सोरेन सरकार में बदलाव की बुनियाद रखी जा रही है? झारखंड की सत्ता में साझेदार तीनों दल, झामुमो, कांग्रेस और राजद फिलहाल सार्वजनिक बयानबाजी से बच रहे हैं, लेकिन संकेत साफ हैं कि झामुमो-राजद के बीच भरोसे की डोर कमजोर हो चुकी है.

**झामुमो लड़ सकता है 10 सीटों पर:** झामुमो ने बिहार की छह सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है, चकाई, धमदाहा, कटोरिया, मनिहारी, जमुई और पीरपैंती. वहीं, चार और सीटों पर प्रत्याशी उतारने की योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है. कांग्रेस ने जताई सुलह की उम्मीद : महागठबंधन की तीसरी बड़ी कड़ी कांग्रेस स्थिति को संभालने की कोशिश में जुटा हुई है. प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने कहा कि झामुमो की दावेदारी स्वाभाविक थी और उन्हें साथ लिया जाता तो गठबंधन और मजबूत होता. उन्होंने तेजस्वी यादव से मामले को गंभीरता से लेने की अपील की और कहा कि अभी भी एडजस्टमेंट की संभावना है.

**14 नवंबर के बाद बढ़ेगी सियासी हलचल?** अब सभी की निगाहें 14 नवंबर की मतगणना और उसके बाद झारखंड की राजनीतिक हलचलों पर टिकी हैं. क्या झारखंड में राजद को महागठबंधन से बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा? यदि ऐसा हुआ, तो राजद कोटे से मंत्री संजय प्रसाद यादव की कुर्सी खतरे में पड़ सकती है. राजनीति में रिश्ते जितने जल्दी बनते हैं, उतनी ही तेजी से बिगड़ भी सकते हैं. अब देखना है कि हेमंत सोरेन गठबंधन को बचाने की कोशिश करते हैं या एक नई राजनीतिक राह चुनते हैं.

### झामुमो ने कहा, 'रहीम का धागा टूट चुका है'

झामुमो केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने रहीम और राष्ट्रकवि दिनकर की कविताओं का सहारा लेते हुए गठबंधन की दरार को रेखांकित किया . उन्होंने कहा कियाचना नहीं अब रण होगा, भीषण महासंग्राम होगा और राजद पर सीट साझा करने से इनकार कर गठबंधन धर्म तोड़ने का आरोप लगाया . जब उनसे पूछा गया कि क्या अब राजद को झारखंड में महागठबंधन से बाहर कर दिया जाएगा, तो उनका सीधा जवाब था, बिहार चुनाव के बाद समीक्षा होगी .

### झामुमो प्रवक्ता मनोज पांडेय का तीखा हमला

झामुमो प्रवक्ता मनोज पांडेय ने भी राजद पर पलटवार करते हुए कहा कि झारखंड में राजद के चार विधायक झामुमो के स्टार प्रचारकों की वजह से हैं . उन्होंने कहा कि हमने उन्हें सम्मान दिया, लेकिन उन्होंने हमारे साथ विश्वासघात किया . अब फैसला पार्टी नेतृत्व करेगा .

### राजद प्रवक्ता बोले-सरकार सहयोग से चलती है, धमकी देने से नहीं

राजद की ओर से झामुमो के आरोपों को खारिज करते हुए प्रदेश प्रवक्ता कैलाश यादव ने कहा कि सरकार सहयोग से चलती है, धमकी देने से नहीं . उन्होंने कहा कि राजद ने भी झारखंड में 22 सीटों की मांग की थी, लेकिन उतनी नहीं मिलीं

## कौशल विकास के लिए टेरी माइनिंग का एक्सपोजर विजिट संपन्न

# ग्रामीण महिलाओं ने कहा, पहली बार मिला ऐसी यात्रा का अनुभव

- गोड्डा, रामगढ़ और रांची के विभिन्न संस्थानों का कराया गया भ्रमण

शुभम संदेश। रांची/गोड्डा

जीतपुर खनन परियोजना के तहत टेरी माइनिंग की ओर से आयोजित तीन दिवसीय एक्सपोजर विजिट का रविवार को समापन हो गया. 16 से 19 अक्टूबर तक आयोजित तीन दिवसीय एक्सपोजर विजिट के दौरान प्रतिभागियों ने झारखंड के प्रमुख कौशल विकास संस्थानों का दौरा किया. इस यात्रा में कल्याण गुरुकुल, कौशल कॉलेज, पतरारू डैम और बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी कांके की पशुपालन इकाई शामिल थी. प्लान के अनुसार आयोजित इस कार्यक्रम में प्रशिक्षण सत्र, संस्थागत संवाद और क्षेत्रीय अवलोकन शामिल थे. टेरी माइनिंग के सदानंद सिंह और संतोष कुमार के समन्वय और टीम सदस्य सरबजीत कौर, सुषमा सोरेन, राजू एवं जितेंद्र के सहयोग से यह यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न हुई.

इस एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम में भाग लेने वाली जीतपुर खनन परियोजना क्षेत्र की महिलाओं ने कहा कि ऐसी यात्रा का अनुभव उनके लिए पहली बार है, जिससे उन्हें यह जानकारी मिली कि किस प्रकार से आजकल की लड़कियां और महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करके बड़ी कंपनियों में रोजगार पा सकती हैं. महिलाओं ने बताया कि यह एक्सपोजर विजिट उन लोगों के लिए बहुत अच्छा रहा, गांव में वे अन्य महिलाओं को भी इस यात्रा का अनुभव बताएंगी और इससे लाभ लेने के लिए उन्हें प्रेरित करेंगी.

## फोर्थ साउथ एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025: सीएम हेमंत सोरेन करेंगे उद्घाटन

# रांची में साउथ एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में छह देशों के खिलाड़ी शामिल होंगे

- रांची में 6 देशों के 300 खिलाड़ियों की भागीदारी होगी, मोरहाबादी स्टेडियम तैयार, प्रवेश निःशुल्क

शुभम संदेश। रांची

रांची में अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप का जोरदार मंच सजने लगा है. 24 से 26 अक्टूबर 2025 तक फोर्थ साउथ एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन किया जाएगा, जिसमें भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, मालदीव और श्रीलंका समेत कुल 6 देशों के लगभग 300 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे. इस महत्वपूर्ण प्रतियोगिता का उद्घाटन झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भव्य समारोह के साथ करेंगे. खेल निदेशक शेखर जमुआर ने बताया कि मोरहाबादी के बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम को पूरी तरह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तैयार किया गया है, जहां खिलाड़ियों के लिए वार्मअप एरिया, मेडिकल सुविधा, डोप टेस्टिंग रूम, मीडिया सेंटर सहित सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं.

झारखंड एथलेटिक्स एसोसिएशन के महासचिव मधुकांत पाठक ने खिलाड़ियों के आवास, भोजन और परिवहन की व्यवस्था पूरी कर ली है, जबकि सभी देशों की टीमों के आगमन का शेड्यूल भी अंतिम रूप में है. 23 अक्तूबर को सभी खिलाड़ियों के लिए प्रैक्टिस सत्र आयोजित किया जाएगा. उद्घाटन समारोह में झारखंड की लोक संस्कृति, नृत्य और संगीत के माध्यम से राज्य की सांस्कृतिक विविधता का अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शन किया जाएगा. आयोजन के दौरान मीडिया के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, जिसमें 8 अधिकृत फोटोग्राफरों को पास जारी किए गए हैं, जबकि वीडियो रिकॉर्डिंग पर प्रतिबंध रहेगा.

## आजसू का बूथ स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन संपन्न, एनडीए प्रत्याशी भी पहुंचे

# आजसू ने संघर्ष किया, भाजपा ने दिया झारखंड : बाबूलाल सोरेन

शुभम संदेश। रांची/घाटशिला

### घाटशिला में एनडीए प्रत्याशी की जीत तय : सुदेश महतो

आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सह पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने कहा है कि घाटशिला की जनता बदलाव और ठगबंधन की सरकार से मुक्ति चाहती है. उन्होंने घाटशिला टाउन हॉल में आजसू के विधानसभा स्तरीय बूथ सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि एनडीए प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन की जीत सुनिश्चित है. सम्मेलन में प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन भी उपस्थित थे.

महतो ने कहा कि हेमंत सरकार ने विगत छह वर्षों में बालू–कोयला की लूट और भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया है, जिससे जनता ठगा महसूस कर रही है. उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता को सवाल पूछने का भी अधिकार नहीं, क्योंकि यहां लोकतंत्र नहीं राजतंत्र चल रहा है. इस कारण सूचना आयोग को निष्क्रिय कर दिया गया है. महतो ने कहा कि इस उपचुनाव में जनता वोट के माध्यम से हेमंत सरकार को जवाब देगी. उन्होंने कहा कि राज्य विकास में पीछे छूट गया है. यह सामाजिक समरसता को खराब करने वाली सरकार है. महतो ने कहा कि एनडीए जीतेगा तो राज्य में अवैध वसूली बंद होगी.

एनडीए प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन ने कहा कि आजसू की झारखंड निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है. सुदेश महतो तथा अन्य आजसू नेता झारखंड आंदोलनकारी रहे हैं. उन्होंने कहा कि आजसू ने संघर्ष किया और भाजपा ने अलग राज्य दिया. सोरेन ने कहा कि महागठबंधन प्रत्याशी को हराकर घाटशिला की जनता इतिहास रचेगी. पूर्व मंत्री रामचंद्र सहिस ने कहा कि आजसू कार्यकर्ता गांव–गांव जाकर लोगों को जागरूक करे और एनडीए प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन के पक्ष में माहौल तैयार करे उन्होंने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन को झामुमो ने अपमानित किया.

सम्मेलन को केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर, हसन अंसारी, महासचिव हरेलाल महतो, भाजपा नेता अभय सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष चंडी चरण साव, आजसू जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह, सत्यनारायण बेसरा, सुधारानी बेसरा, संजय सिंह,मुसाबनी प्रखंड प्रमुख रामदेव हेंब्रम, राजू कर्मकार, सुखलाल हेंब्रम आदि ने भी संबोधित किया. संचालन प्रवीण प्रसाद ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन बुद्धेश्वर मुर्मू ने किया.

## नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी ने झारखंड में मांसाहारी व शाकाहारी वन्यजीवों की गिनती की तैयारी की

# पहली बार कॉरिडोर के बाहर भी होगी बाघों की गिनती

- नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी वनकर्मियों की टीम तैनात
- 2026 में जारी होगी रिपोर्ट

शुभम संदेश। पलामू/रांची

नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनटीसीए) के नेतृत्व में देशभर में बाघों की नियमित गिनती का कार्य जारी है. 2026 में पहली बार बाघों की गिनती उनके पारंपरिक कॉरिडोर के बाहर भी की जाएगी, जिससे बाघों के आवास और उनकी संख्या का और व्यापक चित्र सामने आएगा. इस बार की गिनती चार चरणों में होगी, जिसमें न केवल बाघ बल्कि सभी प्रकार के मांसाहारी और शाकाहारी वन्य जीवों की भी संख्या शामिल होगी. झारखंड में इस महत्त्वपूर्ण सर्वेक्षण का नेतृत्व पलामू टाइगर रिजर्व (पीटीआर) कर रहा है. पलामू टाइगर रिजर्व के अलावा रांची, हजारीबाग, दुमका, खूंटी, सिमडेगा, जमशेदपुर समेत राज्य के कई इलाकों में भी बाघ और अन्य वन्यजीवों की गिनती की जाएगी. इस दिशा में वन विभाग के कर्मियों को विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया है, ताकि वे सही तरीके से फोटोग्राफी, पगमार्क, स्कैट आदि के नमूने एकत्र कर सकें और सही आंकड़े जुटा सकें.

**नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पहली बार गिनती:** इस बार की गिनती का एक बड़ा बदलाव यह है कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी वनकर्मी पहली बार प्रवेश करेंगे. पलामू टाइगर रिजर्व के बूढ़ा पहाड़ इलाके में जहां नक्सलियों का प्रभाव रहा है, वहां पहली बार ट्रैकिंग कैमरे लगाए जाएंगे और वन्यजीवों की गिनती की जाएगी. वहीं, सारंडा क्षेत्र में भी एक्सपर्ट टीम गिनती के लिए जाएगी. यह प्रयास वन्यजीव संरक्षण के लिए काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि पहले इन इलाकों में सुरक्षा कारणों से कैमरे लगाने या गिनती करने का काम नहीं हो पाया था.

बाघों के साथ-साथ इस गिनती में शाकाहारी जीवों जैसे हाथी और बायसन की संख्या का भी आंकलन किया जाएगा. पिछले वर्ष झारखंड में हाथी और बायसन की गिनती भी की गई. इसमें एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि 2017 में लगभग 678 हाथी थे, जो 2025 तक घटकर 217 रह गए. वहीं, बेतला नेशनल पार्क और पलामू टाइगर रिजर्व में बायसन की संख्या लगभग 50 से 70 के बीच आंकी गई है. यह जानकारी वन्यजीव संरक्षण की चुनौतियों को उजागर करती है.

### पलामू टाइगर रिजर्व की वर्तमान स्थिति

पलामू टाइगर रिजर्व की स्थापना 1973 में हुई थी और अंग्रेजों के दौर में इसी क्षेत्र में पहली बार बाघों की गिनती की गई थी . उस समय यहां लगभग 50 बाघ पाए गए थे . बाद के वर्षों में बाघों की संख्या में निरंतर गिरावट आई . 1984–85 में 45 बाघ, 2005 में 38, 2009 व 2012 में 6–6 बाघ पाए गए . 2018 में बाघों की संख्या शून्य बताई गई, जबकि 2022 की रिपोर्ट में एक बाघ की मौजूदगी का पता चला . फिलहाल, पलामू क्षेत्र में सात बाघों के मूवमेंट रिकॉर्ड किए जा चुके हैं, जो संरक्षण के प्रयासों में एक सकारात्मक संकेत है .

### बाघों की गिनती का राष्ट्रीय महत्व

देशभर में बाघों की गिनती हर चार साल में होती है . 2022 में जारी रिपोर्ट के अनुसार पूरे देश में बाघों की संख्या 3782 थी . इस बार की गिनती पहले से भी व्यापक होगी और इसमें लकड़बग्घा, तेंदुआ सहित अन्य मांसाहारी जीव भी शामिल होंगे . यह कदम बाघों के प्रवास मार्गों, आवास संरक्षण और जैव विविधता को समझने के लिए जरूरी है .

## 7 लाख के ब्राउन शुगर के धराए मो0 राजू ने किया खुलासा

# भाभी जी उर्फ रूबी देवी के बाद रांची में ब्राउन शुगर का कारोबार चला रहे हैं मौसा जी और उनके लाडले

शुभम संदेश। रांची

रांची में ब्राउन शुगर के बड़े नेटवर्क का पुलिस ने बड़ा पर्दाफाश किया है. बिहार के सासाराम जिले की कुख्यात ब्राउन शुगर कारोबारी भाभी जी उर्फ रुबी देवी के बाद अब रांची में मौसा जी और उनके पुत्र सूरज कुमार साह का ब्राउन शुगर का कारोबार चल रहा है. पुलिस की गुप्त सूचना और छापेमारी के बाद रविवार को 37.91 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार आरोपी मो. राजू ने इस आपराधिक नेटवर्क के बारे में अहम जानकारी दी है.

हिन्दपीढ़ी थाना क्षेत्र के नेजाम नगर निवासी मो. राजू को छोटा तालाब के पास ब्राउन शुगर सप्लाई करते समय पकड़ा गया. आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह सासाराम के ब्राउन शुगर कारोबारी बबन साह उर्फ मौसा जी और उनके पुत्र से ड्रग्स खरीद कर रांची में सप्लाई करता है. फरार अन्य दो आरोपियों की पहचान मो. आकिब अख्तर उर्फ आकिब और शाहिल नवाज उर्फ वसीम के तौर पर हुई है, जो छोटी मस्जिद के पास धोबी गली में रहता है.

**पुलिस की कार्रवाई और खुलासे:** रांची एसएसपी राकेश रंजन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर हिन्दपीढ़ी थाना क्षेत्र के छोटा तालाब के पास असमाजिक तत्वों द्वारा ब्राउन शुगर की सप्लाई की जा रही थी. कोतवाली डीएसपी के नेतृत्व में छापेमारी टीम मौके पर पहुंची, जहां तीन संदिग्धों को बातचीत करते देखा गया. पुलिस को देख कर वे भागने लगे, लेकिन इस दौरान मो. राजु को पकड़ लिया गया. तलाशी में उसके कब्जे से 37.91 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद हुई, जिसका बाजार मूल्य लगभग 7.5 लाख रुपये बताया गया है.

# शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

रांची, सोमवार 20 अक्तूबर 2025 I कार्तिक अमावस्या, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 191 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12


# राजधानी में दीपावली बाजार में उमड़ी भीड़, पटाखे, मिठाइयां, दीयों और सजावटी सामानों की जोरदार बिक्री

## मिट्टी के दीयों की मांग में तेजी, कीमतों में वृद्धि के बावजूद ग्राहकों की भीड़

## स्थानीय कुम्हारों और महिला स्वयं सहायता समूहों को मिला आर्थिक सहारा

शुभम संदेश। रांची

राजधानी रांची में दीपावली को लेकर बाजारों में पहले से ही उत्साह और रौनक देखने को मिल रही है. एचईसी सेक्टर टू, हिनू, डोरंडा, लालपुर, अपर बाजार, कांटाटोली, मेन रोड, हरमू और हटिया चौक जैसे प्रमुख इलाकों में दीपोत्सव की खरीदारी जोर-शोर से चल रही है. पटाखे, मिठाइयों की खुशबू, रंग-बिरंगे झालरों की चमक और पूजा सामग्री की उपलब्धता ने पूरे बाजार को त्योहार के मूड में रंगीन बना दिया है. दीपावली के इस शुभ अवसर पर भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा के लिए आवश्यक वस्तुओं की बिक्री में भी तेजी देखी जा रही है. पूजा की थाल, अगरबत्ती, कपूर, कलश, धूप, और देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ-साथ मिट्टी के पारंपरिक दीयों, घरौंदा, करंज का तेल, रंगोली सामग्री और कैंडल की भारी मांग बनी हुई है.

### स्थानीय कुम्हारों और महिला समूहों को मिला रोजगार

दीपोत्सव के दौरान रांची के बाजारों में ग्रामीण इलाकों से आए कुम्हारों को अच्छी बिक्री का मौका मिला है. हाथों से बने पारंपरिक दीयों और घरौंदे खरीददारों को खूब पसंद आ रहे हैं. साथ ही, महिला स्वयं सहायता समूह भी मोमबत्तियां, हस्तनिर्मित दीये और सजावटी सामान बेचकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बढ़ रहे हैं. इस त्योहार ने न केवल उपभोक्ताओं को बल्कि स्थानीय कारीगरों को भी आर्थिक रूप से मजबूत किया है.

### खरीदारों का उत्साह बरकरार

मांग में वृद्धि और कीमतों के बावजूद खरीदार पारंपरिक मिट्टी के दीयों को खरीदने के लिए उत्सुक हैं. रेखा देवी ने कहा, "मिट्टी के दीयों से ही असली दीपावली का आनंद आता है. महंगाई के बावजूद हम इन्हीं को खरीदते हैं, क्योंकि ये हमारे त्योहार की पहचान हैं."

**दीयों की बिक्री में खासा उत्साह**

इस बार खास तौर पर मिट्टी और गोबर से तैयार दीयों और घरौंदा की बिक्री ने बाजारों में सबसे अधिक रौनक बढ़ाई है. हटिया, धुर्वा, बिरसा चौक, कटहरी रोड, लालपुर चौक, अपर बाजार और कांटाटोली के कारीगरों ने अपने स्टॉल्स को आकर्षक ढंग से सजाया है, जहां पारंपरिक मिट्टी के दीयों के साथ-साथ रंगीन और डिजाइनर दीयों की भी खूब मांग हो रही है. इसके अलावा, बिजली से चलने वाले आधुनिक दीयों की भी खूब बिक्री हो रही है.

**कीमतों में वृद्धि, फिर भी अच्छी बिक्री हुआ**

विक्रेताओं के अनुसार इस साल दीयों की कीमतों में 20 से 25 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है. पिछले वर्ष जहां सैकड़ा दीयों की कीमत 120 से 130 रुपये थी, वहीं इस बार यह बढ़कर 150 से 200 रुपये तक पहुंच गई है. कुम्हारों ने बताया कि पिछले दिनों हुई बारिश से कच्ची मिट्टी खराब हो गई, जिससे दीयों के निर्माण में बाधा आई. इसके अलावा, परिवहन और करंज तेल की कीमतों में भी वृद्धि से लागत बढ़ी है. डंगराटोली कुम्हारटोली के दीया निर्माता परमेश्वर ने बताया कि बारिश की वजह से मिट्टी खराब हो गई थी, जिससे उत्पादन प्रभावित हुआ. तेल और परिवहन के दाम बढ़ने से हमें कीमतें बढ़ानी पड़ीं, लेकिन बिक्री अच्छी चल रही है."

**रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाया शहर :** दीपावली के त्योहारी माहौल को और भी खास बनाने के लिए शहर के प्रमुख बाजार, चौक-चौराहे और गलियां रंगीन झालरों और बिजली की लाइटों से सजा दीगई हैं. नगर निगम ने भी मुख्य सड़कों पर विशेष प्रकाश की व्यवस्था की है, ताकि शाम के समय शहर चमक उठे. इसके साथ ही, लोग अपने-अपने घरों और दुकानों को आकर्षक दीयों और रोशनी से सजाकर त्योहार का जश्न मना रहे हैं.

इस प्रकार, रांची की गलियों और बाजारों में दीपावली की रौनक हर तरफ फैली हुई है. दीयों की चमक, मिठाइयों की मिठास और सजावट की रंगत ने पूरे शहर को एक उत्सव की तरह सजाया है. इस दीपोत्सव पर परंपरागत रीति-रिवाजों के साथ-साथ आधुनिकता का मेल भी देखने को मिल रहा है, जिससे यह त्योहार सभी के लिए खास बन गया है.

# गिरिडीह: दुबे नर्सिंग होम में जमकर बवाल, मरीज के परिजनों व अस्पताल कर्मियों में मारपीट, कई घायल

शुभम संदेश। गिरिडीह

गिरिडीह जिले के जमुआ थाना क्षेत्र स्थित दुबे नर्सिंग होम में रविवार को इलाज के दौरान उत्पन्न विवाद ने हिंसक रूप ले लिया. मरीज के परिजनों और अस्पताल के कर्मचारियों के बीच कहासुनी इतनी बढ़ गई कि मामला मारपीट तक पहुंच गया. इस घटना में दोनों पक्षों के कई लोग घायल हो गए हैं. घायलों में मोहम्मद अफजल, हारून रसीद, बेलाल, मेराज, सरताज समेत अन्य शामिल हैं, जिन्हें गिरिडीह सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है.

घायलों ने आरोप लगाया है कि नर्सिंग होम संचालक राजेश दुबे और उनके बाउंसरों ने लाइन में लगने को लेकर विवाद होने पर जबरन मारपीट की. बताया गया कि सभी घायल लोग जमुआ थाना क्षेत्र के लताकी गांव के रहने वाले हैं. वहीं,

अस्पताल संचालक राजेश दुबे ने सभी आरोपों को सिरे से खारिज किया है. उनका कहना है कि एक बड़े समूह में लोग अस्पताल पहुंचे और उनसे रंगदारी की मांग करने लगे. जब उन्होंने पैसे देने से मना किया, तो उन लोगों ने अस्पताल कर्मियों के साथ मारपीट शुरू कर दी. इस दौरान कई कर्मचारी घायल हुए, जिनमें से एक की स्थिति गंभीर बताई जा रही है और उसे बेहतर इलाज के लिए धनबाद रेफर किया गया है.

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रण में लिया. पुलिस ने दोनों पक्षों के बयान दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है. फिलहाल जमुआ थाना पुलिस पूरे मामले की बारीकी से जांच कर रही है.

# पाकुड़ में पुलिस दल पर हमला : एएसआई को बांध कर पीटा, वर्दी फाड़ी, दो आरोपी गिरफ्तार

शुभम संदेश। पाकुड़

पाकुड़ जिले के हिरणपुर थाना क्षेत्र के अंगूठिया गांव में रविवार को पुलिस दल पर कुछ लोगों ने हिंसक हमला किया. इस हमले में दो पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि एक पुलिसकर्मी की वर्दी फाड़ दी गई. पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो मुख्य आरोपियों करमू राय (39) और सियो राय (36) को गिरफ्तार कर लिया है.

**रंगदारी मांगने से शुरू हुआ विवाद**

पुलिस के अनुसार, अंगूठिया के रहने वाले करमू राय (39) और सियो राय (36) ने 10 से 15 अज्ञात लोगों के साथ मिलकर एक ट्रैक्टर को रोका और चालक से रंगदारी मांगी. जब ट्रैक्टर मालिक ने पुलिस को सूचना दी, तो चेक पोस्ट पर तैनात एएसआई गोविंद कुमार साहा अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे.

### पुलिस पर हमला बर्दाश्त नहीं : एसडीपीओ

एसडीपीओ दयानंद आजाद ने कहा कि ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों पर हमला गंभीर अपराध है. किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस ने इस घटना में कांड संख्या 103/25 दर्ज किया है.

**एएसआई को पेड़ से बांधकर पीटा**

पुलिस की टीम जैसे ही पहुंची, करमू राय, सियो राय और अन्य लोगों ने पुलिस दल पर हमला कर दिया. एएसआई गोविंद साह को पेड़ से बांधकर लाठी-डंडों से पीटा गया. उनकी कलाई पर ज्यादा चोट लगी है. घटना की खबर मिलते ही थाने से अतिरिक्त बल मौके पर पहुंची और त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को धर दबोचा.

**दोबारा हमला, वर्दी फाड़ी गई :** घटनास्थल पर पहुंचते ही उपद्रवियों ने फिर से पुलिस पर पत्थरबाजी की. इस दौरान एएसआई दिलीप कुमार घायल हो गए और एएसआई नैमूल अंसारी की वर्दी फाड़ दी गई. हालांकि, पुलिस ने जवाबी कार्रवाई करते हुए स्थिति को काबू में कर लिया.

**दो आरोपी गिरफ्तार, बाकी की तलाश जारी :** बिगड़ते हालात को संभालते हुए पुलिस ने करमू राय और सियो राय को मौके से गिरफ्तार कर लिया. दोनों को हिरणपुर थाना लाया गया और पूछताछ के बाद जेल भेज दिया गया. बाकी 10 से 15 अज्ञात हमलावरों की पहचान की जा रही है और उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है.

## भारतीय महिला अंडर-17 फुटबॉल टीम की ऐतिहासिक सफलता, 21 साल बाद एएफसी कप के लिए क्वालीफाई

# झारखंड की छह बेटियों के स्वागत में उमड़ा जनसैलाब लेकिन खेल विभाग और सरकार के अधिकारी नहीं पहुंचे

शुभम संदेश। रांची

किर्गिस्तान में हुए मुकाबले में भारतीय महिला अंडर-17 फुटबॉल टीम ने उज्बेकिस्तान को 2-1 से हराकर पहली बार एएफसी अंडर-17 महिला एशियाई कप फुटबॉल चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई कर लिया है. इस जीत के साथ भारतीय टीम ने अगले साल चीन में होने वाले एएफसी अंडर-17 विमेंस एशियन कप में अपनी जगह पक्की कर ली है. यह बड़ी उपलब्धि 21 साल बाद मिली है, जब भारत ने इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया है. अब भारत के पास सीनियर विमेंस टीम, अंडर-

20 टीम के साथ-साथ अंडर-17 टीम भी अगले साल चीन में अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका पाई है.

झारखंड की छह खिलाड़ी, एलिजाबेथ लकड़ा, सूरजमुनी कुमारी, विनीता हीरो, अनीता डुंगडुंग, अनुष्का कुमारी और दिव्यानी लिंडा रविवार को मुंबई से रांची पहुंचीं. रांची एयरपोर्ट पर झारखंड फुटबॉल एसोसिएशन की ओर से इन खिलाड़ियों का जोरदार स्वागत किया गया. ढोल-नगाड़ों की गूंज से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट खुशियों से भर उठा. खिलाड़ियों को फूल-मालाओं से नवाजा गया, जिससे उनका मनोबल बढ़ा. खिलाड़ियों ने कहा कि इस प्रकार का भव्य स्वागत उन्होंने सोचा भी नहीं था.

स्वागत समारोह में रांची जिला फुटबॉल संघ के महासचिव आसिफ नईम, झारखंड फुटबॉल एसोसिएशन के प्रतिनिधि आशिष बोस, कोच बिना केरकेट्टा, सुशीला साहू, अनवारुल हक उर्फ बबलू समेत कई गणमान्य लोग मौजूद थे. झारखंड फुटबॉल संघ के महासचिव गुलाम रब्बानी ने कहा कि झारखंड की बेटियां देश में हर उम्र वर्ग में अपनी प्रतिभा से नाम कमा रही हैं. भारत का 21 साल बाद एएफसी अंडर-17 कप के लिए क्वालीफाई करना गर्व की बात है, खासकर जब झारखंड की छह बेटियां इस टीम का हिस्सा हैं.

हालांकि, इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बावजूद खेल विभाग या सरकार के कोई अधिकारी खिलाड़ियों के स्वागत के लिए एयरपोर्ट नहीं पहुंचे . खिलाड़ी अब अगले साल चीन में होने वाले एएफसी अंडर-17 कप में अच्छा प्रदर्शन कर वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने को लेकर पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं. यह सफलता न केवल भारतीय महिला फुटबॉल के लिए, बल्कि झारखंड जैसे राज्य के लिए भी गर्व का विषय है, जहां से आने वाली युवा प्रतिभाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही हैं.

# 108 एंबुलेंस सेवा की लापरवाही से 14 वर्षीय किशोर की हो गई मौत

## आक्रोशित लोगों और परिजनों ने सड़क जाम की, कहा- इंसाफ चाहिए

शुभम संदेश। चतरा

चतरा जिले के जोरी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम जोरी में एक दर्दनाक सड़क दुर्घटना में 14 वर्षीय राकेश कुमार (पिताः संतोष यादव) की मौत हो गई. राकेश, ग्राम धनगिरी सलैया का निवासी था और शनिवार सुबह करीब 9 बजे बाइक दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया. घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने 108 एंबुलेंस सेवा को सूचना दी, लेकिन एम्बुलेंस समय पर घटनास्थल पर नहीं पहुंची. स्थिति की गंभीरता को देखते हुए लोगों ने घायल किशोर को तत्काल टेंपू से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जोरी पहुंचाया. वहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने उसे सदर

अस्पताल, चतरा रेफर कर दिया.

फिर से 108 एंबुलेंस को कॉल किया गया, लेकिन जोरी सीएचसी में मौजूद एम्बुलेंस उपलब्ध नहीं कराई गई. इसके बजाय चतरा सदर से एम्बुलेंस भेजी गई, जिसकी हालत खराब थी—उसे स्टार्ट करने के लिए धक्का देना पड़ा. समय की बर्बादी के कारण स्थिति और बिगड़ गई. सदर अस्पताल पहुंचने के बाद राकेश की हालत गंभीर देख उसे हजारीबाग रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई. इस घटना ने इलाके में रोष पैदा कर दिया. आक्रोशित परिजनों और स्थानीय ग्रामीणों ने लापरवाही के खिलाफ सड़क जाम कर विरोध प्रदर्शन किया और स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली पर सवाल खड़े किए.स्थानीय प्रशासन ने लोगों को समझाकर जाम हटवाया और मामले की जांच का आश्वासन दिया है.

### दीपोत्सव आज: घरों और मंदिरों में होगी मां लक्ष्मी व भगवान गणेश की पूजा

# वृष लग्न शाम 6.51 से रात 8.48 बजे तक; मां लक्ष्मी की पूजा सर्वश्रेष्ठ

आचार्य प्रणब मिश्र

कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी शनिवार को धनतेरस का त्योहार मनाया गया. इसके साथ ही दीपोत्सव की शुरुआत हो गई. यह पर्व 23 अक्टूबर को भाईदूज तक कई शुभ संयोगों के साथ मनाया जाएगा. दीपावली सोमवार को मनाई जाएगी. प्रसिद्ध ज्योतिष आचार्य प्रणव मिश्रा के अनुसार, कार्तिक अमावस्या की तिथि सोमवार को दोपहर 02.44 बजे प्रवेश करेगी, जो 21 अक्टूबर को शाम 04.26 बजे तक रहेगी. इसलिए रात्रि व्यापिनी अमावस्या 20 को है. इसलिए दीपावली सोमवार को ही मनाई जाएगी.

ऋषिकेश पंचांग के अनुसार गृहस्थ के लिए माता लक्ष्मी की पूजा शुभ लग्न में वृश्चिक लग्न प्रातः 08:16 से 10:23 बजे, वृष लग्न

शाम 06:51 से 08:48 बजे तक, प्रदोष काल संध्या 05:17 से 07: 56 बजे तक और अभिजीत मुहूर्त दिन 11:10 से 11: 56 बजे तक होगी. मान्यता के अनुसार माता लक्ष्मी पूजा के लिए वृष लग्न सबसे उत्तम होता है. इसमें माता की पूजा करने से मां घर में स्थिर रूप से विराजमान होती हैं. इस समय में जो भी पूजा करते हैं, उनका यश, मान और धन सबकुछ बढ़ता है. सोहराई व भौमवती अमावस्या 21 अक्टूबर को होगी.

**घरों-मंदिरों में होगी मां लक्ष्मी व गणेशजी की पूजाः** दीपावली का शुभ दिन सबके जीवन में सकारात्मकता के साथ साथ समृद्धि और सौभाग्य को लेकर आता है. यही कारण है कि इस दिन मंदिरों से लेकर घरों तक मां लक्ष्मी व गणेशजी की विधिवत पूजा की जाती है. इससे जीवन में सुख-समृद्धि, सौभाग्य, प्रेम तथा यश-वैभव बना रहता है. लक्ष्मी जी की पूजन हमेशा संपूर्ण विधि विधान से ही करना चाहिए, जिससे पूजा का पूर्ण फल मिलता है.

**(लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य हैं. पता- आचार्यकुलम, अरगोड़ा, रांची, फोन : 8210075897:**

#### मां लक्ष्मी की पूजन विधि

पूजन के लिए चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर भगवान गणपति और माता लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित की जाती है. पहले गणेश जी का पूजन करें, फिर पंचामृत और गंगाजल से अभिषेक करके माता का शृंगार करें और शृंगार सामग्री अर्पित करें. इसके बाद इसके बाद फल, खीर और मिठाई आदि का भोग लगाएं. धूप-दीप जलाएं. पूजा के अंत में, लक्ष्मी चालीसा, श्री सूक्त आदि का पाठ कर आरती गाएं.

#### 20 अक्टूबर दीपावली पूजन का चौघड़िया

- अमृतः प्रातः 05: 49 से 07 :15 तक
- शुभ : प्रातः 08 :41 से 10: 07 तक
- चार : अपराह्न 12 : 59 से 02 :25 तक
- लाभ : अपराह्न 02 : 25 से 03 : 51 तक
- अमृत : संध्या 03 : 51 से 05 : 17 तक
- चार : संध्या 05 : 17 से 06: 51 तक
- लाभ : रात्रि 09 : 59 से 11: 33 तक
- शुभ : रात्रि 01: 07 से 02: 41 तक

#### लक्ष्मी पूजा में व्यापारियों के लिए लग्न

वृश्चिक : प्रात : 08 :06 से 10 :23 तक
कुंभ : अपराह्न 02 : 13 से 03 : 44 तक
वृष : संध्या 06 : 51 से 08 : 48तक
सिंह : रात्रि 01 : 19 से 03 : 33 तक
प्रदोष काल संध्या 05 :17 से 07 : 56 तक

### एक नजर

#### अखिल भारतीय कायस्थ महासभा ने मजदूरों के बीच दीप और मिठाइयां बांटी

**रांची।** हर घर में दीप जले की थीम पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की रांची जिला शाखा के अध्यक्ष शैलेश कुमार सिन्हा के नेतृत्व में रविवार को दीपोत्सव के अवसर पर श्रमिक समाज के बीच दीप एवं मिठाइयों का वितरण किया गया. कायस्थ महासभा के अध्यक्ष सिन्हा ने कहा कि दिपावली का उत्साह, उमंग गरीबों में भी होना चाहिए. उनके घर भी खुशियों के दीपक से रोशन होने चाहिए. उन्होंने कहा कि विशेष कर वंचित और श्रमिक समाज, जो आज दीपावली के बड़े त्योहार के मौके पर भी काम की तलाश में शहर पहुंचे हैं और हमारे घरों में खुशियां लाने के लिए अपनी खुशियों को कुर्बान कर अपनी सेवा दे रहे हैं, ऐसे श्रमिक समाज को नमन है. ये श्रमिक अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की खुशियां त्याग कर, खुशियां मनाने की बजाय अपने रोजगार के तलाश में निकले हैं. कार्यक्रम में उत्साह पूर्वक अखिल भारतीय कायस्थ रांची जिला के मंत्री किशोर कुमार सिन्हा, रश्मि सिन्हा, कुसुम वर्मा, अनिका सिन्हा आदि ने सक्रिय रूप से सहयोग किया.

#### कुंड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी आफ इंडिया, झारखण्ड चैप्टर की बैठक संपन्न

**रांची ।** रविवार को आदिवासी लूर अड्डा, हतमा रांची में कुंड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी आफ इंडिया नई दिल्ली, झारखण्ड चैप्टर की बैठक, चैप्टर चीफ धीरज उरांव की अध्यक्षता में हुई. जिसमें अठारवां राष्ट्रीय कुंड़ुख़ सम्मेलन 24 से 26 अक्टूबर 2025, झारसुगुड़ा जाने के संबंध में चैप्टर चीफ कार्यक्रम से संबंधित विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया. डॉ बंदे खलखो ने कार्यक्रम के दौरान अनुशासन बनाए रखने की बातें कही, ब्लासियुस पन्ना ने भाषा साहित्य को बढ़ाने के लिए सभी से सहयोग की अपील की, डॉ कीर्ति मिंज ने कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता एवं अनुशासन बनाए रखने की विशेष बाते कही. बैठक में सुखराम उरांव,कृष्णा उरांव, लक्ष्मण उरांव, लखन उरांव, शीतलजीत उरांव, सबिता कुमारी रेशमा उरांव,आशिष उरांव, महावीर उरांव,शशि उरांव, रोनित उरांव आदि उपस्थित थे.

#### उद्गोगपति रामचंद्र रूंगटा के निधन पर शोक जताया

**रांची।** उद्योगपति रामचंद्र रूंगटा के निधन पर झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सुरेशचंद्र अग्रवाल, महामंत्री विनोद कुमार जैन, उद्योगपति बिनोद कुमार अग्रवाल, भागचंद पोद्दार, ओम प्रकाश अग्रवाल, ललित कुमार पोद्दार, पवन कुमार पोद्दार, राजेंद्र केडिया, मनोज चौधरी,पवन शर्मा, संजय सर्राफ, कौशल कुमार राजगढ़िया, अनिल अग्रवाल, प्रमोद सारस्वत, सज्जन पाड़िया,निर्मल कुमार बुधिया, कमलेश संचेती ने गहरा शोक व्यक्त किया है. सुरेशचंद्र अग्रवाल, महामंत्री विनोद कुमार जैन, उद्योगपति बिनोद कुमार अग्रवाल ने कहा कि समाज, व्यापार और सेवा के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय रहा है. उन्होंने सदैव समाजहित को सर्वोपरि रखते हुए अपनी कर्मभूमि को सेवा और संस्कारों से आलोकित किया. उनके निधन की सूचना अत्यंत दुःखद एवं हृदयविदारक है. उनके निधन से समाज ने एक सच्चे मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत और करुणामय व्यक्तित्व को खो दिया है. झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार उनकी स्मृति को सादर नमन करता है.

### एसएसपी ने काली पूजा समिति को दिया भरोसा

## पर्वों में रहेगा प्रशासन सतर्क हरसंभव सहयोग मिलेगा

शुभम संदेश। रांची

आगामी काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर महानगर काली पूजा समिति व महानगर छठ पूजा समिति के प्रतिनिधिमंडल ने वरीय पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राकेश रंजन से मुलाकात की. मौके पर पर्वों के दौरान सुरक्षा, यातायात, आपात प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण को लेकर व्यापक चर्चा हुई.एसएसपी राकेश रंजन ने आश्वासन दिया कि काली पूजा और छठ पर्व के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहेगा. उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए हर स्तर पर प्रशासनिक सहयोग दिया जाएगा. साथ ही आयोजन समितियों से कहा गया कि वे सुरक्षा दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें.

प्रतिनिधिमंडल ने पर्वों के दौरान पंडालों की सुरक्षा, मुख्य मार्गों पर प्रकाश की समुचित व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, नदी-तालाब किनारे नावों की निगरानी और बैरियर लगाकर भीड़ नियंत्रण जैसे विषयों पर सुझाव दिए. साथ ही नगर निगम, स्वास्थ्य विभाग एवं आपदा प्रबंधन टीम के साथ तालमेल बनाए रखने पर भी सहमति बनी.प्रतिनिधिमंडल में समिति के मुख्य संरक्षक आलोक कुमार दूबे, अध्यक्ष विनय कुमार सिंह, संरक्षक लाल किशोर नाथ शाहदेव, संजीत यादव, विशाल सिंह, बबलू वर्मा, मेहुल दूबे, अनिकेत कुमार, गोकुल कुमार, कुमार बंटी, अजीत सिंह टींकू और सुमित चौधरी शामिल थे. बैठक में आलोक कुमार दुबे ने कहा, "हमारा प्रयास है कि धार्मिक आयोजनों को श्रद्धा, शांति और सुरक्षा के साथ संपन्न किया जाए. पुलिस प्रशासन के सहयोग से हम व्यवस्था को सफल और अनुशासित बनाएंगे.

### बंपर धान उत्पादन से झारखंड के किसान होंगे लाभान्वित

# एक दिसंबर से शुरू होगी धान की सरकारी खरीदारी

शुभम संदेश। रांची

झारखंड में इस बार हुई बंपर धान की पैदावार से किसानों की आमदनी बढ़ने की उम्मीद है. राज्य सरकार एक दिसंबर से धान की सरकारी खरीद शुरू करने जा रही है. इसके लिए राज्य भर में खरीद केंद्रों का चयन और राइस मिल मालिकों (मिलरों) का पंजीकरण शीघ्र किया जाएगा.

#### पंजीकरण प्रक्रिया

रांची जिले के सभी मिलरों को 30 अक्टूबर तक दोपहर 3 बजे तक आवेदन देना होगा. आवेदन समाहरणालय भवन के पांचवें तल्ले के कमरा संख्या 504 में जमा किए जा सकते हैं.

**पंजीकरण फॉर्म में देनी होंगी ये जानकारियां:**

- मिल और मालिक का नाम
- मोबाइल नंबर व ईमेल आईडी
- मिलिंग व भंडारण क्षमता
- सीसीटीवी कैमरा व रिकॉर्डिंग की जानकारी
- मिल पर कोई बकाया है या नहीं

**ब्लेंडिंग मशीन की उपलब्धताः** मिलों की क्षमता के अनुसार उन्हें धान अधिप्राप्ति केंद्रों से जोड़ा जाएगा.

#### मिल संचालकों को कराना होगा पंजीकरण

किसानों के लिए खरीद केंद्रों पर होंगी ये सुविधाएं:

- सफाई और छंटाई की व्यवस्था
- तौल और बोरी की सुविधा
- शुद्ध पेयजल और बैठने का प्रबंध
- प्राथमिक उपचार
- तौल मशीन और शेड की सुविधा

**इस बार रिकॉर्डतोड़ धान उत्पादनः** इस वर्ष अच्छी बारिश के कारण राज्य में लगभग 47 लाख टन धान उत्पादन का अनुमान है. रांची के कांके, रातू, मांडर, चान्हो, बेड़ो, नामकुम, सिल्ली, बुंडू और तमाड़ जैसे क्षेत्रों में फसल की स्थिति बेहद अच्छी रही.

हालांकि दलहन, तिलहन, मक्का और मोटे अनाजों की खेती लक्ष्य से कम हुई है, लेकिन धान की रिकॉर्ड पैदावार ने उम्मीदें जगा दी हैं.

**किसानों को मिलेगा सीधा लाभः** बंपर पैदावार और सरकारी खरीद से किसानों को सीधा फायदा होगा. इस बार थोक व्यापारी भी सीधे किसानों से संपर्क कर रहे हैं, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी. सरकार भी ज्यादा से ज्यादा खरीद केंद्र खोलने की तैयारी में है.

### रांची महानगर काली पूजा समिति ने दी दीपावली व काली पूजा की शुभकामनाएं

# भव्य पंडाल, सजीव झांकियां और चाक-चौबंद व्यवस्था के साथ रांची काली पूजा के लिए तैयार

शुभम संदेश. रांची

रांची महानगर काली पूजा समिति की ओर से दीपावली और काली पूजा के शुभ अवसर पर सभी श्रद्धालुओं एवं रांचीवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं. समिति ने जानकारी दी है कि रांची के सभी प्रमुख पूजा पंडालों की सजावट और तैयारियां पूरी कर ली गई हैं. सोमवार से सभी पंडाल आम श्रद्धालुओं के लिए दर्शन हेतु खोल दिए जाएंगे.

पूजा की तैयारियों की समीक्षा हेतु समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक

आयोजित की गई, जिसमें निर्णय लिया गया कि सभी बड़े पंडालों में समिति के वॉलंटियर्स की तैनाती की जाएगी. खासकर महिलाओं और बच्चों की सुविधा का ध्यान रखा जाएगा ताकि किसी को असुविधा न हो. समिति के प्रवक्ता मेहुल दुबे ने बताया कि सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं. पुलिस और जिला प्रशासन लगातार तैयारियों की निगरानी कर रहे हैं.

मुख्य संरक्षक आलोक कुमार दुबे ने कहा कि "काली पूजा और दीपावली का पर्व प्रकाश, शक्ति और सत्य का प्रतीक है. हम सभी श्रद्धालुओं से अपील करते हैं कि वे शांतिपूर्वक, सौहार्द्र और अनुशासन के साथ पूजा में शामिल हों और पुलिस प्रशासन के दिशा-निर्देशों का पालन करें." उन्होंने यह भी बताया कि इस बार रांची के विभिन्न हिस्सों में आकर्षक पंडालों और भव्य झांकियों के जरिए भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी.

समिति के संरक्षक लाल किशोर नाथ शाहदेव ने कहा कि "इस बार हर पूजा पंडाल कुछ न कुछ सामाजिक संदेश भी दे रहा है. नगर निगम, जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के सहयोग से काली पूजा को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाया जाएगा." उन्होंने यह भी आश्वस्त किया कि हर श्रद्धालु को शांतिपूर्ण और भक्तिपूर्ण माहौल में माता काली के दर्शन का अवसर मिलेगा.

समिति के अध्यक्ष विनय कुमार सिंह ने कहा कि "पूरे रांची शहर का वातावरण भक्तिमय हो चुका है. सुंदर सजावट और रोशनी से सजे पंडाल लोगों के आकर्षण का केंद्र बनेंगे. समिति के सभी सदस्य लगातार निगरानी कर रहे हैं ताकि किसी भी आयोजन में कोई बाधा न आए."

### रांची महानगर छठ पूजा समिति का गठन

## मंत्री दीपिका पांडेय सिंह, डॉ रामेश्वर उरांव और राजेश कच्छप बने मुख्य संरक्षक

- आलोक कुमार दुबे अध्यक्ष, लाल किशोर नाथ शाहदेव, डॉ राजेश गुप्ता बने संयोजक,राजीव चटर्जी मुख्य सलाहकार

शुभम संदेश। रांची

राजधानी रांची में रांची महानगर छठ पूजा समिति का विधिवत गठन किया गया. समिति में सर्वसम्मति से ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह और लोहरदगा विधायक सह पूर्व मंत्री डॉ. रामेश्वर उरांव को समिति का मुख्य संरक्षक चुना गया है. समिति के संयोजक के रूप में लाल किशोर नाथ शाहदेव एवं डॉ राजेश गुप्ता(छोटू), जबकि अध्यक्ष पद पर आलोक कुमार दूबे को मनोनीत किया गया है. वहीं मुख्य सलाहकार की जिम्मेदारी राजीव चटर्जी को सौंपी गई है. समिति में संरक्षक मंडल में अमरेन्द्र सिंह, रोहित उरांव, प्रो. विजय सिंह, सुरेश साहू, आलोक कुमार बंटी, विनय सिंह, सोमनाथ मुण्डा और रमेश उरांव को शामिल किया गया है.

वरिष्ठ सहयोगियों के रूप में दीपक ओझा, अभिलाष साहू, सुभाष सिंह, संजीत यादव, अभिषेक साहू और नवीन सिंह रिन्टू को जिम्मेदारी दी गई है. उपाध्यक्ष पद पर कुमुद रंजन, बबलू बर्मा, विशाल सिंह, अभय सिंह और अनिकेत कुमार का चयन किया गया है. समिति के महासचिव के रूप में गौतम दुबे गोपी, रीतेश सिंह, महेंद्र प्रसाद, मनोज सिंह व संजय सिंह का नाम शामिल है. वहीं सचिव मंडल में दिलीप पांडेय, अश्विनी कुमार, सुदेश यादव, विवेक सिंह, संजय सिंह, दिलीप कुमार, अभिषेक कुमार, दीपक ठाकुर, विजय गुप्ता और जीवन कुमार,हैप्पी तिवारी को शामिल किया गया है.

# दिवाली पर धूमधाम, जिला भर में तैयारियां पूरी बाजारों में खरीदारी के लिए भारी भीड़ उमड़ी

- बत्ती वाली झालर की कीमत 100 से 700 रुपये तक, कैलेंडर 10 से 50 रुपये, मिट्टी के दीयों का सौ रूपये प्रति सैकड़ा, करंज तेल 180 से 220 रुपये प्रति किलो, मोतीचूर लड्डू 150 से 300 और घी के लड्डू 300 से 400 रुपये प्रति किलो बिक रहे हैं.

**शुभम संदेश ।लातेहार**

धन की देवी मां लक्ष्मी और विघ्नहरण भगवान गणेश की पूजा के साथ सोमवार को जिले में दीपावली उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा. धनतेरस के बाद अब जिला वासी दीपावली के प्रकाश पर्व की तैयारियों में व्यस्त हैं. रविवार को शहर के बाजारों में खरीदारी के लिए भारी भीड़ देखी गई. चौक-चौराहों पर लोगों की चहल-पहल से दुकानदारों के चेहरे खिल उठे. दीपावली की पूजा में उपयोग होने वाली मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की प्रतिमाओं के बाजार शहर में पूरे जोरों पर हैं. रंजीत ग्लास स्टोर में 50 रुपये से लेकर 3000 रुपये तक की विभिन्न आकारों की प्रतिमाएं उपलब्ध हैं. यहां पूजा के सभी आवश्यक सजावट के सामान भी मिल रहे हैं.हालांकि इस बार महंगाई का असर साफ नजर आया है. बत्ती वाली झालर की कीमत 100 से 700 रुपये तक, कैलेंडर 10 से 50 रुपये, मिट्टी के दीयों का सौ रूपये प्रति सैकड़ा, करंज तेल 180 से 220 रुपये प्रति किलो, मोतीचूर लड्डू 150 से 300 और घी के लड्डू 300 से 400 रुपये प्रति किलो बिक रहे हैं. जिले के लातेहार, चंदवा, बरवाडीह, महुआडांड और बारियातू प्रखंडों में सोमवार को काली पूजा धूमधाम से मनाई जाएगी. सभी जगह काली माता की प्रतिमाओं का निर्माण पूर्ण हो चुका है. लातेहार रेलवे कॉलोनी स्थित दुर्गा बाड़ी में बंगाली रीति-रिवाज के अनुसार मां काली की पूजा होगी, जिसमें रेल अधिकारी और स्थानीय लोग सक्रिय रूप से शामिल हैं. इस प्रकार दीपावली के अवसर पर जिला भर में त्योहार की खुशियाँ चारों ओर नजर आ रही हैं.

## धनतेरस पर भारत इंटरप्राइजेज का खास ऑफर, खरीदारी पर गोल्डन वॉच फ्री

**मनातू (पलामू)** । धनतेरस के शुभ अवसर पर मनातू बाजार में इलेक्ट्रॉनिक सामान की खरीदारी को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है. इस मौके पर हीरो शोरूम के बगल में स्थितभारत इंटरप्राइजेजने ग्राहकों के लिए विशेष ऑफर की घोषणा की है. दुकान द्वारा धनतेरस पर किसी भी इलेक्ट्रॉनिक सामान की खरीदारी करने वाले ग्राहकों को उपहार स्वरूपगोल्डन वॉचभेंट की जा रही है, जिससे बाजार में काफी रौनक देखी जा रही है.भारत इंटरप्राइजेज के प्रोप्राइटरशादाब अहमदने बताया कि उनका उद्देश्य त्योहार के इस अवसर पर ग्राहकों को उत्तम सेवा और किफायती दरों पर उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुएं उपलब्ध कराना है. दुकान में टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, अलमीरा, स्टेबलाइजर, रेफ्रिजरेटर, इनवर्टर, इंडक्शन, ग्राइंडर, पंखा, और वायरिंग से जुड़ी सभी आवश्यक सामग्री उपलब्ध है. किसी भी जानकारी या बुकिंग के लिए ग्राहकमोबाइल नंबर 7992413011 पर संपर्क कर सकते हैं.उन्होंने कहा कि धनतेरस और दीपावली पर घरेलू उपयोग की वस्तुओं की खरीद को शुभ माना जाता है, जिससे हर वर्ष इस दौरान बिक्री में इजाफा होता है. इस बार भी ब्रांडेड और गारंटी युक्त वस्तुओं की मांग बढ़ रही है.गोल्डन वॉच का ऑफर ग्राहकों के बीच आकर्षण का केंद्र बना हुआ है और इसकी वजह से फुटफॉल में लगातार वृद्धि हो रही है. स्थानीय उपभोक्ताओं ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि त्योहार पर ऐसे ऑफर्स से ग्राहकों को लाभ मिलता है.

## हुसैनाबाद में ऑपरेशन के बाद महिला की मौत पर हंगामा, ग्रामीणों ने सड़क जाम कर जताया विरोध

**हुसैनाबाद** । पलामू जिले के हुसैनाबाद शहर में एक निजी क्लीनिक में ऑपरेशन के बाद महिला की संदिग्ध मौत को लेकर आक्रोशित ग्रामीणों ने शुक्रवार को जपला–छत्तरपुर मुख्य सड़क को रेलवे ओवरब्रिज के पूरब विजय पेट्रोलियम के पास जाम कर दिया. घटना से क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया.प्राप्त जानकारी के अनुसार बैराओं निवासी संतोष पासवान की 35 वर्षीय पत्नी संजू देवी का ऑपरेशन हुसैनाबाद के एक निजी अस्पताल में किया गया था. ऑपरेशन के बाद महिला की हालत बिगड़ गई, जिसके बाद उसे बेहतर इलाज के लिए डालटनगंज रेफर किया गया. वहां पहुंचने से पहले ही संजू देवी की मौत हो गई.महिला की मौत से गुस्साए परिजनों और ग्रामीणों ने अस्पताल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए सड़क पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया और जाम लगा दिया. घंटों तक सड़क जाम रहने से वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा.सूचना मिलते ही प्रशासन मौके पर पहुंचा और समझा-बुझाकर जाम को हटवाया गया. जाम हटने के बाद यातायात सामान्य हुआ.

### तारपीन तेल पीने से 20 माह के बच्चे की मौत

**लातेहार** । जिले के बालूमाथ प्रखंड के बड़का बालूमाथ मुहल्ले में 20 माह के बच्चे की तारपीन तेल पीने से मौत हो गई. बैद्यनाथ गंझू का पुत्र रितिक राज गलती से घर में रखा तारपीन तेल पानी समझकर पी लिया. इसके बाद उसकी सांसें अटकने लगीं. परिवार वाले उसे तुरंत बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर सुरेंद्र कुमार ने प्राथमिक उपचार किया. बच्चे की गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर किया गया. लेकिन रिम्स ले जाते समय बीजुपाड़ा गांव के पास रास्ते में ही बच्चे ने दम तोड़ दिया.

## दिनदहाड़े अगवा कर युवक की गोली मारकर हत्या

**शुभम संदेश ।पलामू**

पलामू के चैनपुर थाना क्षेत्र के शाहपुर नई मुहल्ला में रविवार सुबह एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई. गोली मारने से पहले अपराधियों ने युवक को अगवा किया. चैनपुर से बाइक पर उठा कर पिटाई करते हुए तीन किलोमीटर दूर ले जाकर हत्या कर दी. गोली मारने से पहले युवक को चाकू मारने के जख्म के निशान मिले है.

मृतक की पहचान चैनपुर पठान मोहल्ला निवासी इबरार हजाम (मिस्त्री) के 30 वर्षीय पुत्र हसन अली के रूप में हुई है.स्थानीय लोगों ने बताया कि पांच की संख्या में पहुंचे अपराधियों ने घटना को अंजाम दिया है. घटना का कारण आपसी रंजिश बताया जा रहा है. हत्या करने से पहले युवक को ले जाते समय का दृश्य आसपास के सीसीटीवी कैमरे में कैद हुआ है. पुलिस उसके आधार पर अपराधियों की पहचान करने में जुटी हुई है. मृत युवक के पैकेट से प्रतिबंधित सिरप बरामद किया गया है.जानकारी के अनुसार हसन अली और विनय अग्रवाल चैनपुर में अस्पताल चौक के समीप बैठे हुए थे. इसी क्रम में 4 से 5 युवक वहां पहुंचे और दोनों युवकों की पिटाई की. हसन अली को जबरन बाइक पर बैठा लिया और वहां से लेकर चले गए. करीब तीन किलोमीटरदूर ले जाने के बाद उसकी पुनः पिटाई की और फिर चाकू से मारने के बादगले के हिस्से में सटाकर गोली मार दी. विनय ने घटना की जानकारी हसन के परिजनों को दी. परिजन ढूंढते हुए शाहपुर नई मोहल्ला पहुंचे. यहां से हसन का शव बरामद किया.सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और शव को कब्जे में लिया.परिजनों के अनुसार हसन मुंबई में रहकर पेंटिंग का काम करता था. मोहर्रम के समय घर आया था. परिजनों ने शाहपुर के सद्दाम नामक युवक पर हत्या की आशंका व्यक्त की है.इधर जानकारी मिली है कि हसन हत्याकांड का आरोपित रहा है और वर्ष 2020 में जेल भी गया था. जेल से निकलने के बाद वह मुंबई में रहकर काम करता था.इस संबंध में चैनपुर के थाना प्रभारी राम शर्मा ने बताया कि सूचना मिलते ही दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंच कर शव को कब्जे में लिया और पोस्टमास्टर्म कराने के लिए राजा मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भेज दिया. अपराधियों को चिन्हित करने का प्रयास किया जा रहा है. गिरफ्तारी के लिए अभियान चलाया जा रहा है. हत्या के कारणों का भी पता लगाया जा रहा है कि आपसी रंजिश थी या कुछ और. जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार किया जाएगा.

### लातेहार के महुआडांड़ में सड़क दुर्घटना, कार की टक्कर से दो बाइक सवार गंभीर रूप से घायल

**महुआडांड़ (लातेहार)** । महुआडांड़ केमेराम चम्पा घाटीमें रविवार दोपहर एक तेज़ रफ्तार कार और मोटरसाइकिल के बीच हुई टक्कर में दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए. हादसे में घायल युवकों की पहचानगोविंदा कुंवर, पिताराजेश कुंवरऔररूपेश लोहरा, पितामैनेजर लोहराके रूप में हुई है.जानकारी के अनुसार, दोनों युवक महुआडांड़ बाजार से अपने गांवचम्पालौट रहे थे, इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहीअज्ञात कारने जोरदार टक्कर मार दी. टक्कर मारने के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया.घायलों को मौके पर मौजूद ग्रामीणों की मदद सेसामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महुआडांड़लाया गया, जहांडॉ. अमितद्वारा प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया. बताया गया कि दोनों युवकों कोसिर, हाथ और पैरमें गंभीर चोटें आई हैं.हादसा इतना जबरदस्त था कि बाइक के परखच्चे उड़ गए. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोनों युवकबिना हेलमेटके बाइक चला रहे थे, जिससे उनकी चोटें और भी गंभीर हो गईं.घटना के बाद क्षेत्र में दहशत का माहौल है. पुलिस मामले की जांच कर रही है और फरार कार चालक की तलाश जारी है.

### अधिवक्ता ने छठ घाट पहुंच तैयारी का लिया जायजा

**लातेहार** । वरिष्ठ अधिवक्ता एवं श्री सूर्यनारायण पूजा समिति के संरक्षक संजय कुमार रविवार को चटनाही स्थित औरंगा नदी तट पर छठ पूजा की तैयारियों का निरीक्षण करने पहुंचे. उन्होंने समिति के सदस्यों से बातचीत कर छठ व्रतियों के लिए दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली. समिति अध्यक्ष सुरेंद्र प्रसाद सिंह ने बताया कि बाइपास चौक से राजहार और छठ घाट तक दोनों ओर आकर्षक विद्युत सज्जा एवं तोरण द्वार बनाए जा रहे हैं. मुख्य छठ घाट पर समुचित प्रकाश व्यवस्था और अस्थायी स्नानागार भी बनाए जाएंगे.इस वर्ष गंगा आरती का आयोजन विशेष आकर्षण होगा, जिसमें वाराणसी के पुरोहित भाग लेंगे. संध्या और सप्तमी तिथि को गंगा आरती के साथ भगवान सूर्य की पूजा व विसर्जन किया जाएगा.सूर्य मंदिर का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है, जिसकी लागत लगभग तीन करोड़ रुपये है. अध्यक्ष सिंह ने सभी से मंदिर निर्माण में आर्थिक सहयोग करने की अपील की. वरीय अधिवक्ता संजय कुमार ने समिति को हर संभव मदद का आश्वासन दिया.

### युवा समाजसेवी के पिता का निधन, क्षेत्र में शोक

**हुसैनाबाद/पलामू** । प्रखंड के युवा समाजसेवी और कामगारपुर निवासी नीरज कुमार सिंह के पिता प्रदीप कुमार सिंह के आकस्मिक निधन से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है. उनका निधन शनिवार शाम को हो गया. वे पिछले कई महीनों से बीमार चल रहे थे और उनका इलाज नई दिल्ली व गाजियाबाद में हो रहा था.रविवार सुबह 1:30 बजे कामगारपुर गांव स्थित श्मशान घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया. पुत्र नीरज कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि उनके पिता समाज के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे और जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते थे.प्रदीप कुमार सिंह के निधन पर क्षेत्र के कई राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों ने शोक व्यक्त किया. सभी ने उन्हें एक मिलनसार, सेवाभावी और सामाजिक समरसता से ओतप्रोत व्यक्तित्व बताया. उनका असमय जाना न केवल परिवार बल्कि पूरे समाज के लिए अपूरणीय क्षति है.शोक व्यक्त करने वालों में पूर्व मंत्री कमलेश कुमार सिंह, विधायक संजय कुमार सिंह यादव, पूर्व विधायक दशरथ कुमार सिंह, समाजसेवी मिथलेश कुमार सिंह, पप्पू सिंह, बृजकिशोर सिंह, अमरेश कुमार सिंह, मुखिया विजय राम, शिवलाल राम, युवा नेता सत्यम शिवम, अंशु कुमार, आशीष राम सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल थे.

### सड़क दुर्घटना में दो गंभीर रूप से घायल, रिम्स रेफर

**लातेहार** । जिला मुख्यालय में दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. पहली घटना शनिवार रात साढ़े आठ बजे लातेहार प्रखंड कार्यालय के पास एनएच-39 पर हुई, जहाँ एक अज्ञात अल्टो कार ने बाइक सवार शासन टोप्पो को टक्कर मारी. शासन टोप्पो, जो गढ़वा जिले के रमना स्थित एसबीआई बैंक में सुरक्षा गार्ड हैं, इस हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए और उनका दाहिना पैर टूट गया. कार चालक मौके से फरार हो गया. स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें 108 एंबुलेंस से सदर अस्पताल पहुंचाया गया.दूसरी घटना सदर थाना क्षेत्र के डुरुवा गांव में हुई, जहाँ कैलाश राम मालगाड़ी की चपेट में आ गए और उनके एक पैर में गंभीर चोट आई. सांसद प्रतिनिधि डॉ. चंदन कुमार सिंह और पूर्व नगर पंचायत उपाध्यक्ष नवीन कुमार सिन्हा ने सदर अस्पताल जाकर घायल दोनों की बेहतर इलाज की व्यवस्था की. डॉक्टरों ने दोनों को बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर कर दिया.

**अधिकार** मनातू के बंसी गांव में एक ही परिवार के छह बच्चे शिक्षा से वंचित

# ना आंगनबाड़ी, ना स्कूल में नाम, योजनाओं से वंचित

**शुभम संदेश ।पलामू**

जिले के मनातू प्रखंड के बंसी पंचायत स्थित बंसी गांव में छह बच्चों की सरकारी योजनाओं से पूरी तरह वंचित रहने की दर्दनाक कहानी सामने आई है. बैदुल्लाह खान और उनकी पत्नी रिजना बीवी के छह बच्चे—सानिया खातून (12), सोनू खान (10), आफरीन खातून (8), मानो खातून (6), रानी खातून (5) और अप्पू खान (3)—का नाम न तो आंगनवाड़ी केंद्र में दर्ज है और न ही किसी स्कूल में. इसके कारण वे बच्चों को शिक्षा और पोषण जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं.

रिजना बीवी ने बताया कि आर्थिक तंगी और जन्म प्रमाण पत्र न होने के कारण बच्चों का आधार कार्ड बनवाना भी संभव नहीं हो पाया.

प्रखंड कार्यालय में जन्म प्रमाण पत्र के नाम पर 1100 रुपये की मांग की गई, जिससे उनका परिवार और भी अधिक दबाव में आ गया. गरीबी के कारण बच्चों को स्कूल या आंगनवाड़ी भेजना परिवार के लिए संभव नहीं है. साथ ही, रिजना बीवी ने यह भी बताया कि उनके परिवार को राशन कार्ड तक नहीं मिला है और राशन वितरण प्रणाली के माध्यम से उन्हें एक भी किलो राशन नहीं मिला. जबकि सरकार गरीब परिवारों को मुफ्त अनाज, कपड़ा, लूंगी-धोती आदि वितरण का दावा करती है, परंतु बंसी गांव के गरीब परिवारों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है.

समाजसेवी अफजल खान ने इस स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सरकारी योजनाएं अक्सर कागजों में ही सीमित रह जाती हैं. भ्रष्टाचार और लापरवाही के कारण वास्तविक लाभ गरीबों तक नहीं पहुँचता. प्रखंड कार्यालयों में लोग बार-बार भटकते हैं, लेकिन समाधान नहीं मिलता. उन्होंने मनरेगा, पोषण, शिक्षा और जन वितरण प्रणाली में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है. बंसी गांव की यह स्थिति प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की कार्यशैली पर सवाल खड़ा करती है और 'सबका साथ-सबका विकास' के नारे की वास्तविकता पर बड़ा संदेह पैदा करती है. ग्रामीण इलाकों में योजनाओं का जमीनी स्तर पर सही क्रियान्वयन आवश्यक है ताकि जरूरतमंदों तक उनका लाभ पहुंच सके.

### झूलते बिजली के तार दे रहे गंभीर हादसों को न्योता

**लातेहार।** धर्मपुर मोहल्ले के आंगनबाड़ी केंद्र के पास बेतरतीब ढंग से झूल रहे बिजली के तार गंभीर हादसों को न्योता दे रहे हैं. कई तार तीन से चार फीट की ऊंचाई पर लटके हुए हैं, जबकि कुछ जमीन से सटकर खतरा बढ़ा रहे हैं. खासकर यहां रोजाना बच्चे खेलते हैं, जिससे दुर्घटना का खतरा और भी बढ़ जाता है. एक निर्माणाधीन घर के लोहे के सरिया में भी तार लपेटे हुए हैं, जो सुरक्षा के लिए चिंता का विषय है. स्थानीय लोगों ने कई बार बिजली कर्मियों को सूचना दी, लेकिन अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ है. ग्रामीणों ने कार्यपालक अभियंता राजदेव मेहता से इस मामले को संज्ञान में लेकर तारों की मरम्मत और संबंधित अधिकारियों पर कार्रवाई करने की मांग की है, ताकि बड़ा हादसा होने से रोका जा सके.

### मोंगर गांव के हरिजन टोला में जल निकासी की व्यवस्था न होने से ग्रामीणों का जीवन हुआ मुश्किल

**लातेहार** । मोंगर गांव के हरिजन टोला में जल निकासी की उचित व्यवस्था न होने के कारण पिछले तीन महीने से सड़क पर पानी बह रहा है, जिससे ग्रामीण काफी परेशान हैं. गांव में लगे पानी टंकी के पाइप से रिसाव हो रहा है, जो स्थानीय विकास योजना के तहत लगाया गया था. ठेकेदार द्वारा जल निकासी का सही प्रबंध न किए जाने से सड़क गीली और कीचड़ से भर गई है.ग्रामीणों ने बताया कि इस कारण आने-जाने में काफी दिक्कत हो रही है. घरों में सीलन और बदबू फैल रही है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं. खासकर स्कूल जाने वाले बच्चे और बुजुर्ग इस समस्या से अधिक प्रभावित हो रहे हैं. रोजाना लोग फिसलने और कपड़े गंदे होने की समस्या झेल रहे हैं.पर्व-त्योहार के दौरान, जैसे दिवाली पर, जलभराव और कीचड़ के कारण लोगों को घर आने-जाने में विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ा. ग्रामीणों ने प्रशासन से जल्द जल निकासी की समुचित व्यवस्था करने की मांग की है, ताकि उनकी परेशानी दूर हो सके और वे सामान्य जीवन व्यतीत कर सकें.

## कोडरमा स्टेशन पर ट्रेन से गिरा यात्री, आरपीएफ ने पहुंचाया अस्पताल

**कोडरमा** । रविवार को कोडरमा रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 4 पर ट्रेन संख्या 12381 से गिरकर एक यात्री घायल हो गया. घायल यात्री की पहचानसंजय डालमिया (पिता स्व. मधु प्रसाद डालमिया, निवासी मनी पारा, थाना वृंदावन, जिला मथुरा, उत्तरप्रदेश) के रूप में हुई है. प्राप्त जानकारी के अनुसार, संजय डालमिया बिस्कुट लेने के लिए ट्रेन से नीचे उतरे थे, इसी दौरान ट्रेन चल पड़ी और चढ़ते समय उनका पैर फिसल गया. मौके पर मौजूद आरपीएफ प्रधान आरक्षी रवि रौशन कुमारने त्वरित कार्रवाई करते हुए एंबुलेंस बुलाई और घायल यात्री कोसदर अस्पताल कोडरमा भिजवाया. आरपीएफ द्वारा यात्री के परिजनअभिषेक अग्रवालको घटना की सूचना दे दी गई है.

### हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद की तत्परता की हो रही सराहना

# लेपो रोड निर्माण से हजारीबाग में लौटी रफ्तार

शुभम संदेश । हजारीबाग

शहर के लेपो रोड की जर्जर स्थिति से जूझ रहे स्थानीय लोगों को अब राहत मिलने लगी है. लंबे समय से गड्ढों, धूल और जलजमाव से परेशान इस क्षेत्र की सड़क पर आखिरकार निर्माण कार्य शुरू हो गया है. इस पहल का श्रेय सदर विधायक प्रदीप प्रसाद को दिया जा रहा है, जिन्होंने जनता की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए केवल 36 घंटे के भीतर सड़क मरम्मत और पुनर्निर्माण कार्य की शुरुआत करवा दी.

लेपो रोड पर बनी स्थिति से आमजन बेहद परेशान थे. आए दिन दुर्घटनाएं और आवागमन में बाधा लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित कर रही थी. क्षेत्रवासियों ने कई बार प्रशासन से शिकायतें की थीं, लेकिन जब विधायक प्रदीप प्रसाद ने मामले में सीधा हस्तक्षेप किया, तो तस्वीर बदल गई.

विधायक ने विभागीय अधिकारियों के साथ तत्काल बैठक की और निर्माण कार्य को शीघ्र शुरू कराने का निर्देश दिया. उनका कहना था कि यह कार्य मेरा कर्तव्य नहीं, बल्कि मेरा धर्म है. सेवा ही संकल्प है. उनकी इस भावना और तत्परता को लेकर सोशल मीडिया पर लोगों ने उन्हें खुले दिल से सराहा. नागरिकों ने पोस्ट साझा करते हुए कहा कि ऐसे जनप्रतिनिधि ही सच्चे मायनों में जनता के सेवक होते हैं.

निर्माण कार्य की शुरुआत होते ही क्षेत्र में उत्साह की लहर दौड़ गई. स्थानीय लोगों ने विधायक के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अब उन्हें सुरक्षित और सुगम मार्ग मिलेगा. साथ ही, क्षेत्र की सुंदरता और विकास की दिशा में यह एक बड़ा कदम है. विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि जनता का विश्वास ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है और हजारीबाग के विकास को गति देना मेरी प्राथमिकता है. उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में शहर के अन्य समस्याग्रस्त क्षेत्रों में भी इसी तरह शीघ्र कार्रवाई की जाएगी.

लेपो रोड का निर्माण इस बात का प्रमाण है कि जब जनप्रतिनिधि जनभावनाओं को समझकर कार्रवाई करते हैं, तो बदलाव लंबा इंतजार नहीं करता. प्रदीप प्रसाद की पहल ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि जनसेवा से बढ़कर कोई राजनीति नहीं.

## एक नजर

### लावालौंग प्रखंड में चोरों का आतंक, लगातार हो रही मवेशी चोरी से ग्रामीण दहशत में

**चतरा** । चतरा जिले के लावालौंग प्रखंड में इन दिनों चोरों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है, जिससे ग्रामीणों में भारी दहशत और नाराजगी देखने को मिल रही है. क्षेत्र के विभिन्न गांवों में चोर बेखौफ होकर चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं. पुलिस की निष्क्रियता से चोरों के हौसले बुलंद हैं.प्राप्त जानकारी के अनुसार, शनिवार रात 18 अक्टूबर 2025 को आत्मपुर उर्फ नंदकिशोर साव गांव में दो अलग-अलग स्थानों से मवेशी चोरी की घटना हुई. गांव निवासीबबलू साव, पिताबनवारी साव, के घर के सामने बंधे दो मवेशी चोरों ने चुरा लिए. बबलू साव ने बताया कि रात 11 बजे तक जानवर सही सलामत थे, लेकिन आधी रात के बाद चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया. इसी गांव केराहुल प्रसादका भी एक मवेशी चोरी हो गया. राहुल की मां ने बताया कि जानवर के चिल्लाने की आवाज आई, वे बाहर निकलने ही वाले थे कि चोरों ने वाहन स्टार्ट कर दिया और फरार हो गए. सुबह 4 बजे उठने पर देखा गया कि मवेशी गायब हैं.ग्रामीणों के अनुसार, चोरी मेंपीकॉक वैनका इस्तेमाल किया गया. इससे पहले भी करीब 15-20 दिन पूर्व ग्राम चातर मेंराजेश उरांवका मवेशी चोरी हुआ था.खबर लिखे जाने तक दोनों पीड़ित थाना जाने की तैयारी कर रहे थे. लगातार हो रही चोरी की घटनाओं से ग्रामीण भयभीत और प्रशासन से नाराज हैं. ग्रामीणों ने जल्द कार्रवाई की मांग की है.

### कोडरमाः पेड़ से लटका युवक का शव मिलने से सनसनी, हत्या की आशंका, जांच में जुटी पुलिस

**कोडरमा** । थाना क्षेत्र अंतर्गत लोकाई स्थित बंद पड़े ब्लू स्टोन माइंस के समीप रविवार सुबह एक युवक का शव पेड़ से लटका हुआ मिला, जिससे इलाके में सनसनी फैल गई. मृतक की पहचान लोकाई निवासी 25 वर्षीयसोनू कुमार, पितागोविंद सावके रूप में की गई है. परिजनों के अनुसार सोनू शनिवार को घर से निकला था और देर शाम तक वापस नहीं लौटा. खोजबीन के दौरान जब उसका फोन भी बंद मिला तो परिजन चिंतित हो गए. रविवार सुबह ग्रामीणों को जंगल में जानवर चराते वक्त पेड़ से लटकता शव दिखाई दिया, जिसके बाद उन्होंने परिजनों और पुलिस को सूचना दी.मृतक के शरीर पर चोट के निशान पाए गए हैं और चेहरा गमछा से बंधा हुआ था, जिससे परिजन इसेहत्या की घटनामान रहे हैं.

### हजारीबागः गिद्दी रिवर साइड पर बनेगा नया पुल

**हजारीबाग** । हजारीबाग-रांची मार्ग के बीच स्थित गिद्दी रिवर साइड पुलकी जर्जर स्थिति पर वर्षों से आवाज उठाने वालेपूर्व सांसद जयंत सिन्हाके निरंतर प्रयास आखिरकार रंग लाए हैं. अब इस पुल कानया निर्माण कार्य जल्द शुरू होने जा रहा है, जबकि वर्तमान पुल की मरम्मत भी की जाएगी.जयंत सिन्हा ने इस पुल को लेकरपिछले तीन वर्षों में जिला प्रशासन, कोल इंडिया और राज्य सरकार को कई बार पत्र लिखा, पुल का निरीक्षण किया और तकनीकी जांच की माँग की थी. कोल इंडिया ने पुल निर्माण की लागत का50% खर्च वहन करने की सहमतिदी है, शेष राशि राज्य सरकार देगी.पथ निर्माण विभागद्वारा निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जाएगा. अरगड्डा महाप्रबंधक एस.के. झा ने निरीक्षण के दौरान इसकी पुष्टि की है.जयंत सिन्हा ने कहा, ₹यह केवल मेरा कर्तव्य नहीं, बल्कि जनता की सुरक्षा का सवाल है. इस पुल से रोज़ाना हज़ारों लोग गुजरते हैं और इसकी स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी. अगर समय रहते कदम नहीं उठाया जाता, तो कोई बड़ा हादसा हो सकता था.

### कांग्रेस का "वोट चोर गद्दी छोड़" हस्ताक्षर अभियान

**चौपारण** । बरमोरिया पंचायत के हथिया गांव में रविवार को कांग्रेस पार्टी ने "वोट चोर गद्दी छोड़" नारे के साथ हस्ताक्षर अभियान चलाया. सैकड़ों ग्रामीणों की भागीदारी के बीच लोकतंत्र और मतदाता अधिकारों की रक्षा के समर्थन में जोरदार आवाज उठी.कार्यक्रम का नेतृत्व प्रखंड अध्यक्षबैजू गहतोलने किया, संचालननरेश सावने किया और मुख्य अतिथि के रूप मेंपूर्व मंत्री जय प्रकाश भाई पटेल मौजूद रहे. उन्होंने भाजपा पर मतदाता सूची में हेराफेरी का आरोप लगाते हुए कहा कि "जनता अब जाग चुकी है, और वोट चोरों को गद्दी से उतार देगी."अरुण साहू, भीम कुमार, डॉ. निजाम अंसारीऔरदीपक गुप्ताने भी संबोधित करते हुए इसे "लोकतंत्र की लड़ाई" बताया.

## खुशियां मातम में बदली : सड़क हादसे में युवक की मौत, ग्रामीणों ने किया सड़क जाम

शुभम संदेश् । चतरा

दीपावली के दिन चतरा जिले में एक दर्दनाक हादसे ने खुशियों को मातम में बदल दिया. हंटरगंज प्रखंड के होसिल गांव के समीप रविवार सुबह एक अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक राकेश कुमार (19) की मौत हो गई. युवक प्रतापपुर स्थित अपने ननिहाल से धनगिरी सलैया गांव लौट रहा था, तभी जोरी की ओर से आ रहे वाहन ने उसे कुचल दिया.

स्थानीय लोगों की मदद से युवक को जोरी स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से उसे चतरा सदर अस्पताल और फिर हजारीबाग मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया.108 एंबुलेंस उपलब्ध न होने के कारण परिजनों ने निजी वाहन से ले जाने का प्रयास किया, लेकिन बीच रास्ते में राकेश ने दम तोड़ दिया.

घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने जोरी स्वास्थ्य केंद्र के समीप चतरा-डोभी मुख्य पथ को जाम कर दिया और मुआवजा व दोषियों की गिरफ्तारी की मांग की. प्रदर्शनकारियों ने स्वास्थ्य विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि एंबुलेंस की कमी के कारण युवक की जान गई. प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश यादव ने जिला प्रशासन से मांग की कि जोरी क्षेत्र में तत्काल एंबुलेंस की व्यवस्था की जाए.

सूचना मिलते ही थाना प्रभारी अमित कुमार सिंह और बीडीओ निखिल गौरव दल बल के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को शांत किया. पुलिस ने बताया कि घटनास्थल से कोई हेलमेट बरामद नहीं हुआ, जिससे युवक के सिर में गंभीर चोट आई और उसकी जान चली गई. पुलिस सीसीटीवी फुटेज की मदद से फरार वाहन की तलाश में जुटी है.

### हजारीबागः लूट की योजना बना रहे पांच अपराधी हथियार के साथ गिरफ्तार

# पिस्तौल-कारतूस व लूट के कई सामान बरामद

शुभम संदेश । हजारीबाग

हजारीबाग पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है.कोर्रा थाना क्षेत्रअंतर्गतकैनरी हिल के जंगलमें लूट की योजना बना रहे पांच अपराधियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है. इनके पास सेहथियार, जिंदा कारतूस, सोने-चांदी की सिकड़ी, मोबाइल, नगदी, दो बाइक और एक चार पहिया वाहनबरामद किया गया है. हजारीबागएसपी अंजनी अंजनको गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ अपराधी किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में हैं. सूचना परसदर एसडीपीओ अमित आनंदके नेतृत्व में त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने कैनरी हिल जंगल में छापेमारी कर सभी अपराधियों को धर दबोचा.

**गिरफ्तार अपराधियों में शामिल हैं**

**धनीराम सोरेन उर्फ नेपाली :** चरही थाना क्षेत्र के कर्मांबेडा निवासी, जिस पर छह आपराधिक मामले दर्ज हैं.

**बलराम मुंडा** – गुड़वा बस्ती, थाना मुफ्फसिल का निवासी, जिस पर 11 मामले दर्ज हैं.

**तैयब अंसारी** : मरहेट, थाना मुफ्फसिल का निवासी, जिस पर एक मामला दर्ज है.

**किशोर कुमार बिहारी** : ग्राम भराजो दो निवासी, जिस पर दो मामले दर्ज हैं.

**विकास** : जिसके आपराधिक इतिहास की जांच की जा रही है.

बताया जा रहा है कि इन्हीं अपराधियों ने कुछ दिन पूर्वपतरातू मुहल्लेमें बर्थडे मना रहे युवकों से हथियार के बल पर8–10 मोबाइल फोन, सोने की चेन, अंगूठी और 90,000 नकदलूटे थे.

**बरामदगी में शामिल हैं :1** पिस्तौल, 1 देसी कट्टा, 6 जिंदा कारतूस, 48 ग्राम सोना, 98 ग्राम , चांदी की सिकड़ी, 8 मोबाइल फोन, 2 मोटरसाइकिल, 1 चार पहिया वाहन

पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिले में बढ़ती छिनतई की घटनाओं को देखते हुए पुलिस लगातार निगरानी और छापेमारी कर रही है. यह गिरफ्तारी पुलिस की सतर्कता और तत्परता का परिणाम है. अपराधियों से पूछताछ जारी है, जल्द और भी खुलासे होने की उम्मीद है.

हजारीबाग पुलिस की इस कार्रवाई से अपराधियों में हड़कंप मचा है और आम लोगों में पुलिस के प्रति भरोसा और मजबूत हुआ है.

## बिरहोर बच्चों के साथ शिक्षकों ने मिलकर मनाई दिवाली, शिक्षा और विकास का दिया संदेश

शुभम संदेश । हजारीबाग

कोचिंग एसोसिएशन ने हजारीबाग के डेमोटांड स्थित बिरहोर टोला में दिवाली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया. इस दौरान एसोसिएशन के शिक्षकों ने बिरहोर बच्चों एवं उनके परिवारों के साथ दीपावली का उत्सव मनाया और उन्हें शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया. बच्चों को पठन सामग्री, कॉपी, केक, मिठाई, बिस्कुट और चॉकलेट भी वितरित किए गए. शिक्षकों ने कहा कि पढ़ाई से ही बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है, इसलिए मेहनत करनी चाहिए. बिरहोर के ग्रामीणों ने बताया कि आजादी के इतने साल बीत जाने के बाद भी उनके क्षेत्र में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं. हजारीबाग कोचिंग एसोसिएशन ने इस समस्या को जनप्रतिनिधियों तक पहुँचाने का भरोसा दिया. इस कार्यक्रम में एसोसिएशन के अध्यक्ष जेपी जैन, उपाध्यक्ष सुदेश प्रसाद, कोषाध्यक्ष वासुदेव पंडित, मीडिया प्रभारी रविकांत चौधरी समेत कई शिक्षक शामिल थे. यह पहल शिक्षा और विकास के लिए एक प्रेरणादायक कदम साबित हुई है.

## रोशनी से नहाया हजारीबाग बाजारों में दिखी रौनक, उत्साह

**हजारीबाग** । दीपों के पर्व दीपावली से एक दिन पूर्व छोटी दिवाली के अवसर पर रविवार को हजारीबाग शहर पूरी तरह रोशनी और खुशियों से जगमगा उठा. सुबह से ही बाजारों में जबरदस्त भीड़ उमड़ पड़ी और खरीदारी का सिलसिला देर रात तक चलता रहा.गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियों, मिठाइयों, सजावटी सामान, दीयों और मोमबत्तियों के स्टॉल पर ग्राहकों की लंबी कतारें देखने को मिलीं. पारंपरिकमिट्टी के दीयोंको लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा गया. लोगों ने इसे पर्यावरण के अनुकूल और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ा बताया.साथ ही रंग-बिरंगी मोमबत्तियां और बैटरी से चलने वाले सजावटी दीयों की भी जमकर बिक्री हुई, जिसने पूरे बाजार को रंग-बिरंगी रोशनी से नहला दिया. मिठाइयों की दुकानों पर रसगुल्ला, गुलाबजामुन, लड्डू और काजू कतली की जबरदस्त मांग रही.दुकानदारों ने बताया कि इस बार बिक्री में पिछले साल की तुलना में बढ़ोतरी हुई है. ग्रामीण इलाकों से भी भारी संख्या में लोग दीपावली की खरीदारी के लिए हजारीबाग पहुंचे. बढ़ती भीड़ के कारण सड़कों पर जाम की स्थिति जरूर बनी, लेकिन लोगों के चेहरों पर खुशी और उत्साह साफ झलक रहा था. व्यापारियों ने भी बेहतर बिक्री से राहत की सांस ली और कहा कि दीपावली ने बाजार में फिर से जान फूंक दी है.

## एएनवाईएस स्कूल, बसरिया में दीपावली पर बच्चों ने दिखाई रंगों व प्रतिभा की छटा

**चौपारण (हजारीबाग)** । एएनवाईएसपब्लिक स्कूल, बसरिया में दीपावली के उपलक्ष्य में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने अपनी रचनात्मकता और सांस्कृतिक भावना का अद्भुत प्रदर्शन किया.कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार और हवन से हुई, जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने आहुति देकर शांति और समृद्धि की कामना की. इसके बाद आयोजितरंगोली प्रतियोगितामें चार हाउस –ने भाग लिया, जिसमेंफील्डमार्शलहाऊसविजेता रहा. दीया मेकिंग प्रतियोगितामें बच्चों ने सुंदर सजावट के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया. वहींफैंसी ड्रेस प्रतियोगितामें नन्हे छात्रों नेलक्ष्मी, गणेश, श्रीराम और सरस्वतीके रूप में मंच पर आकर सभी का मन मोह लिया.विद्यालय की प्राचार्यादीप सिखाने कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों को संस्कृति से जोड़ते हैं और उनका आत्मविश्वास बढ़ाते हैं. कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए. अभिभावकों और शिक्षकों ने बच्चों के प्रयासों की सराहना की.

### वारदात | चोरी की पूरी वारदात शोरूम के अंदर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद

# रामगढ़ के बजाज बाइक शोरूम से 5 लाख की चोरी

शुभम संदेश । रामगढ़

रामगढ़ शहर के कांके बार इलाके में स्थित एक बजाज बाइक शोरूम से धनतेरस की कमाई उड़ा ली गई. रविवार सुबह जब शोरूम का शटर खुला तो मालिक व कर्मचारी हैरान रह गए. कैशियर के कमरे का शीशा टूटा हुआ था और अंदर से लगभग पांच लाख रुपये नगद और चेक गायब थे. शोरूम के मालिक वत्सल पोद्दार ने इस घटना की सूचना तत्काल रामगढ़ थाना प्रभारी नवीन प्रकाश पांडे को दी, जिसके बाद पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंच कर जांच शुरू कर दी. पुलिस के अनुसार, चोर ने शोरूम के पीछे बने लेडिस बाथरूम के वेंटिलेटर को तोड़कर अंदर घुसा. इसके बाद वह सीधे कैशियर के कमरे तक पहुंचा, जहां उसने काउंटर का शीशा तोड़कर दरवाजा खोला और पांच लाख रुपये नगद चुरा कर फरार हो गया. चोरी की पूरी वारदात शोरूम के अंदर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है. लगभग 41 मिनट के वीडियो में चोर हुडी पहने हुए शोरूम में घुसता दिख रहा है और आराम से कैश अपने बैग में रखकर भाग जाता है. हालांकि, चोर का चेहरा सीसीटीवी में स्पष्ट नहीं दिखा. पुलिस शोरूम के आसपास लगे अन्य सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है ताकि चोर की पहचान की जा सके. इस मामले में पुलिस को शक है कि शोरूम का कोई कर्मचारी चोर के साथ सांठगांठ में हो सकता है. पुलिस इस एंगल से भी जांच कर रही है. रामगढ़ थाना प्रभारी नवीन प्रकाश पांडे ने कहा कि चोरी की वारदात गंभीर है और अपराधी को जल्द गिरफ्तार करने के लिए टीम लगाई गई है. उन्होंने लोगों से अपील की है कि अगर कोई संदिग्ध जानकारी हो तो पुलिस को सूचित करें. फिलहाल, पुलिस सभी संभावित रास्तों पर नजर बनाए हुए है और आरोपियों की तलाश जारी है. यह चोरी क्षेत्र में सुरक्षा की बड़ी चुनौती बनकर सामने आई है.

### गार्ड को नंबर दे रहे थे थाना प्रभारी, चोर कर रहा था शोरूम की सफाई

रामगढ़ । धनतेरस को लेकर पुलिस देर रात तक सड़क पर थी. कई स्थानों पर भीड़ की स्थिति बनी हुई थी. पुलिस सभी जगह गश्त भी लगा रही थी. पेट्रोलिंग पार्टी के अलावा रामगढ़ थाना प्रभारी नवीन प्रकाश पांडे भी लगातार गश्त कर रहे थे. देर रात वे बजाज बाइक के शोरूम के पास भी पहुंचे थे. वहां उन्होंने शोरूम के सुरक्षा गार्ड से बात की. उन्होंने गार्ड को अपना मोबाइल नंबर भी दिया. उन्होंने कहा कि एहतियात बरतनी है और किसी भी तरह की वारदात हो तो सूचना देनी है. समय कुछ ऐसा था कि शटर के बाहर थाना प्रभारी सुरक्षा गार्ड से बात कर रहे थे.

## विधायक प्रदीप प्रसाद ने स्वदेशी दीपों से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को किया सशक्त

शुभम संदेश । हजारीबाग

दीपावली के अवसर पर विधायकप्रदीप प्रसादने स्थानीय कारीगरों को सम्मान देने औरस्वदेशी उत्पादोंको बढ़ावा देने की अपील की. उन्होंने अपनी बिटिया के साथ स्थानीयकुम्हारों से मिट्टी के दीपखरीदकर आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को मजबूत किया.

विधायक ने कहा कि "जब हम स्वदेशी दीप जलाते हैं, तो केवल घर ही नहीं, कारीगरों के जीवन में भी उजाला आता है." उन्होंने जनता से आह्वान किया कि इस दीपावलीचाइनीज या विदेशी सामानों से परहेज़ करस्वदेशी वस्तुओं को अपनाएं.उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ₹वोकल फॉर लोकल₹ अभियान को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प दोहराते हुए कहा कि "हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी" इस दीपावली का मंत्र होना चाहिए.प्रदीप प्रसाद ने कहा कि दीप जलाना आत्मनिर्भरता और लोकल प्रतिभा के सम्मान का प्रतीक है. ऐसे प्रयासों सेदेश की अर्थव्यवस्था को बलऔर ग्रामीण कारीगरों को नया जीवन मिलेगा.

# मिट्टी के दीये की जमकर बिक्री कारीगरों के चेहरों पर लौटी रौनक

शुभम संदेश। गुमला

दीपों का पर्व दीपावली गुमला सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में पूरे हर्षोल्लास और धार्मिक श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है. रविवार को छोटी दीपावली के साथ ही दीपोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गईं. सोमवार को पूरे गुमला क्षेत्र में दीपों की जगमगाहट देखने को मिलेगी. बाजारों में रविवार को दिनभर रौनक देखने को मिली, लोगों ने जमकर खरीदारी की. इस मौके पर मिट्टी के दीयों और करंज तेल की सबसे अधिक मांग रही. स्थानीय बाजार में करंज का तेल 140 से 160 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिका. वहीं, पारंपरिक मिट्टी के दीये 200 से 250 रुपये प्रति सैंकड़ा के भाव से बिकते देखे गए. इसके अलावा मिट्टी से बने खिलौनों की भी अच्छी बिक्री हुई, जिनकी कीमत 20 रुपये से लेकर 100 रुपये तक रही. दीपावली पर घरों की सफाई और सजावट का विशेष महत्व होता है. मान्यता है कि इस दिन मां लक्ष्मी और भगवान कुबेर अपने भक्तों के घर पधारते हैं, इसलिए लोग श्रद्धा, आस्था और पवित्रता के साथ अपने घरों की सफाई करते हैं तथा उन्हें दीपों और रंगीन लाइटों से सजाते हैं. साफ-सुथरे और सुंदर स्थान पर ही मां लक्ष्मी का वास होता है, यह विश्वास लोगों में आज भी उतना ही मजबूत है.

शहर के प्रमुख मार्गों, मोहल्लों और गलियों को रंगीन रोशनी से सजाया गया है. जगह-जगह काली पूजा और लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियों की स्थापना कर पूजा पंडाल सजाए जा रहे हैं. रविवार को सजावट के सामान, दीये, मूर्तियां और पूजा सामग्री खरीदने के लिए बाजारों में भारी भीड़ उमड़ी रही. पर्यावरण और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी करंज तेल के दीयों का विशेष महत्व है. कहा जाता है कि बरसात के मौसम के बाद वातावरण में कीट-पतंगों की संख्या बढ़ जाती है, जिन्हें करंज तेल के दीये जलाकर नियंत्रित किया जा सकता है. करंज एक औषधीय पौधा है और इसके तेल से बने दीये वातावरण को शुद्ध करते हैं. यही कारण है कि दीपावली पर करंज तेल से दीया जलाने की परंपरा आज भी जीवित है. इस बार दीयों की जबरदस्त बिक्री ने मिट्टी कारीगरों के चेहरों पर मुस्कान ला दी है. उनकी मेहनत रंग लाई और उन्हें आर्थिक रूप से राहत मिली है. दीपावली का यह पर्व न केवल रोशनी और खुशियों का है, बल्कि लोक कला और परंपराओं के संरक्षण का भी प्रतीक बनकर सामने आया है.

### छठ पूजा को लेकर बंधु तिर्की ने घाटों का निरीक्षण किया

**इटकी।** लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा को लेकर इटकी में रविवार को पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया. इस दौरान उन्होंने घाटों की साफ-सफाई, बिजली व्यवस्था और सुरक्षा इंतजामों की बारीकी से समीक्षा की. बंधु तिर्की ने इटकी सीओ मो. अनीस को निर्देश दिया कि छठ व्रतियों की सुविधा के लिए घाटों पर पोर्टेबल चेंजिंग रूम, आम की लकड़ी, दूध और अन्य जरूरी सामान की समुचित व्यवस्था की जाए. उन्होंने कहा कि छठ पर्व आस्था का पर्व है और इसमें श्रद्धालुओं की सुविधा सर्वोपरि होनी चाहिए. निरीक्षण के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता भी मौजूद रहे. मौके पर अजीत केशरी, कामेश बर्मन, अहमद अंसारी, अबरार इमाम, शिशु गोप, राजेन किस्पोट्टा, अजय गोप सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे. बंधु तिर्की ने सभी अधिकारियों और स्थानीय लोगों से अपील की कि छठ पूजा को शांतिपूर्ण और भव्य तरीके से संपन्न कराने में सहयोग करें.

### ब्राउन शुगर के साथ युवक गिरफ्तार, पुलिस ने भेजा जेल

**गुमला।** पुलिस ने रविवार को मेन रोड स्थित एक घड़ी दुकान से दुकान संचालक मो.अरसाद अंसारी को 4.06 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार अरसद को पुलिस ने रविवार की शाम को जेल भेज दिया. अनुमंडल पदाधिकारी सुरेश प्रसाद यादव ने बताया कि गुमला के मेन रोड के एक घड़ी दुकान में ब्राउन शुगर की बिक्री की पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी. वरीय अधिकारी के निर्देश पर छापामारी की गई. जिसमें पुलिस को इन्वार्टर के पास छुपा कर रखे सात पुड़िया सहित कुल 4.06 ग्राम ब्राउन शुगर और एक वेट मशीन बरामद किया. दुकानदार अरसद अंसारी को विधिवत गिरफ्तार किया गया और जेल भेज दिया गयाङ एसडीपीओ ने बताया कि नशीले मादक पदार्थों के खरीद बिक्री पर पुलिस का अभियान लगातार जारी रहेगा. गिरफ्तार अरसाद के पास कहां से ब्राउन शुगर आया और कहां बेचता है आदि की पूछताछ चल रही है.

### छठ पूजा की तैयारियों को लेकर फन कैसल पार्क में बैठक

**रातू।** आगामी छठ पूजा को भव्य और उत्साहपूर्ण बनाने के लिए रातू छठ पूजा समिति, रूनियर बनिया समाज, नर नारायण सेवा संस्थान रातू, देवी मंडप दुर्गा पूजा समिति, श्री राम भक्त मंडल छठ पूजा समिति एवं इतवार बाजार के सदस्यों ने फन कैसल पार्क में एक महत्वपूर्ण बैठक की. नितेशनाथ शाहदेव की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में सभी संगठनों ने मिलकर इस वर्ष छठ पूजा को बेहतर और यादगार बनाने के लिए अपनी तैयारियों को तेज करने पर जोर दिया. नितेशनाथ शाहदेव ने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे छठ पूजा की तैयारी में पूर्ण जुट जाएं ताकि इस वर्ष का आयोजन सफलतापूर्वक और भव्य रूप से संपन्न हो सके. बैठक में सामूहिक रूप से आयोजन की योजना और विभिन्न जिम्मेदारियों का बंटवारा भी किया गया. समिति के सदस्यों ने इस पर्व को पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार उत्साह के साथ मनाने का संकल्प लिया. इस प्रकार, रातू में छठ पूजा को लेकर चल रही तैयारियों ने पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल पैदा कर दिया है.

### अवैध खनन पर जिला प्रशासन व खनन विभाग की संयुक्त टीम की बड़ी कार्रवाई

# 12 टन बॉक्साइट जब्त, ट्रक सीज

शुभम संदेश। गुमला

जिले में अवैध खनन एवं खनिज भंडारण पर नकेल कसने के लिए जिला प्रशासन, पुलिस और खनन विभाग की संयुक्त टीम ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की. बिशुनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत सेरका पंचायत के हाडुप माइंस एरिया में टीम ने छापेमारी कर लगभग 12 टन अवैध बॉक्साइट जब्त किया. अधिकारियों ने मौके पर अवैध उत्खनन और भंडारण स्थल का औचक निरीक्षण किया, जहां किसी प्रकार की वैध अनुमति या अनुज्ञप्ति नहीं पाई गई. टीम ने महुवापाठ एवं हाडुप क्षेत्र में संदिग्ध स्थानों पर गहन जांच की. पूछताछ के दौरान स्थानीय लोगों ने किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं बताया, जिससे साफ है कि यह कार्य पूरी तरह गुप्त रूप से संचालित किया जा रहा था. जब्त किए गए बॉक्साइट को सील कर दिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है. जिला खनन पदाधिकारी ने बताया कि यह पूरा भंडारण अवैध रूप से किया गया था. उन्होंने कहा कि बिना वैध पट्टा या अनुज्ञप्ति के खनन एवं भंडारण करना एक गंभीर अपराध है. यह खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1957 की धारा 4 एवं 21 तथा झारखंड खनिज (अवैध खनन, परिवहन और भंडारण की रोकथाम) नियमावली, 2017 के नियम 7 एवं 9 के अंतर्गत दंडनीय है. उन्होंने यह भी बताया कि इस अवैध कार्य में संलिप्त अज्ञात लोगों के विरुद्ध शीघ्र प्राथमिकी दर्ज कर विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी. इसी अभियान के क्रम में वन विभाग की टीम ने गुरदरी चौरापाठ वन क्षेत्र में छापेमारी कर बॉक्साइट से लदे एक ट्रक को भी जब्त किया. विभाग द्वारा इस मामले में त्वरित कार्रवाई की गई है और जांच जारी है. अधिकारियों का कहना है कि अवैध खनन न केवल सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि यह राष्ट्रीय संपदा और पर्यावरण के लिए भी गंभीर खतरा है. जिला प्रशासन द्वारा ऐसी कार्रवाइयों से यह स्पष्ट संदेश दिया गया है कि अवैध खनन किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. प्रशासन ने आम जनता से भी अपील की है कि वे इस प्रकार की गतिविधियों की जानकारी प्रशासन को तुरंत दें, ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके.

### बांसडीह घाटी में ऑटो के पलटने से महिला की मौत, टेंपो में सवार नौ घायल

**गुमला।** सदर थाना क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार को बांसडीह घाटी में दर्दनाक सड़क हादसे में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि टेंपो में सवार नौ अन्य लोग घायल हो गए. यह हादसा दोपहर लगभग 3 बजे उस समय हुआ, जब गुमला की ओर जा रहा एक टेंपो पीछे से आए एक अज्ञात वाहन की टक्कर से अनियंत्रित होकर पलट गया. हादसे में मृत महिला की पहचान हर्रा डीपाटोली निवासी सुकरी देवी (40) के रूप में हुई है. वहीं घायल लोगों में बेनेदिक्ता लकड़ा (38), जय माला (10), दिनेश उरांव (25), पवन उरांव (22), जानकी देवी (40), बालमीत कुमारी (21), बिनसरी उरांव (50), अमन लकड़ा (13) और कमला देवी (40) शामिल हैं.सभी घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से तत्काल सदर अस्पताल गुमला पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है. घटना की सूचना मिलने पर गुमला पुलिस भी अस्पताल पहुंची और मृतका के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम कराया गया. इसके उपरांत शव परिजनों को सौंप दिया गया.घटना के संबंध में घायलों ने बताया कि दीपावली और गुमला का साप्ताहिक हाट एक ही दिन पड़ने के कारण वे सभी गुमला बाजार में खरीदारी के लिए घर से निकले थे. जैसे ही टेंपो बांसडीह घाटी पहुंचा, पीछे से एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने टेंपो को जोरदार टक्कर मार दी.

### पेट्रोल पंप पास दो बाइक में टक्कर, एक की मौत

**गुमला।** घाघरा थाना क्षेत्र के देवाकी पेट्रोल पंप के समीप शनिवार की अपराह्न 3 बजे दो बाइक में टक्कर हो गई.घटना में सरंगो चटकपुर निवासी 25 वर्षीय सुनीत भगत पिता वीरेंद्र भगत की मौत हो गई. वहीं बाइक में सवार ईटकीरी निवासी 15 वर्षीय करम पाल उरांव सरंगों नवा टोली निवासी अमन तुरी और मोहित तुरी गंभीर रूप से घायल हो गए. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाघरा में इलाज के उपरांत चारों को सदर अस्पताल लाया गया.

### काली पूजनोत्सव में 1101 महिलाएं करेंगी महाआरती

**रांची।** हरमू रोड स्थित काली पूजा स्वागत समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मां काली का भव्य पूजनोत्सव आयोजित किया जा रहा है. यह आयोजन 20 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक बड़े श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा. विशेष आकर्षण 21 अक्टूबर, मंगलवार को संध्या 7 बजे से होने वाली ₹महाआरतीर होगी, जिसमें 1101 महिलाएं एक साथ मां काली की आरती करेंगी. इस महाआरती का उद्देश्य समाज को नशामुक्ति की ओर प्रेरित करना है, जिसके तहत आयोजन का संकल्प है आओं नशा मुक्त समाज बनाएं. समिति ने सभी श्रद्धालुओं से इस शुभ अवसर पर शामिल होने की अपील की है.

### उत्खनन से बने गड्ढे के पानी में डूबने से किशोर की मौत

**गुमला।** हुसैन नगर में किराए के मकान पर रह रहे मीर रेजाबुल का 12 वर्षीय किशोर अतीफ मीर की पत्थर खनन के लिए खोदे गए गड्ढे के पानी में डूबने से मौत हो गई. घटना शनिवार पराह्न की है. पुलिस और ग्रामीणों के सहयोग से अतीफ का शव रविवार सुबह बरामद किया गया. गुमला सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने शव को परिजनों को सौंप दिया. जानकारी के अनुसार अतीफ अपने तीन - चार दोस्तों के साथ घूमने के लिए निकला था. वे सभी घूमते हुए खनन क्षेत्र में पहुंच गए. खनन से हुए गड्ढे में बने तालाब में सभी मस्ती करने लगे तभी अतीफ गहरे पानी की ओर चला गया और देखते ही देखते डूब गया. अतीफ को डूबते देख अन्य ने शोर मचाया और घटना स्थल से हुसैन नगर तक अफरा तफरी मच गई.

### अनगड़ा के हेसल टोल गेट पर ग्रामीणों का प्रदर्शन

**रांची।** जिले के अनगड़ा प्रखंड स्थित हेसल तुरुप टोल गेट पर रविवार को स्थानीय ग्रामीणों का आक्रोश फूट पड़ा. ग्रामीणों ने टोल प्रबंधन पर मनमानी और अवैध वसूली का आरोप लगाते हुए जोरदार विरोध प्रदर्शन किया. प्रदर्शनकारियों का कहना था कि उन्होंने सड़क निर्माण के लिए अपनी जमीन दी थी, और अब उसी सड़क पर चलने के लिए उनसे शुल्क वसूला जा रहा है, जो अन्यायपूर्ण है. ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि टोल टैक्स शुरू होते समय स्थानीय विधायक और अधिकारियों ने यह आश्वासन दिया था कि 10 किलोमीटर के दायरे में रहने वाले लोगों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा और दोनों ओर की लेन उनके लिए खुली रहेगी. लेकिन अब न तो पास बन रहे हैं और न ही उन्हें टोल फ्री एंट्री मिल रही है. इस विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व महमूद अंसारी और मिन्हाज अंसारी ने किया. मौके पर कई अन्य ग्रामीण भी उपस्थित थे.

### 12 साल से फरार 376 का स्थायी वारंटी गिरफ्तार

**गुमला।** चैनपुर थाना ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए 12 वर्षों से फरार चल रहे एक स्थायी वारंटी को गिरफ्तार कर लिया है. गिरफ्तार वारंटी का नाम संजय खलखो है, जो बलात्कार, छेड़छाड़ और अन्य संगीन मामलों में आरोपी था. जानकारी के अनुसार, संजय खलखो, उम्र लगभग 38 वर्ष, पिता- स्वर्गीय मार्टिन खलखो, ग्राम- कोन्केल, थाना- चैनपुर का रहने वाला है. उसके खिलाफ चैनपुर थाना में 376 व अन्य धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था. आरोपी अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए पिछले 12 सालों से लगातार फरार चल रहा था, जिसके बाद न्यायालय ने उसके खिलाफ स्थायी वारंट जारी किया था.चैनपुर थाना पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर शनिवार की शाम 6 बजे संजय खलखो को उसके गाँव से गिरफ्तार कर लिया गया.

**हादसा** साड़ी मशीन में फंसने से महिला की दर्दनाक मौत, तीन मासूम बच्चे हुए अनाथ

# प्रशासन ने जताया शोक, सहायता का दिया भरोसा

शुभम संदेश। लोहरदगा

लोहरदगा जिले के कुड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत सुदूरवर्ती खम्हार बहेरा भंडार गांव में रविवार सुबह एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई. अपने तीन मासूम बच्चों के लिए चावल जुटाने निकली 37 वर्षीय पुनम देवी की धान छटाई के दौरान मौत हो गई. महिला की साड़ी मशीन में फंस गई जिससे उनका गला कस गया और उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया. यह हादसा सुबह करीब 8 बजे का बताया जा रहा है. पुनम देवी अपने 13 वर्षीय बेटे अमित गंझू के साथ गांव के ही अशोक गंझू के घर धान छटाई कराने गई थीं. घर में खाने को चावल नहीं था, इसीलिए वे धान लेकर मशीन पर पहुंची थीं. धान

छटाई के दौरान अचानक पुनम देवी की साड़ी मशीन के बेल्ट में फंस गई. बेल्ट ने कुछ ही सेकंड में उनका गला कस दिया. बेटा अमित मां को बचाने के लिए चिल्लाया और आसपास के लोग दौड़े, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. महिला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई.

इस हृदय विदारक हादसे के बाद गांव में मातम पसर गया. पुनम देवी के पति सुरेश गंझू का निधन पहले ही हो चुका था. अब उनके तीन बच्चे अमित (13 वर्ष), चांदमुनी कुमारी (10 वर्ष) और अमरीत गंझू (4 वर्ष) पूरी तरह अनाथ हो गए हैं. मां की मौत के बाद बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है और गांव वालों की आंखें नम हैं. हर कोई यही कह रहा है कि किस्मत ने इन मासूमों के सिर से मां-बाप दोनों का साया छीन लिया. घटना की सूचना मिलते ही कुड़ थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए लोहरदगा सदर अस्पताल भेजा गया. इस हादसे ने एक बार फिर ग्रामीण क्षेत्रों में धान छटाई मशीनों की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर दिया है. यदि थोड़ी सी सावधानी बरती जाती, तो शायद यह अनहोनी टाली जा सकती थी. घटना के बाद जिला और प्रखंड प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लिया है. उपायुक्त डॉ. ताराचंद के निर्देश पर बीडीओ अरुण उरांव सदर अस्पताल पहुंचे और बच्चों के भविष्य को लेकर निर्देश दिए. बीडीओ ने बताया कि बड़ी बेटी को सावित्रीबाई फुले योजना का लाभ दिलाया जाएगा और उसका नामांकन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में कराया जाएगा. दो छोटे बच्चों को भी सरकारी विद्यालयों में नामांकित किया जाएगा. प्रशासन की ओर से फिलहाल पारिवारिक लाभ योजना के तहत बच्चों को 20 हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी गई है.

# एक्सआईपीटी में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

**रांची।** जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ पोलिटेक्नीक एंड टेक्नोलॉजी (एक्सआईपीटी), नामकुम, रांची में इंडक्शन कार्यक्रम 2025 का आयोजन उत्साह और प्रेरणा के साथ किया गया. इस कार्यक्रम के माध्यम से नव प्रवेशित विद्यार्थियों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया. कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई एक्सआईपीटी, कोऑर्डिनेटर, डॉ अशोक कुमार सांडिल एसजे ने, जिनके प्रेरक संबोधन ने विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण और उत्कृष्टता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया. सत्र के विशेष वक्ता, ब्रदर अनिल नाग ने छात्रों को अपनी पढ़ाई के दौरान केंद्रित, अनुशासित और मूल्य- उन्मुख बने रहने के लिए प्रेरित किया.

प्रेरण कार्यक्रम के दौरान, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और प्रेरक वक्ता, अतुल गेरा, जिन्हें 'झारखंड ब्लड मैनङ्क के रूप में जाना जाता है, ने अपनी प्रेरक यात्रा साझा की और स्वैच्छिक रक्तदान को मानवता और सामाजिक जिम्मेदारी के कार्य के रूप में महत्व दिया. इसके बाद साइबर पीस फाउंडेशन की मीडिया और साइबर जागरूकता प्रोफेशनल, शुभांगी शिफा ने एक विशेष सत्र आयोजित किया, जिसमें उन्होंने साइबर शांति और सामाजिक जागरूकता पर बात की, जिसमें डिजिटल सुरक्षा बनाए रखने, गलत सूचना को रोकने और प्रौद्योगिकी के सकारात्मक उपयोग को बढ़ावा देने में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया.

मंथन

## कैलाश यात्रा पर जानेवालों की संख्या में हो रही बढ़ोतरी

कैलाश मानसरोवर यात्रा भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राचीन और पवित्र तीर्थयात्रा है, जिसे हिन्दू, बौद्ध, जैन और बोन धर्म के अनुयायी अत्यंत श्रद्धा से करते हैं. यह यात्रा तिब्बत में स्थित पवित्र कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील तक की होती है, जिसे भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है. हाल के वर्षों में इस यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी देखी जा रही है.इस बढ़ोत्तरी के कई कारण हैं. सबसे प्रमुख कारण है – बेहतर परिवहन और संचार सुविधाएं. पहले जहाँ यह यात्रा अत्यंत कठिन और जोखिम भरी मानी जाती थी, वहीं अब सरकार द्वारा सड़कों, हेलीकॉप्टर सेवाओं और आधारभूत ढांचे में सुधार के कारण यह अधिक सुगम हो गई है. इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर जानकारी की सहज उपलब्धता ने भी लोगों को प्रेरित किया है.आध्यात्मिक जागरूकता और पर्यटन की बढ़ती रुचि भी एक बड़ा कारण है. आज की तेज़-तर्रार जीवनशैली से लोग मानसिक शांति और आत्मिक अनुभव की तलाश में हैं, और कैलाश यात्रा उन्हें यह अवसर प्रदान करती है. साथ ही, सोशल मीडिया और ब्लॉग्स के माध्यम से लोगों के अनुभव साझा होने से भी अन्य लोग प्रेरित हो रहे हैं.हालाँकि, बढ़ती संख्या के साथ पर्यावरणीय और प्रशासनिक चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं. इसलिए यह आवश्यक है कि यात्रा को सुव्यवस्थित, सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल बनाया जाए, ताकि यह पवित्र तीर्थ आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रह सके.

नजरिया

## घाटशिला में जेएलकेएम की इंट्री से त्रिकोणीय मुकाबला

घाटशिला विधानसभा सीट पर उपचुनाव की तैयारी तेजी से चल रही है. इस सीट पर उपचुनाव इसलिए हो रहा है क्योंकि पूर्व विधायक एवं शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का निधन हो गया था, जिससे यह सीट खाली हो गई. इसी माहौल में विधायक जयराम महतो की चर्चा बढ़ गई है. उन्होंने अपनी नई पार्टी जेएलकेएम के माध्यम से झारखंड की राजनीति में हलचल ला दी है. बताते चलें कि जयराम महतो हमेशा स्थानीय भाषा संस्कृति, पुराने खतान (भूमि अभिलेख) के आधार पर रोजगार, और "झारखंडी" पहचान को मजबूत करने की बात हमेशा करते रहते हैं. जिससे उनकी एक अलग पहचान बन गयी है. यदि जयराम महतो की परिपक्वता व राजनीतिक सक्रियता को ध्यान में लिया जाए, तो उनकी उपस्थिति घाटशिला उपचुनाव में महत्त्वपूर्ण हो सकती है. सबसे पहले, उनकी किरण सी उभरती छवि ने अंदरूनी राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित किया है—विशेष रूप से कुड़मी/महतों समुदाय के भीतर. दूसरा, उनकी नई पार्टी तथा सामाजिक भाषाई चेतना ने पुराने दो प्रमुख दलों झामुमो और बीजेपी के बीच का वोट बैंक कटवाने की संभावना खड़ी कर दी है. हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि जयराम महतो ने सीधे घाटशिला सीट पर अभ्यर्थी के रूप में नामांकन किया है या नहीं. मीडिया रिपोर्ट्स में मुख्य मुकाबला जेएमएम और बीजेपी के बीच बताया गया है. फिर भी, उनसे संबंधित राजनीतिक चर्चाएं और वोट बैंक में बदलाव के संकेत, घाटशिला के समीकरणों को प्रभावित कर सकते हैं.

# आदिवासी समाज का दीपावली उत्सव

डॉ मयंक मुरारी

झारखंड के आदिवासी समाज में दीपावली, जिसे सोहराय पर्व के रूप में मनाया जाता है, एक कृषि और पशुधन उत्सव है जो दीपावली के बाद आता है.झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में दिवाली का जश्न एकदम शांत और सौम्य तरीके से मनाया जाता है. झारखंड में रौशनी के इस त्यौहार को सोहराई के नाम से जाना जाता है. सोहराई के मौके पर झारखंड के इन इलाकों में दैनिक जीवन से जुड़ी चीजों की पूजा की जाती है. धान की फसल और पशुओं, जो कि आदिवासी लोगों के जीवन का मुख्य हिस्सा है, को भी पूजा जाता है. झारखंड के आदिवासी समुदाय की औरतें घरों की मिट्टी से पुताई करती हैं जिसके बाद दीवारों पर तरह-तरह की चित्रकारी की जाती है. ये सभी चीजें खास आदिवासी समाज की परंपरा और संस्कृति से जुड़ी होती हैं. इसके अलावा घर के पालतू जानवरों की भी पूजा की जाती है.

**झारखंड में रौशनी के इस त्योहार को सोहराई के नाम से जाना जाता है.**

आदिवासी समाज के लिए कार्तिक आमवस्या का पर्व पशुओं के कल्याण एवं सेवा को समर्पित होता है. मुण्डा धार्मिक परम्परा में कार्तिक की अमावस्या जादू-टोना, नजर या अन्य मारक मंत्रों एवं शक्तियों को साधने वा सिद्ध करने कर सबसे उपयुक्त समय माना जाता है चूंकि संपूर्ण आदिवासी समाज का आर्थिक जीवन कृषि एवं उसके पशुधन पर आधारित है. वे जानते हैं कि पशु मारक शक्तियों के प्रति संवेदनशील होते हैं और अकारण बीमार पड़ते हैं तथा उनकी मृत्यु हो जाती है. अतः उन सभी सावधानियों का पहले से उपाय करने के लिए सहनाई का पर्व मनाता है.

आदिवासी परिवार का सदस्य इस दिन सुबह से ही उपवास रखता है और शाम को वह अपने पशुओं को एक जगह एकत्रित करता हैं. जिनके पास गोशाला होती है, वहां वे अपने पशुधन को एकत्रित करते हैं. उनके बीच दीया जला दिया जाता है. परिवार का मुख्या या घर की माताएं थाल में अरवा चावल लेकर आती है और सभी पर भरकर फेंकती है. इसे चावल-चुमावन की रस्म कहा जाता है. पशुओं को चूमने का माध्यम चावल का स्पर्श मान लिया जाता है. गोशाला के सामने गौडा-गोरिया को काला मुर्गा और हड़िया अर्पित किया जाता हैं. गौड़ा गोरिया को गोशाला का संरक्षक और जंगल का चरवाहा यानी वीर-मारा का स्वरूप माना जाता है. गौसा-गोरिया गोशाला के संरक्षक तथा जंगल में पशुओं को जंगली जानवरों एवं सर्प दंश से रक्षा करता है अपितु मार्ग में भटके पशुओं की भी देख-रेख करता है. दूसरे दिन प्रातः काल गृह-स्वामिनी जल से गाय, बैल, भैंस एवं बछडे के साफ करती है तथा उन पर चावल की पवित्र मंदिरा छिडकती है. भैंस के सींगों में घी, तथा गाय, बैल एवं सनी सोगों को तेल लगाया जाता है और उन्हें उबला हुआ चावल तथा उरद की दाल भर पेट खाने को दिया जाता है. चरने के भेजने के पहले पशुओं को गीले गेंदे फुलों से सजाया जाता है. उरांव में हिन्दुओं की दीपावली की तरह कच्चे मिट्टी के दिए में करंज का तेल भरकर गो-शाला. बरगढ़ा, रसोई घर आंगन के वृक्ष, घर के आगे-पीछे सभी कमरों ताखों तथा द्वार पर कार्तिक अमावस्या की रात प्रारम्भ होते ही जला दिया जाता है. वे करंज के तेल से दीये जलाते हैं, पारंपरिक पकवान जैसे मंडा रोटी और ढोकला बनाते हैं, और पशुओं को सजाते हैं. सोहराय पर्व में पारंपरिक नृत्य और गीत भी शामिल होते हैं, जो समुदाय के बीच एकता और उल्लास का माहौल बनाते हैं. यह पर्व फसल कटाई के बाद मनाया जाता है और गोवर्धन पूजा के साथ मेल खाता है. धनतेरस पर घर की लिपाई-पुताई और चावल के आटे, हल्दी, और गेरू से कलाकृतियां बनाई जाती हैं! पर्यावरण की शुद्धि और कीटाणुओं को दूर करने के लिए करंज के तेल से दीये जलाए जाते हैं. दीपावली के दूसरे दिन पशुओं को नहलाकर सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है. पारंपरिक पकवान जैसे मंडा रोटी, ढोकला, धुस्का, और पुआ बनाए जाते हैं और खुद खाने के साथ-साथ पशुओं को भी खिलाए जाते हैं. ग्रामीण पारंपरिक नृत्य करते हैं और मांदर की थाप पर झूमते हैं. कुछ गांवों में, जैसे कि कुड़मी समुदाय में, पशुओं के सम्मान में डाइर मेला भी लगता है, जिसमें पारंपरिक नृत्य और गीत होते हैं, हालाँकि यह प्रथा धीरे-धीरे कम हो रही है.

संताली समाज में यह पर्व प्रकृति, कृषि और पशुधन के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए है, जो संथाल समुदाय की आजीविका का आधार हैं. पहला दिन की शुरूआत गढ़ पूजा के साथ होती है, जिसमें देवी-देवताओं की पूजा और मुर्गे की बलि दी जाती है. दूसरा दिन मवेशियों को स्नान कराया जाता है, उनके सींगों को सजाया जाता है और पूजा की जाती है. तीसरा दिन मवेशियों को मैदान में चरने और घूमने के लिए खुला छोड़ दिया जाता है. चैथा और पाँचवाँ दिन में घर-घर जाकर नृत्य (जाजले पूजा) किया जाता है और अनाज संग्रह किया जाता है. महाराष्ट्र में वारली जनजातियों के लिए दिवाली, मानसून के आगमन के बाद पहली बार पांच फसलों - ककड़ी, नया चावल, जायफल, लोबिया और करोंदे किशमिश का सेवन करके मनाई जाती है. वारली समुदाय के लोग इन फसलों को मानसून के दौरान फलने-फूलने देते हैं और पेड़ों, फूलों और फलों की पूजा करने के बाद इनका सेवन शुरू करते हैं. दरअसल, समुदाय की महिलाएं दिवाली की इन प्रार्थनाओं से पहले अपने बालों को फूलों से सजाने से परहेज करती हैं. छत्तीसगढ़ के बस्तर में धान कटाई से इस त्यौहार की शुरुआत होती है. जब धान पूरी तरह से पककर तैयार हो जाता है तो इसकी खुशी में आदिवासी और यहां के रहने वाले किसान दियारी का त्यौहार मनाते हैं. वर्तमान में भी बस्तर के ग्रामीण अंचलों में दियारी त्यौहार की रौनक देखने को मिल रही है.आदिवासियों के द्वारा गांव-गांव में मनाई जाने वाली मंडई मेले और त्यौहार भी खास तरह की होती है. बस्तर में आदिवासी एक ऐसा ही त्यौहार मनाते हैं, जो लगभग डेढ़ महीने तक चलता है और हर गांव में अलग-अलग दिनों में मनाया जाता है. खास बात ये कि धान कटाई से शुरू होने वाला आदिवासियों की यह त्यौहार जनवरी के आखिरी दिनों तक चलता है. बिहार के थारु समुदाय के लोग दीपावली पर पारंपरिक जलस्त्रोतों को सहेजने व उनके संरक्षण के बारे में नयी पीढ़ी को जानकारी देते हुए कुओं की पूजा करते हैं. कुओं की पूजा करने के साथ ही जल संरक्षण के बारे में जानकारी देते हैं. इस समुदाय के लोग दीपावली को दियराई व उसके अगले दिन को सोहराई के नाम से पुकारते हैं. दिवाली के दिन गांव के गुमस्ता के साथ बुजुर्ग व बच्चे इकट्ठा होकर गांव से बाहर जाते हैं तथा मिट्टी के ऊंचे टीले पर सबसे पहले दीप जलाते हैं. वहां से आकर कुआं पर दीया जलाकर दियराई की शुरुआत की जाती है.

आज का इतिहास

**1568 :** अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया.
**1740 :** मारिया थेरेसा आस्ट्रिया, हंगरी और बोहमिया की शासक बनी.
**1774 :** कोलकाता भारत की राजधानी बनी.
**1803 :** अमेरिकी सीनेट ने फ्रांस से लुइसियाना क्षेत्र की खरीद को मंजूरी दी, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका का आकार दोगुना हो गया.
**1822 :** लंदन संडे टाइम्स का पहला अंक प्रकाशित.
**1880 :** एम्सटर्डम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना.
**1904 :** चिली और बोलविया ने शांति और मित्रता की संधि पर हस्ताक्षकर किया.
**1905 :** रूस में 11 दिन तक चले ऐतिहासिक हड़ताल की शुरुआत हुई.
**1946 :** वियतनाम की डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन सरकार ने 20 अक्टूबर को वियतनाम महिला दिवस के रूप में घोषित किया.

## राजा मुचुकुंद का धर्मपरायण शासन और एकादशी व्रत

चिंतन

रमा एकादशी का व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है. यह एकादशी भगवान विष्णु के साथ-साथ माता लक्ष्मी (जिनका एक नाम 'रमा' भी है) को समर्पित है, इसलिए इसे अत्यंत पुण्यदायिनी माना जाता है. इस व्रत की कथा का वर्णन स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को सुनाया था, जिसका उल्लेख पौराणिक ग्रंथों में मिलता है. यह कथा बताती है कि एकादशी व्रत में श्रद्धा और नियमों का पालन करने वाले व्यक्ति को मृत्यु के बाद भी उत्तम गति और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है. प्राचीन काल में मुचुकुंद नाम के एक धर्मात्मा और सत्यनिष्ठ राजा थे. उनकी मित्रता इंद्र, यम, कुबेर, वरुण और विभीषण जैसे देवताओं और महापुरुषों से थी.

राजा मुचुकुंद स्वयं एकादशी का व्रत पूरी निष्ठा से करते थे और अपने राज्य की प्रजा के लिए भी एकादशी का व्रत करना अनिवार्य किया हुआ था. उनकी एक पुत्री थी, जिसका नाम चंद्रभागा था. राजा ने अपनी पुत्री का विवाह राजा चंद्रसेन के पुत्र शोभन से किया. जब पहली बार एकादशी का व्रत आया, तो चंद्रभागा के पति शोभन ने भी एकादशी का व्रत रखा. परंतु शोभन शारीरिक रूप से दुर्बल थे और वह एकादशी की कठोरता सहन नहीं कर पाए. व्रत की निर्जला प्रकृति के कारण अत्यधिक भूख और प्यास से व्याकुल होकर उनकी मृत्यु हो गई. पति की मृत्यु से चंद्रभागा बहुत दुखी हुईं. राजा मुचुकुंद ने भी शोक किया, लेकिन उन्होंने अपनी पुत्री को सांत्वना दी कि शोभन को एकादशी व्रत के पुण्य से सद्गति प्राप्त हुई होगी. इस घटना के बाद, शोभन ने एकादशी व्रत के प्रभाव से मंदराचल पर्वत पर देवताओं की नगरी प्राप्त की, जहां वह अप्सराओं से घिरे वैभवशाली जीवन में रहने लगे. एक बार, राजा मुचुकुंद मंदराचल पर्वत पर पहुंचे, जहां उन्होंने अपने मृत दामाद शोभन को दिव्य शरीर में जीवित देखा. यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ. शोभन ने उन्हें बताया कि यह सब एकादशी व्रत के पुण्य का फल है, लेकिन उनकी यह नगरी अस्थिर है. राजा ने वापस आकर यह बात चंद्रभागा को बताई. चंद्रभागा अपने पति के पास जाने के लिए उत्सुक हो उठीं. वह ऋषि वामदेव के आश्रम गईं, जिन्होंने चंद्रभागा की व्रत निष्ठा को देखकर उनका अभिषेक किया.

## इंडिया पर ट्रेंडिंग

1. #INDvsAUS 32K
2. #CelebrateWithGreenlam
3. #HisenseIndia
4. WE WATCH BB FOR BASEER 227K
5. #13YearsOfSidharthMalhotra
6. #2YearsOfLeo 10K
7. Harleen
8. मदन शाह
9. SHEHBAZ SPARKS BB19 13K
10. संजय यादव

# बहुरंग

## सनी देओल के जन्मदिन पर बड़ी घोषणा 'गबरू' में दमदार अंदाज में नजर आएंगे

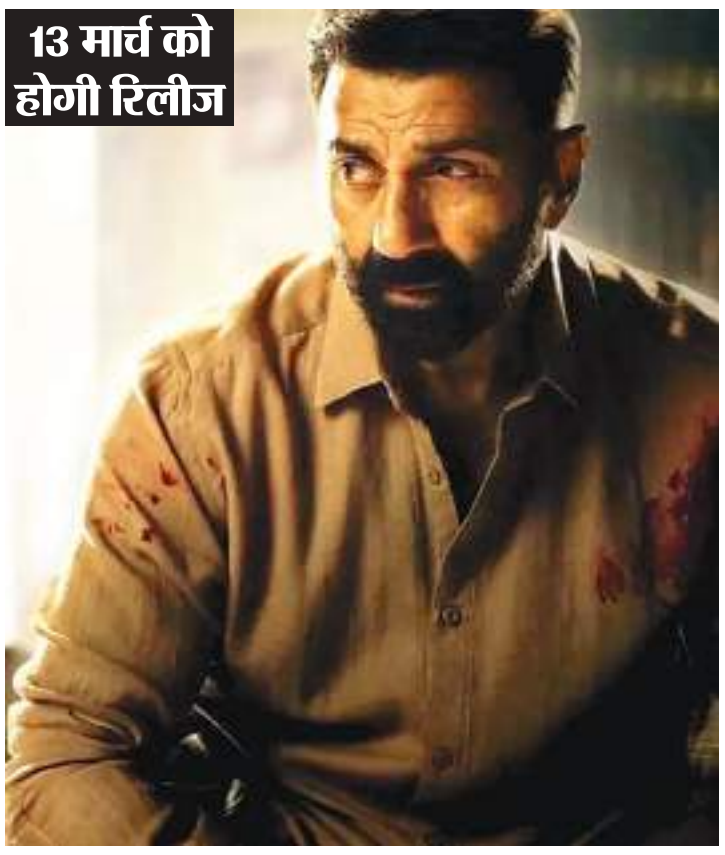

**13 मार्च को होगी रिलीज**

बॉलीवुड के एक्शन हीरो सनी देओल रविवार, 19 अक्तूबर को अपना 68वां जन्मदिन मना रहे हैं. इस खास मौके पर उनके फैंस को बड़ा तोहफा मिला है. अभिनेता की अगली फिल्म 'गबरू' की आधिकारिक घोषणा हो गई है और इसका फर्स्ट लुक पोस्टर भी जारी कर दिया गया है. सनी देओल इस पोस्टर में एक दमदार और प्रभावशाली अंदाज में नजर आ रहे हैं, जो उनके प्रशंसकों के लिए किसी सरप्राइज से कम नहीं है. 'गबरू' को शशांक उदापुरकर ने लिखा और निर्देशित किया है. फिल्म के फर्स्ट लुक को साझा करते हुए सनी देओल ने इंस्टाग्राम पर लिखा, शक्ति वो नहीं है जो आप दिखाते हैं, शक्ति वो है जो आप करते हैं! आप सभी के प्यार और आशीर्वाद के लिए धन्यवाद. यहां आप सभी के लिए कुछ है जो इंतजार कर रहे हैं. उन्होंने आगे बताया कि 'गबरू' 13 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी. फिल्म को ओम छंगानी और विशाल राणा ने प्रोड्यूस किया है. इस फिल्म में मिथुन का संगीत होगा और सईद कादरी ने इसके गीत लिखे हैं. बताया जा रहा है कि फिल्म साहस, विवेक और करुणा की एक प्रेरणादायक कहानी होगी, जिसमें सनी देओल का किरदार मुख्य आकर्षण रहेगा. सनी देओल के पास इस समय कई बड़े प्रोजेक्ट्स लाइन में हैं. वह जल्द ही 'बॉर्डर 2' में नजर आएंगे, जिसका निर्देशन अनुराग सिंह कर रहे हैं. यह एक युद्ध पर आधारित फिल्म है, जिसमें सनी देओल के साथ वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ और अहान शेट्टी भी नजर आएंगे. यह फिल्म 22 जनवरी 2026 को रिलीज होगी. इसके अलावा, सनी देओल अगले साल दिवाली पर रिलीज होने वाली नितेश तिवारी की 'रामायण पार्ट 1' का भी हिस्सा हैं, जो एक भव्य पौराणिक फिल्म होगी. 68 साल की उम्र में भी सनी देओल का जोश और एक्शन के प्रति जुनून देखते ही बनता है. 'गदर 2' की जबरदस्त सफलता के बाद अब 'गबरू' से फैंस को एक बार फिर बड़ी उम्मीदें हैं.

## 500 करोड़ रुपये के क्लब में शामिल हुई 'कांतारा चैप्टर 1'

**सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म ने अपने तीसरे शनिवार यानी 17 अक्टूबर को बॉक्स ऑफिस पर करीब 12.50 करोड़ रुपये की शानदार कमाई की. इससे एक दिन पहले 16 अक्टूबर को फिल्म का कलेक्शन 8.5 करोड़ रुपये रहा था.**

ऋषभ शेट्टी की फिल्म 'कांतारा चैप्टर 1' इस वक्त बॉक्स ऑफिस पर अपना दबदबा बनाए हुए है. 2 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई इस फिल्म ने 16 दिनों के भीतर जबरदस्त कमाई करते हुए आखिरकार 500 करोड़ रुपये के क्लब में एंट्री ले ली है. हालांकि कारोबारी दिनों में इसकी कमाई में थोड़ी गिरावट देखी गई थी, लेकिन वीकेंड पर फिल्म ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है. सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म ने अपने तीसरे शनिवार यानी 17 अक्टूबर को बॉक्स ऑफिस पर करीब 12.50 करोड़ रुपये की शानदार कमाई की. इससे एक दिन पहले 16 अक्टूबर को फिल्म का कलेक्शन 8.5 करोड़ रुपये रहा था. वीकेंड और दिवाली के माहौल का फायदा ऋषभ शेट्टी की फिल्म को साफ तौर पर मिल रहा है. कुल मिलाकर, रिलीज के 17वें दिन तक 'कांतारा चैप्टर 1' का कलेक्शन 506.25 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है. इस शानदार परफॉर्मेंस के साथ यह फिल्म साल 2025 की दूसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन चुकी है. अब इसकी नजरें विक्की कौशल की फिल्म 'छावा' के रिकॉर्ड पर टिकी हैं, जिसने अब तक 603 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है. वहीं, बॉक्स ऑफिस पर अब ऋषभ की फिल्म को कड़ी टक्कर देने आ रही है आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'थामा', जो 21 अक्टूबर (दिवाली) के मौके पर रिलीज होगी.

## राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

**मेष :** कुछ कार्य भी सिद्घ होंगे. व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है. प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा. अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी. महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा. शुभांक-2-6-8

**वृष :** कल का परिश्रम आज लाभ देगा. आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी. आगे बढने के अवसर लाभकारी सिद्घ हो रहे हैं. कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं. कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे. धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी. सुख-आनंद कारक समय है. शुभांक-1-3-5

**मिथुन :** सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा. लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी. कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी. सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी. मनोविनोद बढ़ेगे. व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है. कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा. आध्यात्मिक रुचि बनेगी. शुभांक-3-6-7

**कर्क :** कुछ पिछले संकट अब सिर उठा सकते हैं. निकट जनों के लिए अर्थव्यवस्था हेतु तोड़-तोड़ करना पड़ेगाा. अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे. विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्घ होंगे. कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा. धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी. शुभांक-6-8-9

**सिंह :** रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है. पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे. जोखिम से दूर रहना ही बुद्घिमानी होगी. शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे. किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहे. लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी. शुभांक-2-5-7

**कन्या :** ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं. समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है. कार्यक्षेत्र में आगे बढने में रुकावट का एहसास होगा. विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है. कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें. जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें. यात्रा का योग हैं. शुभांक-2-5-7

**तुला :** विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है. ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं. समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है. शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा. किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा. शुभांक-2-5-6

**वृश्चिक :**कुछ आर्थिक ड्क्षचताएं भी कम होगी. नियोजित धन से लाभ होने लगेगा. घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी. बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी. समय का सदुपयोग करें. साधन और भोग-विलास के प्रचुर अवसर होंगे. शुभांक-2-6-8

**धनु :** आलस्य का त्याग करें. परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए. कल का परिश्रम आज लाभ देगा. कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा. जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा. धन वृद्घि होगी. शुभांक-4-6-8

**मकर :** जोखिम से दूर रहना ही बुद्घिमानी होगी. महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी. बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा. पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए. शुभांक-5-7-9

**कुंभ :** लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें. शुभांक-4-6-7

**मीन :** अपनों का सहयोग प्राप्त होगा. पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी ड्क्षचता रहेगी. शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें. पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी. खान-पान में सावधानी रखें. व्यापार में प्रगति होगी. अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा. स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा. शुभांक-5-7-9

## हुमा कुरैशी रूमर्ड बॉयफ्रेंड रचित सिंह संग 'थामा' की स्क्रीनिंग में नजर आईं

मुंबई में शनिवार रात आयोजित हुई हॉरर कॉमेडी फिल्म 'थामा' की स्पेशल स्क्रीनिंग में कई फिल्मी सितारों ने शिरकत की, लेकिन सारी नजरें टिकी रहीं अभिनेत्री हुमा कुरैशी और उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड रचित सिंह पर. दोनों ने रेड कार्पेट पर साथ में एंट्री ली और हाथों में हाथ थामे कैमरे के सामने पोज दिए. इस दौरान दोनों की जबरदस्त केमिस्ट्री ने सभी का ध्यान खींचा और सोशल मीडिया पर एक बार फिर उनके रिलेशनशिप को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं. हुमा ने इस इवेंट में ब्लू कलर की साड़ी पहन रखी थी, जिसमें वे बेहद खूबसूरत नजर आईं. वहीं, रचित सिंह ब्लैक आउटफिट में काफी डैशिंग लगे. इस जोड़ी को साथ देखकर फैंस पूछ रहे हैं - क्या अब हुमा ने अपने रिश्ते को सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लिया है? गौरतलब है कि कुछ दिनों पहले यह अफवाहें तेज थीं कि हुमा ने रचित सिंह के साथ गुपचुप सगाई कर ली है. हालांकि, हुमा ने इन खबरों पर अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है. उन्होंने केवल सोशल मीडिया पर एक क्रिप्टिक पोस्ट साझा किया था, जिससे अटकलें और भी तेज हो गईं थीं. रचित सिंह पेशे से एक एक्टिंग कोच हैं और उन्होंने आलिया भट्ट, रणवीर सिंह और विक्की कौशल जैसे सितारों को ट्रेनिंग दी है. यह पहला मौका है जब सगाई की अटकलों के बाद हुमा और रचित को किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में एक साथ देखा गया. वर्क फ्रंट की बात करें तो हुमा कुरैशी इन दिनों अपनी चर्चित वेब सीरीज 'महारानी 4' को लेकर चर्चा में हैं. इस सीरीज का हाल ही में ट्रेलर रिलीज हुआ है, जिसे दर्शकों का जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला. वहीं, 'थामा' फिल्म ः21 अक्टूबर को दिवाली के खास मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है.

## इब्राहिम अली खान ने भाइयों तैमूर और जेह के साथ दिवाली की तस्वीर की साझा

दिवाली का जश्न पूरे जोश और उल्लास के साथ शुरू हो चुका है, और बॉलीवुड सितारे भी इस पावन पर्व को अपने खास अंदाज़ में मना रहे हैं. इसी कड़ी में सैफ अली खान के बेटे इब्राहिम अली खान ने एक बेहद प्यारी तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा की है, जिसमें वह अपने दोनों छोटे भाइयों—तैमूर अली खान और जहांगीर अली खान (जेह)—के साथ नजर आ रहे हैं. इब्राहिम ने यह फोटो रविवार को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट की. इस फोटो में तीनों भाई पारंपरिक परिधानों में दिवाली सेलिब्रेट करते दिख रहे हैं.

इब्राहिम ब्लैक शेरवानी में बेहद हैंडसम लग रहे हैं, जबकि तैमूर रेड कलर के कुर्ते में बिल्कुल राजकुमार की तरह दिख रहे हैं. सबसे छोटे भाई जेह की बात करें तो उन्होंने एक हाथ में बोतल पकड़ी हुई है और उनके चेहरे पर मासूमियत भरी शरारत देखने को मिल रही है. जेह की यही मासूमियत और एक्सप्रेशन लोगों का दिल जीत रही है. तस्वीर के साथ इब्राहिम ने कैप्शन में लिखा, तीनों भाई तीनों तबाही हैप्पी दिवाली. उनके इस मजेदार और प्यारे कैप्शन को भी लोगों ने खूब पसंद किया. तस्वीर वायरल होते ही फैंस और नेटिजंस ने कमेंट सेक्शन में प्यार बरसाना शुरू कर दिया. एक यूजर ने लिखा, तीनों क्यूटीज एक फ्रेम में. वहीं दूसरे ने मजेदार अंदाज में कहा, सैफ अली खान प्रो + सैफ अली खान लाइट + करीना कपूर खान प्रो. एक और यूजर ने कमेंट किया, क्यूटनेस ओवरलोडेड हियर. ः.

## दीपावली का शुभ मुहूर्त क्या है? कब पड़ रहा विशेष फलदायी संयोग

दिवाली यानी दीपावली का पर्व हर साल कार्तिक महीने में अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। हिंदू धर्म में दिवाली पर्व का बड़ा ही महत्व है। यह धनतेरस से शुरू होने वाले पंचदिवसीय पर्व का प्रमुख त्योहार है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान राम 14 वर्ष का वनवास पूरा करके जब अयोध्या लौटे थे तब उनके आगमन की खुशी में दीपावली का त्योहार मनाया गया था। वैसे दिवाली की कई अन्य कथाएं और मान्यताएं हैं। लेकिन सभी कथाओं और मान्यताओं में दिवाली को देवी लक्ष्मी की कृपा पाने का दिन बताया गया है।

### दिवाली कब है?

पंचांग की गणना के अनुसार अबकी बार कार्तिक अमावस्या 20 अक्टूबर 2025 को है। लक्ष्मी पूजा मुहूर्त 20 अक्टूबर 2025 को दोपहर 03 बजकर 44 मिनट पर शुरू होगी और अगले दिन 21 अक्टूबर को शाम 05 बजकर 54 मिनट पर समाप्त होगी.

### पूजा का क्या है नियम

दिवाली पर गृहस्थ लोग प्रदोष काल में स्थिर लग्न के समय भगवान गणेश, देवी लक्ष्मी और कुबेर महाराज की पूजा करते हैं। व्यापारी लोग इस दिन अपना खाता बही बदलते हैं। इसलिए व्यापारियों का नया वर्ष भी इसी दिन से शुरू होता है। गुजरात में दिवाली से ही महालक्ष्मी वर्ष का आरंभ माना जाता है।

### दिवाली की रात का शगुन

दिवाली के दिन महालक्ष्मी अपने वाहन उल्लू पर सवार होकर पृथ्वी भ्रमण के लिए आती हैं। इसलिए लोग अपने घर और छत की सफाई करते है। घर में रंगोली बनाकर देवी लक्ष्मी का स्वागत करते हैं। कहते हैं कि इस रात कुछ ऐसे शगुन होते हैं जो बताते हैं कि महालक्ष्मी का घर में आगमन हुआ है।

### दिवाली उत्सव

दिवाली के दिन देवी लक्ष्मी की पूजा करने के बाद लोग अपने रिश्तेदारों पड़ोसियों के बीच उपहार और मिठाई बांटते हैं। बच्चों को यह त्योहार इसलिए भी खूब पसंद आता है क्योंकि इसमें उन्हें आतिशबाजी करने का मौका मिलता है। लेकिन देश के कुछ भागों में प्रदूषण के खतरे को देखते हुए दिवाली पर आतिशबाजी को बैन कर दिया गया है। ऐसे में बच्चों को थोड़े निराश हो जाते हैं। फिर भी सभी लोग बड़े उत्साह और आनंद के साथ दिवाली का महापर्व मनाते हैं।

# लक्ष्मी पूजा में रखें 10 बातों का ध्यान

**दीपावली के अवसर पर जानिए दिवाली पूजा की सबसे सरल विधि और यह भी जानिए कि पूजन के समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस बार दीवाली का त्योहार 20 अक्टूबर को मनाया जाएगा।**

दिवाली की सबसे सरल पूजा विधि

- ईशान कोण या उत्तर दिशा में साफ सफाई करके स्वास्तिक बनाएं। उसके ऊपर चावल की ढेरी रखें। अब उसके ऊपर लकड़ी का पाट बिछाएं। पाट के ऊपर लाल कपड़ा बिछाएं और उस पर माता लक्ष्मी की मूर्ति या तस्वीर रखें। तस्वीर में गणेश और कुबेर की तस्वीर भी हो। माता के दाएं और बाएं सफेद हाथी के चित्र भी होना चाहिए।
- पूजन के समय पंचदेव की स्थापना जरूर करें। सूर्यदेव, श्रीगणेश, दुर्गा, शिव और विष्णु को पंचदेव कहा गया है। इसके बाद धूप-दीप जलाएं। सभी मूर्ति और तस्वीरों को जल छिड़ककर पवित्र करें।
- अब खुद कुश के आसन पर बैठकर माता लक्ष्मी की षोडशोपचार पूजा करें। अर्थात 16 क्रियाओं से पूजा करें। पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नेवैद्य, आचमन, ताम्बुल, स्तवपाठ, तर्पण और नमस्कार। पूजन के अंत में सांगता सिद्धि के लिए दक्षिणा भी चढ़ाना चाहिए।
- माता लक्ष्मी सहित सभी के मस्तक पर हल्दी कुंकू, चंदन और चावल लगाएं। फिर उन्हें हार और फूल चढ़ाएं। पूजन में अनामिका अंगुली (छोटी अंगुली के पास वाली यानी रिंग फिंगर) से गंध (चंदन, कुमकुम, अबीर, गुलाल, हल्दी आदि) लगाना चाहिए। इसी तरह उपरोक्त षोडशोपचार की सभी सामग्री से पूजा करें। पूजा करते वक्त उनके मंत्र का जाप करें।

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ महालक्ष्म्यै नमो नमः धनप्रदायै नमो नमः ॐ विश्वजनन्यै नमो नमः।

- पूजा करने के बाद प्रसाद या नैवेद्य (भोग) चढ़ाएं। ध्यान रखें कि नमक, मिर्च और तेल का प्रयोग नैवेद्य में नहीं किया जाता है। प्रत्येक पकवान पर तुलसी का एक पत्ता रखा जाता है। इस दिन लक्ष्मीजी को मखाना, सिंघाड़ा, बताशे, ईख, हलुआ, खीर, अनार, पान, सफेद और पीले रंग के मिष्ठान्न, केसर-भात आदि अर्पित किए जाते हैं। पूजन के दौरान 16 प्रकार की गुजिया, पपड़ियां, अनर्सा, लड्डू भी चढ़ाए जाते हैं। आह्वान में पुलहरा चढ़ाया जाता है। इसके बाद चावल, बादाम, पिस्ता, छुआरा, हल्दी, सुपारी, गेंहू, नारियल अर्पित करते हैं। केवड़े के फूल और आम्रबेल का भोग अर्पित करते हैं।
- पूजा करने के बाद अंत में खड़े होकर उनकी आरती करके नैवेद्य चढ़ाकर पूजा का समापन किया जाता है। पूजा के बाद कपूर आरती जरूर करें। कर्पूर गौरम करुणा का श्लोक बोलें। आरती को सबसे पहले उसे अपने आराध्य के चरणों की तरफ चार बार, इसके बाद नाभि की तरफ दो बार और अंत में एक बार मुख की तरफ घुमाएं। ऐसा कुल सात बार करें। आरती करने के बाद उस पर से जल फेर दें और प्रसाद स्वरूप सभी लोगों पर छिड़कें।
- मुख्य पूजा के बाद अब मुख्य द्वार या आंगन में दीये जलाएं। एक दीया यम के नाम का भी जलाएं। रात्रि में घर के सभी कोने में भी दीए जलाएं।
- पूजा और आरती के बाद ही किसी से मिलने जाएं, मिठाई बांटें या पटाखें फोड़ें।
- घर में या मंदिर में जब भी कोई विशेष पूजा करें तो अपने इष्टदेव के साथ ही स्वस्तिक, कलश, नवग्रह देवता, पंच लोकपाल, षोडश मातृका, सप्त मातृका का पूजन भी किया जाता। लेकिन विस्तृत पूजा तो पंडित ही करता है अतः आप ऑनलाइन भी किसी पंडित की मदद से विशेष पूजा कर सकते हैं। विशेष पूजन पंडित की मदद से ही करवाने चाहिए, ताकि पूजा विधिवत हो सके।

### दिवाली का ज्योतिषीय महत्व

हिंदू धर्म के प्रत्येक त्योहार की तरह दिवाली का भी अपना ज्योतिषीय महत्व है। ऐसी मान्यता है कि अनेक पर्व और त्योहारों पर बनने वाली ग्रहों की दशा एवं विशेष योग मानव समाज के लिए फलदायी होते हैं। दिवाली का समय हिन्दुओं द्वारा किसी भी नए कार्य के शुभारम्भ और किसी वस्तु को खरीदने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इसका भी अपना ज्योतिषीय कारण है। दीपावली के समय तुला राशि में सूर्य और चंद्रमा स्वाति नक्षत्र में स्थित होते हैं।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य और चंद्रमा की स्थिति किसी भी व्यक्ति को शुभ फल देने वाली होती है। तुला राशि एक संतुलित भाव वाली राशि है जो न्याय और निष्पक्षता का प्रतिनिधित्व करती है। तुला राशि के स्वामी शुक्र सौहार्द, भाईचारे, सद्भाव और सम्मान का कारक हैं। इन्हीं गुणों के कारण सूर्य और चंद्रमा का तुला राशि में स्थित होना शुभ संयोग का निर्माण करता है।

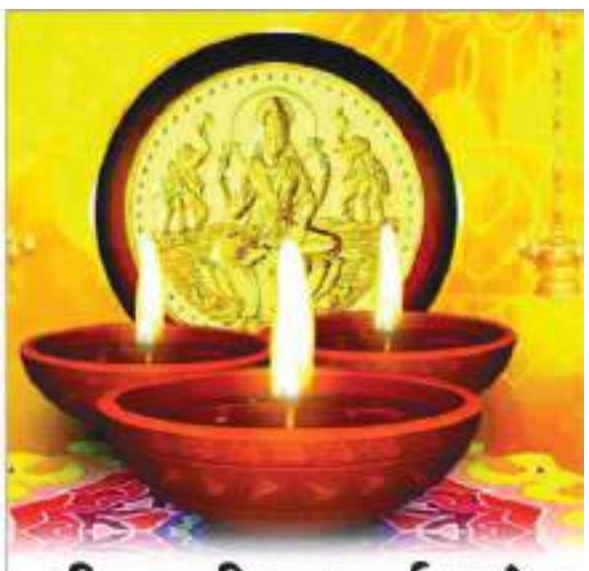





## दीपावली पर दुर्लभ योग 676 साल बाद गुरु-शनि के शुभ योग में मनेगी दीपावली

सोमवार, 20 अक्टूबर को दीपावली है। इस साल गुरु ग्रह अपनी उच्च राशि कर्क में है। इसके साथ ही गुरु की दृष्टि शनि पर रहेगी। शनि गुरु की राशि मीन में है। गुरु का उच्च राशि में होना और उसकी शनि पर दृष्टि, शनि का मीन राशि में होना, एक शुभ योग है। ज्योतिषाचार्य के मुताबिक, ऐसा योग 2025 से 676 साल पहले 20 अक्टूबर 1349 को बना था। उस दिन भी सोमवार ही था। तारीख, वार एक जैसे होने की साथ ही उच्च के गुरु की दृष्टि, गुरु की राशि में शनि है। अब 2025 के 60 बाद फिर ऐसा योग बनेगा।

कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन के शुभ रहेगा समय

गुरु पुनर्वसु नक्षत्र में रहेगा, इसका स्वामी गुरु ही है और शनि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में रहेगा, इसका स्वामी भी गुरु ही है। गुरु उच्च राशि कर्क में है, शनि भी गुरु की राशि में है, गुरु की दृष्टि भी शनि पर है। इन शुभ योगों की वजह से देश में व्यापार की स्थिति बहुत मजबूत होगी। शत्रु देशों को बड़ी हानि हो सकती है। सोना और चांदी के दाम बढ़ते रहेंगे। कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन राशि वालों को लाभ मिलने की संभावना है।

दीपावली का पर्व क्यों मनाया जाता है?

भविष्य, स्कन्द एवं पद्म पुराण में दीपावली मनाने के कई कारण बताए गए हैं। कहानियों के अनुसार समुद्र मंथन से धन्वंतरि की उत्पत्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हुई थी। इसके बाद कार्तिक अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी का अवतार समुद्र से हुआ। उनके स्वागत के लिए मंगल उत्सव मनाया गया तथा दीप मालिकाएं जलाई गई थी। इस मान्यता की वजह से दीपावली मनाई जाती है। एक अन्य कथा के अनुसार भगवान कृष्ण ने नरक चौदस के दिन नरकासुर का वध किया तथा सोलह हजार राजकन्याओं को उसकी कैद से स्वतंत्र करा कर अमावस्या पर द्वारिका में प्रवेश किया था, लोगों ने भगवान के स्वागत के लिए दीप मालिकाओं से द्वारिका को सजाया था। रावण का वध करके जब भगवान राम ने अयोध्या में प्रवेश किया, तब कार्तिक मास की अमावस्या थी और उस दिन नगरवासियों ने भगवान के स्वागत के लिए अयोध्या को दीपों से सजाया था।

### देवालयों में दीप जलाएं

- दीपावली पर सायंकाल देवालयों में दीपदान, रात्रि के अंतिम पहर में दरिद्रा निस्तारण करना चाहिए।
- व्यापारी वर्ग शुभ व स्थिर लग्न में अपने प्रतिष्ठान की उन्नति के लिए महालक्ष्मी पूजन करते हैं।
- घरों में लक्ष्मी-गणेश व कुबेर का पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दीप जलाना चाहिए।
- मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए श्रीसूक्तमकनकधारा स्त्रोत, लक्ष्मी चालीसा, लक्ष्मी मंत्र का पाठ-जप-हवन आदि करना चाहिए। इससे महालक्ष्मी, स्थिर लक्ष्मी स्वरूप में कृपा के साथ धन-धान्य, सौभाग्य, पुत्र-पौत्र, ऐश्वर्य और प्रभुत्व का इत्यादि का वरदान देती हैं।
- दीपावली की सुबह हनुमान जी का दर्शन-पूजन करना चाहिए।

# देश-दुनिया में कब और कैसे मनाया जाता है दिवाली का महापर्व

दीयों के प्रकाश से जगमगाहट फैलाने वाले जिस दीपावली पर्व का इंतजार लोगों को पूरे साल बना रहता है, वह देश और विदेश में हर साल बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है. देश में पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक इस पर्व को लेकर क्या मान्यताएं जुड़ी हैं और विदेशों में इसे कैसे मनाया जाता है हिंदू धर्म से जुड़े लोगों के लिए दिवाली का पर्व बहुत ज्यादा मायने रखता है क्योंकि इस दिन शुभ एवं लाभ के देवता भगवान श्री गणेश के साथ धन की देवी मां लक्ष्मी की विधि-विधान से पूजा की जाती है ताकि पूरे साल उनके घर में सुख-सौभाग्य बना रहे. इस साल यह पावन पर्व देश और विदेश में 31 अक्टूबर को मनाया जाएगा. अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक माने जाने वाले दिवाली पर्व को देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग तरीकों और मान्यताओं के आधार पर मनाया जाता है.

### तब दिवाली के दिन जमीन पर उतर आते हैं देवता

भारत के पूर्व में वाराणसी की दिवाली काफी प्रसिद्ध है. यहां पर दिवाली से ज्यादा रौनक देव दिवाली के दिन देखने को मिलती और इस दिन घाटों को कई हजार दीये से सजाया जाता है. हिंदू मान्यता के अनुसार इस दिन स्वर्गलोक से देवतागण पृथ्वी पर दिवाली मनाने के लिए आते हैं. देव दिवाली को देखने के लिए न सिर्फ देश बल्कि विदेशों से लोग पहुंचते हैं.

### पंजाब की दिवाली से जुड़ी है ये परंपरा

उत्तर भारत की तरह पंजाब में भी दिवाली की अलग रौनक देखने को मिलती है. पंजाब में सिखी परंपरा से जुड़े लोग इस पर्व को बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाते हैं. उनकी मान्यता है कि इसी दिन सिखों के छठवें गुरु हरगोविंद सिंह को जेल से रिहा किया गया था. इस दिन अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में रोशनी और आतिशबाजी देखने लायक होती है.

### गुजरात में कुछ ऐसे होती है दिवाली की रौनक

गुजरात में दिवाली का पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है. गुजरात में दिवाली को धूमधाम से मनाने के लिए लोग 15 दिन पूर्व ही उसकी तैयारियां शुरू कर देते हैं. गुजरात में दिवाली के दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं और इस दिन साफ-सफाई के साथ पूरे घर की विशेष सजावट की जाती है. दिवाली के अगले दिन गुजराती लोगों का नया साल प्रारंभ होता है. इस दिन लोग एक दूसरे को शुभकामनाएं और मिठाइयां भेंट करते हैं.

### विदेश में भी होती है दिवाली की धूम

देश की तरह उन देशों में भी दिवाली की खूब धूम रहती है, जहां पर हिंदू धर्म से जुड़े लोग रहते हैं. मसलन नेपाल में दिवाली को स्वान्ति कहा जाता है. यहां पर भी यह पावन पर्व पांच दिनों तक मनाया जाता है. वहीं श्रीलंका में तमिल लोग इस पावन पर्व को विधि-विधान से मनाते हैं. इसी प्रकार अमेरिका, लंदन, थाईलैंड, मलेशिया आदि में भी दिवाली के मौके पर खूब धूम रहती है. यहां पर रहने वाले दिवाली का पर्व पारंपरिक तरीके से पूजा-पाठ करके मनाते हैं.

## डकवर्थ को हराकर फाइनल में पहुंचे डेनिल

**नई दिल्ली ।** दुनिया के नंबर 4 टेनिस खिलाड़ी डेनिल मेदवेदेव ने शनिवार को ऑस्ट्रेलियाई क्वालीफायर जेम्स डकवर्थ को हराकर अल्माटी ओपन के फाइनल में जगह बना ली है. मेदवेदेव ने यह मुकाबला 6-7 (8), 6-3, 6-2 से अपने नाम किया. पहला सेट कड़ा मुकाबला रहा, जहां डकवर्थ ने दो सेट पॉइंट बचाते हुए टाईब्रेक 10-8 से जीत लिया.

हालांकि इसके बाद मेदवेदेव ने शानदार वापसी की. उन्होंने दूसरे सेट में दो बार और तीसरे सेट की शुरुआत में एक बार डकवर्थ की सर्विस ब्रेक की और मैच पर नियंत्रण बना लिया. मेदवेदेव का बेसलाइन से लगातार मजबूत खेल 33 वर्षीय डकवर्थ पर भारी पड़ा और अंततः उन्होंने फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली.

### झारखंड ओपन चैंपियनशिप 2025 की तैयारी पूरी, 15 नवंबर से रांची के बिशप स्कूल में होगा आयोजन

# रांची में सात दिवसीय कराटे प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

**एजेंसियां । रांची**

राजधानी रांची में इंटरनेशनल मार्शल आर्ट अकादमी (इमा) द्वारा आयोजित सात दिवसीय कराटे प्रशिक्षण शिविर रविवार को सफलतापूर्वक संपन्न हो गया. यह शिविर आगामी 15 नवंबर से रांची के बिशप स्कूल में होने वाली दूसरी सिकोकई झारखंड ओपन कराटे चैंपियनशिप 2025 की तैयारी का हिस्सा था. शिविर का आयोजन सिकोकई कराटे इंटरनेशनल झारखंड और इंटरनेशनल मार्शल आर्ट अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में किया गया. शिविर का मुख्य उद्देश्य था राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए खिलाड़ियों की तकनीकी क्षमता को मजबूत करना. इस दौरान खिलाड़ियों को एडवांस कुमिते (फाइटिंग) और काता (फॉर्म) के साथ-साथ विश्व कराटे महासंघ (डब्ल्यूकेएफ) के नवीनतम नियमों की जानकारी दी गई. इंटरनेशनल मार्शल आर्ट एकेडमी के तकनीकी निदेशक और राष्ट्रीय कोच शिहान सुनील किस्पोट्टा ने शिविर का नेतृत्व किया. उन्होंने खिलाड़ियों को आधुनिक स्कोरिंग तकनीकों, गति, संतुलन, डिस्टेंसिंग और रणनीति के उन्नत स्तर पर प्रशिक्षण दिया. किस्पोट्टा ने बताया कि रांची के विभिन्न स्कूलों और क्लबों से आए खिलाड़ियों की तकनीकी क्षमता में सात दिनों के भीतर ही साफ़-साफ़ सुधार देखने को मिला है. शिविर के सफल आयोजन में इमा के

अध्यक्ष संसाइ अनिल किस्पोट्टा सहित कई प्रशिक्षकों और सहयोगियों का योगदान सराहनीय रहा. शिविर के समापन पर उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण ने खिलाड़ियों में नए आत्मविश्वास और जोश का संचार किया है, जिससे आगामी चैंपियनशिप में रांची टीम के शानदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है.संगठन ने यह भी घोषणा की कि शिविर का दूसरा चरण जल्द आयोजित किया जाएगा, जिसमें अन्य जिलों, स्कूलों और कराटे क्लबों के खिलाड़ी भी हिस्सा लेंगे. इस तरह के शिविर राज्य में कराटे के स्तर को नई ऊंचाई देने में मदद करेंगे.

## गोल्फ किसी भी उम्र में खेला जा सकता है: कपिल देव

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और मौजूदा पीजीटीआई अध्यक्ष कपिल देव ने गोल्फ को एक कठिन लेकिन हर उम्र के लिए उपयुक्त खेल बताया है. उन्होंने कहा कि यह खेल जितना दिखने में आसान लगता है, उतना है नहीं. एक लॉन्च कार्यक्रम में कपिल देव ने कहा, "गोल्फ में लक्ष्य बहुत छोटा होता है, इसीलिए यह क्रिकेट से भी अधिक चुनौतीपूर्ण बन जाता है. थोड़ी सी चूक आपको खेल से बाहर कर सकती है." उन्होंने बताया कि गोल्फ का प्रशिक्षण भी कठिन होता है और 90 प्रतिशत खिलाड़ी शुरुआती 15 दिनों में ही हार मान लेते हैं. कपिल देव का मानना है कि हार से निराश होकर खेल छोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि गोल्फ को दोबारा अपनाना चाहिए और इसका आनंद लेना चाहिए. उन्होंने यह भी कहा, "गोल्फ एक ऐसा खेल है जिसे आप किसी भी उम्र में खेल सकते हैं. क्रिकेट या फुटबॉल जैसे खेल 50 की उम्र के बाद मुश्किल हो जाते हैं, लेकिन गोल्फ में आप अपने परिवार के हर सदस्य के साथ खेल सकते हैं." कार्यक्रम में मौजूद नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत ने भी कहा कि भारत में गोल्फ के क्षेत्र में विशाल संभावनाएं हैं. उन्होंने विश्वास जताया कि भारत से आने वाले वर्षों में दुनिया के शीर्ष गोल्फर उभरेंगे, क्योंकि देश की जनसंख्या युवा है और औसत आयु केवल 28 वर्ष है. कपिल देव के अनुसार, गोल्फ केवल खेल नहीं, बल्कि जीवनभर खेलने योग्य अनुभव है.

## मारे गए अफगान क्रिकेटरों पर जय शाह और बीसीसीआई ने जताई संवेदना

**नई दिल्ली।** पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान के पक्तिका प्रांत में की गई एयरस्ट्राइक में तीन युवा अफगान क्रिकेटरों की दर्दनाक मौत पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट जगत शोक में डूबा है. आईसीसी अध्यक्ष जय शाह, बीसीसीआई, और अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) सहित कई संस्थाओं ने इस घटना की निंदा करते हुए मृतकों के प्रति संवेदना प्रकट की है. जय शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (पूर्व ट्विटर) पर संवेदना व्यक्त करते हुए लिखा, "तीन युवा अफगान क्रिकेटरों – कबीर आगा, सिबगतुल्लाह और हारून – की मृत्यु पर गहरा दुख हुआ है. उनके सपने एक मूर्खतापूर्ण हिंसा के कारण अधूरे रह गए. यह त्रासदी न केवल अफगानिस्तान के लिए, बल्कि पूरे क्रिकेट जगत के लिए एक गहरा नुकसान है." अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने भी एक बयान में कहा कि मृत तीनों क्रिकेटर उस वक्त एक दोस्ताना मैच खेलकर शराना से घर लौट रहे थे, जब एयरस्ट्राइक में उनकी जान चली गई. एसीबी ने इस कार्रवाई को खेल समुदाय के खिलाफ हमला करार देते हुए कड़ी निंदा की है और त्रिकोणीय टी20 सीरीज से हटने का फैसला लिया है. यह सीरीज पाकिस्तान, श्रीलंका और अफगानिस्तान के बीच होनी थी, अब अफगानिस्तान की जगह जिम्बाब्वे को शामिल किया गया है. बीसीसीआई ने भी इस दुखद घटना पर प्रतिक्रिया दी. एक बयान में बोर्ड ने कहा, "यह भयावह और अनुचित हमला क्रिकेट और मानवता दोनों के खिलाफ है. हम अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड और पीड़ित परिवारों के साथ खड़े हैं." बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा, "निर्दोष और होनहार खिलाड़ियों की जान जाना बेहद दुखद है. हम अफगानिस्तान के लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं." आईसीसी ने भी इस घटना पर दुख जताया और कहा कि यह हमला उन युवाओं के सपनों पर प्रहार है, जिनकी केवल एक आकांक्षा थी – अपने पसंदीदा खेल, क्रिकेट को खेलना. यह घटना केवल तीन जिंदगियों की क्षति नहीं, बल्कि क्रिकेट जगत के लिए एक करुण त्रासदी है, जिसने खेल के मंच पर उभरती संभावनाओं को बेरहमी से कुचल दिया.

### सीरीज में 1-0 से पीछे, रोहित और कोहली की वापसी नाकाम

# ऑस्ट्रेलिया ने टीम इंडिया को सात विकेट से हराया

**एजेंसियां । पर्थ**

बारिश से प्रभावित पहले वनडे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को सात विकेट से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है. यह मुकाबला काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा, जिसमें मौसम ने बड़ी भूमिका निभाई. बारिश के कारण चार बार मैच को रोकना पड़ा और अंततः इसे 26-26 ओवर का कर दिया गया. इस संशोधित फॉर्मेट में भारतीय टीम बल्लेबाजी में संघर्ष करती दिखी, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने लक्ष्य का पीछा करते हुए आत्मविश्वास से भरा प्रदर्शन किया.

भारत की कमजोर शुरुआतः टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 26 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर केवल 136 रन बनाए. यह स्कोर एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मानकों के हिसाब से बेहद कम था. भारत के लिए रोहित शर्मा और विराट कोहली की वापसी चर्चा का विषय रही, लेकिन दोनों खिलाड़ी इस मुकाबले में प्रभाव नहीं छोड़ सके. रोहित और कोहली की जोड़ी सात महीने बाद एक साथ मैदान पर उतरी, लेकिन रन बनाने में नाकाम रही. मध्यक्रम और निचले क्रम के बल्लेबाज भी ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी के सामने संघर्ष करते नजर आए.

डकवर्थ-लुइस नियम से मिला संशोधित लक्ष्यः बारिश के चलते डकवर्थ-लुइस नियम लागू किया गया और ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 131 रनों का लक्ष्य दिया गया. यह लक्ष्य चुनौतीपूर्ण नहीं था, लेकिन भारतीय गेंदबाजों से उम्मीद थी कि वे शुरुआती विकेट लेकर मुकाबले को रोमांचक बनाएंगे.

मिचेल मार्श की शानदार पारीः ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान मिचेल मार्श ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया. उन्होंने 52 गेंदों में दो चौकों और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 46 रन बनाए और टीम को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचाया. मार्श के अलावा जोश फिलिप ने 37 और मैट रेनशॉ ने 21 रनों की नाबाद पारी खेली. ट्रेविस हेड और मैथ्यू शॉर्ट ने आठ-आठ रन बनाए.

भारत की ओर से साधारण गेंदबाजीः भारतीय गेंदबाजों में अर्शदीप सिंह, अक्षर पटेल और वाशिंगटन सुंदर को एक-एक सफलता मिली, लेकिन वे ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों पर दबाव बनाने में असफल रहे. कुल मिलाकर, भारतीय गेंदबाजी इकाई इस मुकाबले में थोड़ी फीकी रही.

### रोहित और कोहली ने पूरी तरह निराश किया

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पर्थ में खेले जा रहे पहले वनडे मैच में भारतीय टीम की शुरुआत बेहद निराशाजनक रही. सात महीने बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी कर रहे रोहित शर्मा और विराट कोहली बल्ले से कोई प्रभाव नहीं छोड़ सके. दोनों ही खिलाड़ी 223 दिन बाद भारतीय जर्सी में लौटे थे, लेकिन आधे घंटे भी क्रीज पर नहीं टिक सके. रोहित शर्मा ने अपने 500वें अंतरराष्ट्रीय मैच में केवल 16 मिनट बल्लेबाजी की और जोश हेजलवुड की गेंद पर 8 रन बनाकर आउट हो गए. वहीं, विराट कोहली खाता भी नहीं खोल सके और मिचेल स्टार्क की गेंद पर कैच आउट होकर पवेलियन लौटे.

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान मिचेल मार्श ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया. भारत ने इस मुकाबले में नीतीश कुमार रेड्डी को वनडे डेब्यू का मौका दिया.

## लेयला ने करियर का पांचवां खिताब किया अपने नाम

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

चौथी वरीयता प्राप्त लेयला फर्नांडीज ने रविवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए जापान ओपन 2025 का खिताब जीत लिया. उन्होंने फाइनल में 18 वर्षीय क्वालीफायर टेरेजा वैलेंटोवा को 6-0, 5-7, 6-3 से हराकर अपना करियर का पांचवां और इस वर्ष का दूसरा खिताब अपने नाम किया. मैच दो घंटे एक मिनट तक चला, जिसमें फर्नांडीज ने दमदार शुरुआत करते हुए पहला सेट मात्र 30 मिनट में 6-0 से जीता. दूसरे सेट में हालांकि वैलेंटोवा ने वापसी करते हुए मुकाबले को निर्णायक सेट तक खींचा, लेकिन तीसरे सेट में फर्नांडीज ने अनुभव का फायदा उठाकर जीत दर्ज की. ओसाका में यह उनकी लगातार पांचवीं जीत रही, और इसी के साथ उन्होंने डब्ल्यूटीए लाइव रैंकिंग में पांच स्थान की छलांग लगाकर 22वां स्थान हासिल किया. उल्लेखनीय है कि फर्नांडीज ने अपने करियर के सभी खिताब हार्ड कोर्ट पर जीते हैं. महिला युगल वर्ग में टेलर टाउनसेंड और क्रिस्टिना मलादेनोविक की जोड़ी ने स्टॉर्म हंटर और डेसिरा क्रावजिक को हराकर खिताब जीता. यह टीम के रूप में उनका पहला खिताब है. टाउनसेंड के करियर का यह 11वां डब्ल्यूटीए युगल खिताब और इस सीजन का चौथा खिताब रहा. जापान ओपन में फर्नांडीज की यह जीत न सिर्फ उनके करियर को नई ऊंचाई देती है, बल्कि उन्हें आगामी टूर्नामेंटों में आत्मविश्वास के साथ उतरने का मंच भी प्रदान करती है.

## अभिजीत मिश्र के शतक और प्रिंस पाल की पारी से किशोरी लाल क्लब की जीत

**प्रयागराज ।** अभिजीत मिश्र के नाबाद शतक और प्रिंस पाल की जबरदस्त बल्लेबाजी के दम पर किशोरी लाल क्लब ने तेजस क्लब को छह विकेट से हराकर अंडर-16 तीन मैचों की क्रिकेट सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली. रविवार को नैनी स्थित किशोरी लाल पीजी कॉलेज मैदान पर खेले गए पहले मुकाबले में तेजस क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 36.1 ओवर में 252 रन बनाए. टीम की ओर से सुधांशु सिंह ने 55, साहिल तिवारी ने 33, शिवराज ने 29 तथा सर्वेश सोनकर और शुभ केसरी ने 24-24 रन का योगदान दिया. किशोरी लाल क्लब के लिए आयुष पांडेय ने किफायती गेंदबाजी करते हुए 9 रन देकर तीन विकेट लिए.

## शतक लगाने के बाद हिदर नाइट ने पिच को बताया चुनौतीपूर्ण

**इंदौर ।** भारत के खिलाफ रविवार को होल्कर स्टेडियम में खेले गए मैच में इंग्लैंड की हिदर नाइट ने शानदार शतकीय पारी खेली. नाइट ने 91 गेंदों पर 1 छक्का और 15 चौकों की मदद से 109 रन बनाए, जिससे इंग्लैंड ने 50 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 288 रन बनाए. इस दौरान उन्होंने कप्तान नेट सेवियर ब्रंट के साथ तीसरे विकेट के लिए 113 रन की अहम साझेदारी की. ब्रंट ने 38 और एमी जोंस ने 68 गेंदों पर 56 रन बनाए. हिदर नाइट ने मैच के बाद कहा कि शुरुआत में रन बनाना आसान नहीं था क्योंकि विकेट धीमा और उछाल भरा था. उन्होंने कहा, ₹पिच पर जमने के बाद हिट लगाने में आसानी हुई. मैंने स्वीप शॉट का खूब इस्तेमाल किया, जो कारगर साबित हुआ.₹ उन्होंने नेट सेवियर के साथ की गई साझेदारी को भी अहम बताया. यह हिदर नाइट का इंग्लैंड के लिए 300वां मैच था. इंग्लैंड ने अब तक विश्व कप में 4 में से 3 मैच जीते हैं और 1 मैच रद्द होने के कारण 7 अंक लेकर अंक तालिका में तीसरे स्थान पर है.

## तेलुगु टाइटंस ने नौ साल के बाद प्लेऑफ में बनाई जगह

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) सीजन 12 में तेलुगु टाइटंस ने इतिहास रचते हुए नौ साल बाद प्लेऑफ में प्रवेश कर लिया है. शनिवार रात त्यागराज इंडोर स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टीम ने पुनेरी पलटन को 40-31 से हराकर यह उपलब्धि हासिल की. कप्तान विजय मलिक ने सुपर 10 हासिल करते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया. गौरतलब है कि 2016 में पीकेएल सीजन 4 के बाद यह पहला मौका है जब तेलुगु टाइटंस प्लेऑफ में पहुंची है. यह टीम के कोच कृष्ण कुमार हूडा के साथ दूसरा सीजन है. कोच हूडा ने इस जीत को टीम के लिए ऐतिहासिक और प्रेरणादायक बताया. उन्होंने कहा, "टीम ने लंबे समय बाद यह मुकाम हासिल किया है. खिलाड़ियों और स्टाफ की मेहनत रंग लाई है. हमने पिछली गलतियों से सीखा और इस सीजन लगातार बेहतर प्रदर्शन किया."

कप्तान विजय मलिक ने भी टीम के प्रदर्शन पर संतोष जताते हुए कहा, "यह जीत पूरी टीम की सामूहिक मेहनत का नतीजा है. प्लेऑफ में जगह बनाना आसान नहीं होता, लेकिन हमने हर मैच में रणनीति के साथ खेला. हम अपने फैंस के समर्थन के लिए आभारी हैं." टीम के बदलावों पर बोलते हुए मलिक ने कहा कि प्रैक्टिस, फिटनेस और रणनीति में सुधार हुआ है, जिसका असर प्रदर्शन पर साफ दिखा. कोच हूडा ने आगे कहा, "अब असली चुनौती शुरू होती है. प्लेऑफ मुकाबले 'करो या मरो' जैसे होंगे. हम और भी आक्रामक रणनीति के साथ मैदान पर उतरेंगे. नतीजा जो भी हो, हमारा प्रयास सौ प्रतिशत रहेगा." हूडा ने अंत में यह भी जोड़ा कि टीम का आत्मविश्वास उच्च स्तर पर है.

## पाकिस्तान करेगा क्लीन स्वीप की कोशिश साउथ अफ्रीका को सीरीज बचाने की चुनौती

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

पाकिस्तान और साउथ अफ्रीका के बीच टेस्ट सीरीज का दूसरा और आखिरी मुकाबला सोमवार से रावलपिंडी में खेला जाएगा. पहला टेस्ट जीतकर 1-0 की बढ़त ले चुकी पाकिस्तान टीम अब क्लीन स्वीप करना चाहेगी, वहीं साउथ अफ्रीका सीरीज ड्रॉ कराने के इरादे से उतरेगा. पहला टेस्ट लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में खेला गया था, जहां पाकिस्तान ने 93 रन से जीत दर्ज की थी. अब सीरीज में वापसी के लिए साउथ अफ्रीका को किसी भी हाल में यह मैच जीतना होगा. अब तक दोनों टीमों के बीच 31 टेस्ट मुकाबले हुए हैं, जिनमें साउथ अफ्रीका ने 17, जबकि पाकिस्तान ने केवल 7 मैच जीते हैं. 7 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं. पाकिस्तान की ओर से इमाम-उल-हक, कप्तान शान मसूद, मोहम्मद रिजवान और सलमान आगा से बल्लेबाजी में उम्मीदें हैं. गेंदबाजी में शाहीन अफरीदी, नोमान अली और साजिद खान पर नजरें रहेंगी. वहीं साउथ अफ्रीका को टोनी डी जोरजी, रयान रिकेल्टन और देवाल्ड ब्रेविस से रन की उम्मीद होगी. गेंदबाजी की कमान कगिसो रबाडा, साइमन हार्मर और प्रेनेलन सुब्रायन संभालेंगे. रावलपिंडी की पिच पहले दिन तेज गेंदबाजों को मदद दे सकती है. मौसम साफ रहेगा, अधिकतम तापमान 30सें और न्यूनतम 17सें के आसपास रहने की संभावना है. मैच दोनों टीमों के लिए अहम है—पाकिस्तान इतिहास रचने की कोशिश में है, जबकि साउथ अफ्रीका सम्मान बचाने के इरादे से मैदान में उतरेगा.

## 'सिक्सर सिद्धू' से शायर सिद्धू तक हर रंग में छाए नवजोत सिंह सिद्धू

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

भारतीय क्रिकेट के पूर्व धाकड़ बल्लेबाज नवजोत सिंह सिद्धू का करियर जितना शानदार रहा, उतना ही रंगीन उनका अंदाज भी रहा है. शारजाह में 1990 में वकार यूनिस की पहली गेंद पर 'गोल्डन डक' होना आज भी क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक दिलचस्प किस्सा है, लेकिन यही सिद्धू टेस्ट में 9 शतक जड़ने वाले 'सिक्सर सिद्धू' भी रहे हैं. 20 अक्टूबर 1963 को पटियाला में जन्मे सिद्धू को उनकी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए जाना जाता है. उन्होंने 51 टेस्ट में 3,202 रन बनाए, जिसमें 201 का उच्चतम स्कोर शामिल है. वहीं 136 वनडे मैचों में 4,413 रन बनाए, जिसमें सर्वाधिक स्कोर 134 रहा. 1990 के उस मशहूर मैच की बात करें तो वकार यूनिस की यॉर्कर ने सिद्धू के स्टंप उखाड़ दिए थे. यह किस्सा जितना मजेदार है, उतना ही यह दर्शाता है कि क्रिकेट में एक पल की चूक भी बड़ा फर्क ला सकती है. सिद्धू खुद कहते हैं, ₹मेरी सेंचुरी नहीं याद रखते, सबको वही 'गोल्डन डक' याद है!₹ क्रिकेट से संन्यास के बाद सिद्धू ने कमेंट्री में अपनी एक अलग पहचान बनाई. उनकी शायराना भाषा और चुटीले तंज ने उन्हें दर्शकों का चहेता बना दिया. ठोको ताली! जैसे जुमले आज भी लोगों की जुबान पर हैं. राजनीति में भी सिद्धू ने खूब सुर्खियां बटोरीं. वह अमृतसर से सांसद, पंजाब सरकार में मंत्री, और पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे. सिद्धू ने भाजपा और

कांग्रेस दोनों पार्टियों के साथ काम किया, हालांकि वर्तमान में वह राजनीति से दूरी बनाए हुए हैं. चाहे मैदान हो, मंच हो या माइक—नवजोत सिंह सिद्धू ने हर जगह अपने अंदाज से लोगों का भरपूर मनोरंजन किया है. उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि इंसान गिरकर भी कैसे मुस्कुराते हुए उठ सकता है.

### फुटबॉल | इंटर मियामी के इतिहास में यह पुरस्कार जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने

# मेसी ने 29 गोल कर एमएलएस गोल्डन बूट का जीता खिताब

**एजेंसियां । नई दिल्ली**

फुटबॉल के दिग्गज लियोनेल मेसी ने मेजर लीग सॉकर (एमएलएस) 2025 सीजन में अपने शानदार प्रदर्शन से एक और बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है. इंटर मियामी सीएफ के सुपरस्टार ने इस सीजन 29 गोल कर एमएलएस गोल्डन बूट का खिताब जीत लिया है. इसके साथ ही वह इंटर मियामी के इतिहास में यह पुरस्कार जीतने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं. यह मेसी का इंटर मियामी के साथ दूसरा पूरा सीजन था और उन्होंने न केवल गोल करने में, बल्कि खेल निर्माण में भी अहम भूमिका निभाई. उन्होंने 19 असिस्ट भी किए, जिससे उनका कुल योगदान 48 गोल और असिस्ट तक पहुंच गया है. मेसी ने इस सूची में एलएएफसी के डेनिस बोंगा (24 गोल) और नैशविले एससी के सैम सरिज (24 गोल) को पीछे छोड़ दिया. अर्जेंटीना के इस महान खिलाड़ी ने शनिवार को नैशविले के खिलाफ 5-2 से मिली जीत में हैट्रिक लगाई और 1 असिस्ट भी दिया, जो सीजन के निर्णायक क्षणों में से एक साबित हुआ.

**ऐतिहासिक उपलब्धि:** मेसी न्यूयॉर्क सिटी एफसी के वैलेंटिन 'टैटी' कैस्टेलानोस (2021) के बाद एमएलएस गोल्डन बूट जीतने वाले दूसरे अर्जेंटीनी खिलाड़ी हैं. उनका कुल योगदान एमएलएस इतिहास में दूसरे स्थान पर आता है, जो 2019 में एलएएफसी के लिए कार्लोस वेला के रिकॉर्ड 49 गोल + असिस्ट से बस एक कदम पीछे है. अब मेसी की नजरें एक

और उपलब्धि पर हैं — वह पहले ऐसे खिलाड़ी बन सकते हैं, जो लगातार एमएलएस 'एमवीपी' (मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर) अवॉर्ड जीतेंगे.

**प्लेऑफ में मुकाबला नैशविले से:** इंटर मियामी अब ईस्टर्न कॉन्फ्रेंस में तीसरे स्थान पर रहते हुए एमएलएस कप प्लेऑफ में पहुंच चुका है. पहले दौर में उनकी भिड़ंत एक बार फिर नंबर 6 सीड नैशविले से होगी, जो बेस्ट-ऑफ-3 सीरीज में खेला जाएगा. 2025 एमएलएस कप विजेता का एलान 6 दिसंबर को होगा.

**एमएलएस गोल्डन बूट का इतिहास:** एमएलएस गोल्डन बूट की शुरुआत 1996 में हुई थी. पहले इसे एक प्वाइंट सिस्टम के आधार पर दिया जाता था, जहां गोल के लिए 2 अंक और असिस्ट के लिए 1 अंक मिलते थे. हालांकि 2005 के बाद यह नियम बदलकर केवल गोलों की संख्या पर आधारित कर दिया गया.

## वर्ल्ड जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में तन्वी को रजत, फाइनल में थाई खिलाड़ी से हारीं

**एजेंसियां । गुवाहाटी**

भारत की उभरती हुई बैडमिंटन स्टार तन्वी शर्मा ने बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप 2025 के फाइनल में पहुंचकर देश का नाम रोशन किया, हालांकि खिताब मुकाबले में उन्हें हार का सामना करना पड़ा. तन्वी को थाईलैंड की दूसरी वरीय खिलाड़ी अन्यापत फिचितप्रीचासाक ने सीधे गेमों में 15-7, 15-12 से शिकस्त दी. मुकाबला 2 गेमों तक ही सीमित रहा, जिसमें थाई खिलाड़ी ने तेज शुरुआत की और पहला गेम महज 15-7 के स्कोर पर अपने नाम किया. दूसरे गेम में तन्वी ने वापसी की कोशिश की, लेकिन निर्णायक मौकों पर अनुभव और सटीक शॉट चयन के दम पर अन्यापत ने यह गेम भी 15-12 से जीतकर खिताब अपने नाम किया. यह मुकाबला इसलिए भी खास था क्योंकि 2023 की एशियाई अंडर-17 जूनियर चैंपियनशिप में तन्वी ने फिचितप्रीचासाक को हराकर चौंकाया था. हालांकि इस बार थाई खिलाड़ी ने पिछली हार का बदला पूरी तैयारी और आत्मविश्वास के साथ लिया. इस प्रदर्शन के साथ तन्वी शर्मा वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाली भारत की पांचवीं खिलाड़ी बन गई हैं. उनसे पहले यह सम्मान अपर्णा पोपट (1996), सायना नेहवाल (2006), सिरिल वर्मा (2015) और शंकर मुथुसामी (2022) को मिल चुका है.

## न्यूज अपडेट

### अवैध शराब कारोबार पर पुलिस का शिकंजा, तीन तस्कर गिरफ्तार

**बेतिया।** अवैध शराब कारोबार पर रोक लगाने के लिए बेतिया पुलिस ने शनिवार की देर रात बड़ी कार्रवाई की. रात्रि गश्ती के दौरान गुप्त सूचना के आधार पर लारियां जिरिया माई स्थान के पास छोटी नहर के समीप छापेमारी की गई, जहां से पुलिस ने 15 लीटर देसी चुलाई शराब के साथ तीन तस्करों को गिरफ्तार किया. गिरफ्तार आरोपियों की पहचान पराऊ टोला गांव निवासी गुड्डू यादव (पिता हरी यादव), दुबवलिया गांव निवासी रामचंद्र मुसहर (पिता युगा मुसहर) और बसवरिया गांव निवासी महंत मांझी (पिता सुखराम मांझी) के रूप में की गई है. पुलिस ने मौके से शराब निर्माण में प्रयुक्त अन्य सामान भी बरामद किया है. थानाध्यक्ष रमेश कुमार शर्मा ने बताया कि रविवार की सुबह तीनों आरोपियों के खिलाफ उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में बेतिया भेजा गया है. उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र में अवैध शराब कारोबार को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा.

### निर्दलीय उम्मीदवार विश्वनाथ सिंह का नामांकन रद्द, पुलिस ने लिया हिरासत में

**भोजपुर।** जिले की बड़हरा विधानसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार और जदयू नेता विश्वनाथ सिंह का नामांकन रद्द होने के बाद शनिवार को राजनीतिक हलचल तेज हो गई. नामांकन रद्द किए जाने से नाराज विश्वनाथ सिंह अनुमंडल कार्यालय के समक्ष धरने पर बैठ गए. करीब एक घंटे तक शांतिपूर्ण धरना देने के बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेकर नवादा थाना भेज दिया. धरना के दौरान विश्वनाथ सिंह ने कहा कि उनका सारा कागजात पूरी तरह सही था, फिर भी राजनीतिक दबाव में उनका नामांकन रद्द कर दिया गया. उन्होंने इसे लोकतंत्र की हत्या बताते हुए कहा कि उनके साथ अन्याय हुआ है. उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त से निष्पक्ष जांच की मांग की है. विश्वनाथ सिंह ने बताया कि वे सुबह से निर्वाचन कार्यालय में मौजूद थे, लेकिन शाम तीन बजे के बाद उन्हें सूचित किया गया कि उनका नामांकन रद्द कर दिया गया है. इस खबर से वे काफी आहत हुए और उन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया.

### ज्योति सिंह ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में की दावेदारी की घोषणा

**पटना।** भोजपुरी अभिनेता पवन सिंह के विवादों के बीच उनकी पत्नी ज्योति सिंह ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में उतरने का बड़ा फैसला किया है. सूत्रों के अनुसार, ज्योति सिंह काराकाट विधानसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं. उनके समर्थकों में इस कदम को लेकर खासा उत्साह देखा जा रहा है. बताया जा रहा है कि वे सोमवार को अपना नामांकन दाखिल कर सकती हैं. हाल ही में ज्योति सिंह के पिता रामबाबू सिंह ने कहा था कि यदि पवन सिंह उनकी बेटी को स्वीकार कर लेते हैं तो वह चुनाव नहीं लड़ेंगी, लेकिन यदि ऐसा नहीं होता है तो वे काराकाट से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनावी मैदान में उतरेंगी. ज्योति सिंह पिछले लोकसभा चुनाव से काराकाट क्षेत्र में सक्रिय हैं और वे लगातार स्थानीय कार्यक्रमों और जनता से मुलाकात करती रही हैं. कुछ समय पहले उन्होंने जन सुराज के प्रमुख प्रशांत किशोर से भी मुलाकात की थी, जहां चर्चा थी कि वे उनके समर्थित पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ सकती हैं. हालांकि, बातचीत सफल नहीं होने के बाद अब वे स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव में भाग लेंगी.

कांग्रेस नेत्री नैना कुमारी ने पार्टी के टिकट वितरण को लेकर संगठनात्मक नेताओं पर लगाए गंभीर आरोप, कहा

## टिकट बंटवारे में गड़बड़ी और धांधली हुई है

शुभम संदेश। गया



गया जिले की जिला परिषद अध्यक्ष और कांग्रेस नेत्री नैना कुमारी ने पार्टी के टिकट वितरण को लेकर संगठनात्मक नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए हैं. उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व ने मगध क्षेत्र में टिकट वितरण के दौरान राहुल गांधी की विचारधारा, सामाजिक न्याय के सिद्धांत और समावेशी विकास की भावना की अनदेखी की है. नैना कुमारी ने प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में गठबंधन के तहत मिली 60 सीटों में से मगध की सात सीटों में से छह एक ही समुदाय को और मात्र एक सीट वंचित वर्ग को दी गई है. उन्होंने इसे सामाजिक असंतुलन करार देते हुए कहा कि यह फैसला न केवल असंतुलित है बल्कि कांग्रेस की मूल विचारधारा के भी खिलाफ है. ₹मैं खुद एक अति पिछड़े वर्ग की महिला हूं, फिर भी मुझे मेरा हक नहीं दिया गया. यह न केवल मेरा अपमान है, बल्कि पूरे समुदाय के साथ अन्याय है,₹ नैना ने कहा. उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि टिकट बंटवारे में गड़बड़ी और धांधली हुई है, जिससे पार्टी की छवि धूमिल हो रही है. नैना कुमारी ने कहा कि राहुल गांधी ने बार-बार सामाजिक न्याय, महिलाओं, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के सशक्तिकरण की बात की है, लेकिन बिहार कांग्रेस के कुछ नेता निजी स्वार्थों के चलते उन सिद्धांतों की अनदेखी कर रहे हैं.

इससे पहले पटना के बिक्रम विधानसभा क्षेत्र के सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने टिकट बंटवारे के खिलाफ विरोध जताते हुए एयरपोर्ट पर कृष्णा अल्लावरु और राजेश राम को घेर लिया था. इस दौरान भारी हंगामा और मारपीट की घटनाएं भी सामने आई थीं, जिससे पार्टी की अंदरूनी कलह खुलकर सामने आ गई थी. नैना कुमारी ने कांग्रेस हाईकमान से अपील की है कि टिकट वितरण की प्रक्रिया की तत्काल समीक्षा की जाए और मगध क्षेत्र में सामाजिक संतुलन बहाल किया जाए. उन्होंने कहा कि अगर पार्टी ने जल्द सुधार नहीं किया तो इसका असर न केवल चुनावी प्रदर्शन पर पड़ेगा, बल्कि पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल भी टूटेगा. उन्होंने कहा, ₹मगध की धरती हमेशा न्याय, समानता और समरसता की प्रतीक रही है. यहां यदि वंचित वर्गों की अनदेखी की गई, तो यह कांग्रेस की आत्मा के साथ विश्वासघात होगा.₹ नैना ने चेतावनी दी कि यदि इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लिया गया, तो इससे कांग्रेस की राज्य में पकड़ कमजोर होगी और कार्यकर्ता खुद को ठगा हुआ महसूस करेंगे. बिहार कांग्रेस में टिकट वितरण को लेकर उभरा विवाद अब खुलकर सामने आ चुका है. नैना कुमारी की तीखी प्रतिक्रिया न केवल पार्टी के भीतर असंतोष को उजागर करती है, बल्कि यह संकेत भी देती है कि अगर शीर्ष नेतृत्व ने हस्तक्षेप नहीं किया, तो आगामी चुनावों में पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है.

### पूर्णिया के अमौर सीट से सबा जफर ही होंगे उम्मीदवार

**पूर्णिया।** जिले की अमौर विधानसभा सीट को लेकर जनता दल यूनाइटेड में पिछले 24 घंटों से चल रहा टिकट विवाद अब समाप्त हो गया है. पूर्व राज्यसभा सांसद मोहम्मद साबिर अली ने रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर साफ किया कि जदयू के अधिकृत प्रत्याशी सबा जफर ही बने रहेंगे. यह बयान उस समय आया जब शनिवार को मीडिया और सोशल मीडिया में खबरें आईं कि जदयू ने सबा जफर का टिकट काटकर साबिर अली को उम्मीदवार बना दिया है. इस दौरान सोशल मीडिया पर साबिर अली को सिंबल दिए जाने की तस्वीरें भी वायरल हो गई थीं, जिससे कार्यकर्ताओं और आम जनता के बीच भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई थी. स्थिति इतनी जटिल हो गई कि कई रिपोर्ट्स ने साबिर अली को जदयू का अंतिम उम्मीदवार मान लिया था, हालांकि सबा जफर पहले ही नामांकन दाखिल कर चुके थे.

## राजद की बदली रणनीति, भूमिहारों में पैठ बनाने में जुटे तेजस्वी

**पटना।** बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के मद्देनजर राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) का राजनीतिक रुख इस बार काफी बदलता नजर आ रहा है. पार्टी के नेता तेजस्वी यादव ने अब अपनी राजनीति का फोकस उन वर्गों पर भी बढ़ा दिया है, जिनसे कभी आरजेडी का संबंध दूरियों भरा रहा. खास तौर पर भूमिहार समाज के प्रति पार्टी की रणनीति में नरमी आई है. तेजस्वी यादव आरजेडी को अब किसी जाति विशेष की पार्टी के रूप में नहीं, बल्कि एक 'ए टू जेड' पार्टी के तौर पर पेश करना चाहते हैं. तेजस्वी यादव ने यह समझा है कि बिहार में भूमिहारों की संख्या कम हो सकती है, लेकिन राजनीतिक दृष्टिकोण से उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. इसी वजह से पिछले कुछ वर्षों में वे भूमिहार बहुल इलाकों में सक्रिय रहे हैं और पार्टी की पहुंच बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं. 2020 के विधानसभा चुनाव के बाद आरजेडी ने कई भूमिहार नेताओं को एमएलसी टिकट देकर इस बदलाव का संकेत दिया. इंजीनियर सौरभ, कार्तिक मास्टर और अजय सिंह जैसे नेता न सिर्फ पार्टी के उम्मीदवार बने, बल्कि तेजस्वी यादव का भरोसा भी जीत पाए.

कार्तिक मास्टर, जो पहले बाहुबली अनंत सिंह के करीबी माने जाते थे, अब तेजस्वी के मजबूत समर्थक बन गए हैं. मंत्री पद से इस्तीफा देने के बावजूद उन्होंने पार्टी का साथ नहीं छोड़ा. इसी तरह लक्खीसराय के एमएलसी अजय सिंह और इंजीनियर सौरभ भी पार्टी के प्रति वफादार बने हुए हैं और तेजस्वी के विश्वासपात्र हैं. जदयू के विधायक डॉ. संजीव कुमार ने 2024 में नीतीश कुमार की सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला था. अब आरजेडी ने उन्हें परबत्ता विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया है. इसके अलावा, बरबीघा के विधायक सुदर्शन सिंह, जो पहले जदयू के नेता थे, अब पार्टी से नाराज चल रहे हैं और माना जा रहा है कि वे निर्दलीय चुनाव लड़ सकते हैं.वहीं, वैशाली के बाहुबली नेता मुन्ना शुक्ला की बेटी शिवानी शुक्ला को आरजेडी ने लालगंज सीट से टिकट दिया है.

### पटना एयरपोर्ट रोड पर तेज रफ्तार कार पलटी, तीन घायल

**पटना।** रविवार सुबह पटना एयरपोर्ट रोड पर एक तेज रफ्तार कार अचानक डिवाइडर से टकराकर पलट गई. हादसे में ड्राइवर घायल हो गया, जबकि कार में सवार दो भाइयों को भी हल्की चोटें आई हैं. तीनों पटना एयरपोर्ट किसी परिजन को रिसीव करने जा रहे थे. इसी दौरान ड्राइवर को झपकी आ गई और कार का नियंत्रण बिगड़ गया. तेज रफ्तार में होने के कारण कार डिवाइडर से टकराने के बाद कई बार पलट गई. घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोगों की भीड़ जुट गई. पास में तैनात सीआईएसएफ के जवान तुरंत मौके पर पहुंचे और घायलों को कार से बाहर निकालकर रेस्क्यू किया. इसके बाद कार को सीधा किया गया. सूचना मिलते ही एयरपोर्ट थाना की पुलिस भी मौके पर पहुंची और घायल ड्राइवर पिंटू कुमार को अस्पताल भिजवाया. ड्राइवर ने बताया कि उसे नहीं पता चला कि अचानक क्या हुआ. स्थानीय लोगों का कहना है कि इस मार्ग पर आए दिन तेज रफ्तार के कारण हादसे होते रहते हैं, लेकिन प्रशासन की ओर से सख्ती नहीं बरती जाती.

टिकट न मिलने से नाराज राजद नेता मदन साह ने लालू-तेजस्वी पर साधा निशाना, कहा

## तेजस्वी बहुत घमंडी हैं, किसी से मिलते तक नहीं

शुभम संदेश। पटना



बिहार विधानसभा चुनाव में जैसे-जैसे राष्ट्रीय जनता दल (राजद) अपने उम्मीदवारों को चुनावी सिंबल दे रही है, वैसे-वैसे टिकट बंटवारे को लेकर बगावत और नाराज़गी के सुर तेज़ होते जा रहे हैं. रविवार को पटना के 10 सर्कुलर रोड स्थित लालू-राबड़ी आवास पर ऐसा ही एक नज़ारा देखने को मिला, जब टिकट की उम्मीद लगाए बैठे मधुबन क्षेत्र के मदन साह ने पार्टी नेतृत्व के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोल दिया. मदन साह, जो वर्षों से राजद से जुड़े रहे हैं, टिकट न मिलने के बाद भावनाओं पर काबू नहीं रख पाए. वे आवास पर पहुंचे और देखते ही देखते अपना कुर्ता फाड़कर ज़मीन पर लोट-लोट कर रोने लगे. जब मीडिया ने उनसे वजह पूछी तो उन्होंने कहा, "2020 में लालू जी ने मुझे रांची बुलाया था. उन्होंने कहा था कि मदन शाह ही रणधीर सिंह को हराएंगे. मीसा जी ने भी भरोसा दिलाया था कि टिकट मुझे मिलेगा. मैं 90 के दशक से पार्टी के लिए काम कर रहा हूं, लेकिन अब धोखा दिया गया." मदन साह ने तेजस्वी यादव और उनके करीबी सहयोगियों पर तीखा हमला बोला. उन्होंने आरोप लगाया कि टिकट बंटवारे में पारदर्शिता नहीं है और सब कुछ तेजस्वी यादव के सलाहकार संजय यादव और इंजीनियर सुनील मिलकर तय कर रहे हैं. "तेजस्वी बहुत घमंडी हैं, किसी से मिलते तक नहीं. मैंने अपनी जमीन बेच दी, लेकिन अब मुझे अपमान मिला. तेजस्वी यादव 25 सीटों पर सिमट जाएंगे, क्योंकि जनता सब देख रही है," मदन साह ने कहा. भावनात्मक होकर उन्होंने आगे कहा कि लालू प्रसाद यादव उनके "गुरु" हैं और उन्होंने खुद टिकट देने का वादा किया था. लेकिन अब टिकट भाजपा समर्थक संतोष कुशवाहा को दे दिया गया, जिसे मदन साह ने "बीजेपी का दलाल" बताया. उनका कहना था कि तेली समुदाय के समर्थन और जनसंख्या पर उन्होंने खुद सर्वे कराया था, लेकिन पार्टी ने उनकी मेहनत को दरकिनार कर दिया. कुर्ता फाड़ते हुए और रोते हुए मदन साह ने कहा, "हम मरने आए हैं, अब जीने का कोई मतलब नहीं. हमने पार्टी के लिए सब कुछ दिया, लेकिन बदले में अपमान मिला." राजद के अंदरूनी कलह और टिकट वितरण पर उठते सवालों के बीच यह घटना पार्टी के लिए सिरदर्द बन गई है.

## जन सुराज पार्टी ने जारी की 116 उम्मीदवारों की सूची
## गणितज्ञ से लेकर ट्रांसजेंडर तक को मिला मौका

शुभम संदेश। पटना



बिहार विधानसभा चुनावों को लेकर प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने अपनी रणनीति को अंजाम देते हुए अब तक 116 उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है. पार्टी ने पेशेवरों, हाईप्रोफाइल चेहरों और संतुलित जातीय प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखते हुए अपने उम्मीदवारों का चयन किया है. इसका मकसद पारंपरिक एनडीए और महागठबंधन की सीमाओं से परे जाकर मतदाताओं को आकर्षित करना है. पार्टी की सूची में कई चर्चित और विशिष्ट पृष्ठभूमि वाले चेहरे शामिल हैं. प्रसिद्ध गणितज्ञ के. सी. सिन्हा को पटना के कुम्हरार सीट से मैदान में उतारा गया है, जो भाजपा का मजबूत गढ़ माना जाता है. यहां कायस्थ वोट निर्णायक माने जाते हैं, और जन सुराज पार्टी इसी वर्ग पर अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है. भोजपुरी फिल्मों के लोकप्रिय गायक और ब्राह्मण समुदाय से आने वाले रितेश पांडे को करगहर से कांग्रेस विधायक संतोष मिश्रा के खिलाफ उतारा गया है. वहीं, पूर्व भाजपा विधायक किशोर कुमार मुन्ना सहरसा से पार्टी के उम्मीदवार हैं. पार्टी ने पेशेवर योग्यता और राजनीतिक विरासत को भी महत्व दिया है. पूर्व केंद्रीय मंत्री आर.सी.पी. सिंह की सुप्रीम कोर्ट वकील बेटी लता सिंह नालंदा के अस्थावां से चुनाव लड़ेंगी. पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की पोती जागृति ठाकुर मोरवा से मैदान में हैं और ईबीसी वोटों को ध्यान में रखकर उन्हें उतारा गया है. इसके अलावा छपरा से सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी जयप्रकाश सिंह, मटिहानी से आईजीआईएमएस के पूर्व निदेशक डॉ. अरुण कुमार, मुजफ्फरपुर से चिकित्सक डॉ. अमित कुमार दास और माझी से वरिष्ठ अधिवक्ता वाई. वी. गिरि जैसे अनुभवी पेशेवरों को भी टिकट मिला है. वहीं, भोरे से ट्रांसजेंडर प्रत्याशी प्रति किन्नर को उम्मीदवार बनाकर पार्टी ने समावेशिता की मिसाल पेश की है. जन सुराज पार्टी ने बताया कि उसके 116 उम्मीदवारों में से 31 अत्यंत पिछड़ा वर्ग (ईबीसी), 21 पिछड़ा वर्ग और 21 अल्पसंख्यक समुदाय से हैं.

## कारोबार

### दिवाली पर दिल्ली के कई रेलवे रिजर्वेशन काउंटर बंद रहेंगे

**नयी दिल्ली।** दिवाली के त्योहार को ध्यान में रखते हुए सोमवार, 20 अक्टूबर को दिल्ली में कई पैसेंजर रिजर्वेशन सिस्टम काउंटर बंद रहेंगे. कुछ काउंटर पूरे दिन बंद रहेंगे, जबकि कई स्थानों पर केवल शाम की शिफ्ट में काउंटर बंद किए जाएंगे. हालांकि, नई दिल्ली, दिल्ली मेन, हजरत निजामुद्दीन, आनंद विहार और दिल्ली सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशनों पर करंट रिजर्वेशन काउंटर सामान्य समय पर खुले रहेंगे, ताकि यात्रियों को तत्काल टिकट की सुविधा मिलती रहे. पूरे दिन बंद रहने वाले प्रमुख पीआरएस काउंटरों में संसद भवन, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, रेलवे बोर्ड, सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट शामिल हैं. ये स्थान विशेष सुरक्षा और प्रशासनिक दृष्टिकोण से संवेदनशील माने जाते हैं.

### मीशो को 6,600 करोड़ के आईपीओ की मिली मंजूरी

**नयी दिल्ली।** देश के तेजी से बढ़ते ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म मीशो को भारतीय बाजार नियामक सेबी से आईपीओ लाने की मंजूरी मिल गई है. कंपनी अब 6,600 करोड़ के इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग के जरिए शेयर बाजार में उतरने के लिए तैयार है. यह इस साल का सबसे बड़ा आईपीओ में से एक माना जा रहा है. मीशो की योजना दिसंबर 2025 तक स्टॉक एक्सचेंज में लिस्ट होने की है. इस आईपीओ में दो हिस्से होंगे. पहला हिस्सा, 4,250 करोड़ के नए शेयरों का होगा, जिससे मिलने वाली रकम कंपनी को सीधे मिलेगी. इसका इस्तेमाल मीशो अपने बिजनेस को विस्तार देने और अन्य व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करने में करेगी.

117 साल पुराने कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज की विदाई की तैयारी

## कभी बीएसई को देता था टक्कर

एजेंसी। नयी दिल्ली



भारत के सबसे पुराने और ऐतिहासिक स्टॉक एक्सचेंजों में से एक कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज (सीएसई) अब अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है. 117 साल पुराने इस प्रतिष्ठित एक्सचेंज ने इस वर्ष 20 अक्टूबर को संभवतः अपनी आखिरी काली पूजा और दिवाली मनाई. एक दशक से अधिक समय तक चली कानूनी लड़ाई और फिर से संचालन की कोशिशों के बाद अब सीएसई ने स्वेच्छा से ट्रेडिंग गतिविधियों से बाहर निकलने का निर्णय लिया है. सीएसई की स्थापना 1908 में हुई थी और एक समय ऐसा था जब यह ट्रेडिंग वॉल्यूम के मामले में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज को कड़ी टक्कर देता था. यह कोलकाता की समृद्ध वित्तीय विरासत और पूर्वी भारत के आर्थिक विकास का एक अहम केंद्र माना जाता था. सीएसई के पतन की शुरुआत 2001 में केतन पारेख घोटाले से मानी जाती है. इस घोटाले से जुड़ा 120 करोड़ रुपये का मामला सामने आया, जिसने एक्सचेंज में पेमेंट संकट खड़ा कर दिया. कई ब्रोकर अपने सेटलमेंट दायित्व पूरे नहीं कर सके, जिससे निवेशकों का भरोसा बुरी तरह टूट गया और सीएसई की साख को गहरा आघात पहुंचा. इसके बाद 2013 में सेबी ने नियामकीय उल्लंघनों के चलते एक्सचेंज में ट्रेडिंग पर रोक लगा दी.

25 अप्रैल 2025 को आयोजित असाधारण आम बैठक में सीएसई के शेयरधारकों ने स्टॉक एक्सचेंज के रूप में कारोबार से बाहर निकलने के प्रस्ताव को मंजूरी दी. इसके बाद सीएसई ने सेबी को लाइसेंस वापसी के लिए आवेदन किया. सेबी ने सीएसई की संपत्तियों के मूल्यांकन के लिए राजवंशी एंड एसोसिएट्स को वैल्यूएशन एजेंसी नियुक्त किया. एक्सचेंज की कीमती 3 एकड़ जमीन, जो कोलकाता के EM बाईपास पर स्थित है, को सृजन ग्रुप को 253 करोड़ रुपये में बेचने की मंजूरी मिल गई है. हालांकि सीएसई एक स्टॉक एक्सचेंज के रूप में बंद हो रहा है, लेकिन यह एक होल्डिंग कंपनी के रूप में कार्य करता रहेगा. इसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी सीएसई, सीसीएमपीएल, बीएसई और एनएसई की सदस्यता के साथ ब्रोकिंग सेवाएं जारी रखेगी. एक्सचेंज ने अपने सभी स्थायी कर्मचारियों के लिए वॉलंटरी रिटायरमेंट स्कीम शुरू की, जिसके तहत कुल 20.95 करोड़ रुपये का एकमुश्त भुगतान किया गया. इस योजना से कंपनी को हर साल लगभग 10 करोड़ रुपये की बचत होगी. सभी कर्मचारियों ने इस योजना को स्वीकार किया, हालांकि कुछ को आवश्यक अनुपालन कार्यों के लिए संविदा पर रखा गया है. इस तरह, एक ऐतिहासिक संस्था का एक युग समाप्त हो रहा है, लेकिन सीएसई की विरासत एक ब्रोकिंग प्लेटफॉर्म और कॉर्पोरेट इकाई के रूप में आगे जारी रहेगी.

### दिवाली पर टियर-3 शहर बने ऑनलाइन खरीदारी के हीरो

**नयी दिल्ली।** इस साल दिवाली के त्योहार पर भारत के गैर-मेट्रो शहरों, खासकर टियर-3 शहरों ने ऑनलाइन खरीदारी में जबरदस्त भागीदारी दिखाई. लॉजिस्टिक्स इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म 'क्लिकपोस्ट' द्वारा जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, पूरे ई-कॉमर्स कारोबार में 74.7% ऑर्डर छोटे शहरों से आए, जिनमें अकेले टियर-3 शहरों का योगदान 50.7% रहा. रिपोर्ट में 4.25 करोड़ शिपमेंट के डाटा का विश्लेषण किया गया. टियर-2 शहरों से 24.8% ऑर्डर मिले, जबकि मेट्रो और टियर-1 शहरों की तुलना में छोटे शहरों की भागीदारी काफी अधिक रही. क्लिकपोस्ट के सीईओ नमन विजय ने कहा, 'भारत अब खुदरा कारोबार के नए युग में प्रवेश कर रहा है. टियर-3 शहर अब मेट्रो को पीछे छोड़ते दिख रहे हैं.' त्योहारों के दौरान फैशन और कॉस्मेटिक उत्पादों की मांग भी तेजी से बढ़ी. दुर्गा पूजा में फैशन की मांग 14.3% बढ़ी, जबकि करवा चौथ पर कॉस्मेटिक्स की बिक्री ने फैशन को भी पीछे छोड़ दिया. इतनी भारी मांग के बावजूद देश की लॉजिस्टिक्स कंपनियों ने शानदार प्रदर्शन किया और औसतन 2.83 दिन में डिलीवरी की.

### भारत दुर्लभ खनिजों की सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए उठाएगा बड़े कदमः पीयूष गोयल

**नयी दिल्ली।** केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को कहा कि भारत दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक प्रयास कर रहा है. उन्होंने बताया कि सरकार चिली और पेरू जैसे खनिज-समृद्ध देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत कर रही है, जबकि घरेलू स्तर पर खनिजों की खोज और प्रोसेसिंग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है. गोयल एसोचैम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे, जहां उन्होंने भारतीय उद्योगों से आह्वान किया कि वे सप्लाई चेन को मजबूत और विविध बनाएं. उन्होंने जापान और कोरिया का उदाहरण देते हुए कहा कि ये देश अपने उद्योगों को प्राथमिकता देते हैं और घरेलू उत्पादों को तरजीह देते हैं, जबकि भारत में थोड़ी भी कीमत कम होने पर आयात को प्राथमिकता दी जाती है. मंत्री ने बताया कि वर्तमान में चीन द्वारा दुर्लभ खनिजों के निर्यात पर लगाई गई पाबंदियों के कारण वैश्विक सप्लाई चेन बाधित हो रही है. ऐसे में भारत ऑस्ट्रेलिया, चिली और पेरू जैसे देशों से साझेदारी कर इन खनिजों की वैकल्पिक आपूर्ति सुनिश्चित करने में जुटा है.

### पिछले सप्ताह शेयर बाजार में आई तेजी से टॉप 10 कंपनियों में से सात का बाजार मूल्यांकन बढ़ा

**नयी दिल्ली।** पिछले सप्ताह शेयर बाजार में आई तेजी से देश की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से सात के संयुक्त बाजार पूंजीकरण में दो लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई. बीएसई सेंसेक्स 1,451 अंक यानी 1.75 प्रतिशत उछला, जिससे कंपनियों को लाभ हुआ. रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 47,000 करोड़ रुपये बढ़कर 19.17 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो शीर्ष कंपनियों में सर्वाधिक है. भारती एयरटेल का मूल्यांकन 41,000 करोड़ रुपये बढ़कर 11 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया. आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 40,123 करोड़ रुपये बढ़कर 10.26 लाख करोड़, एचडीएफसी बैंक का 33,185 करोड़ की बढ़त के साथ 15.40 लाख करोड़ और बजाज फाइनेंस का 28,903 करोड़ की वृद्धि से 6.65 लाख करोड़ रुपये हो गया. हिंदुस्तान यूनिलीवर और भारतीय स्टेट बैंक को भी क्रमशः 17,774 करोड़ और 7,938 करोड़ रुपये का लाभ हुआ. हालांकि, टीसीएस, इंफोसिस और एलआईसी के बाजार मूल्यांकन में क्रमशः 23,807 करोड़, 30,306 करोड़ और 7,684 करोड़ रुपये की गिरावट आई.

चांदी | भारत में धनतेरस पर चांदी की बंपर बिक्री से लंदन तक मचा हड़कंप

## धनतेरस पर अंतरराष्ट्रीय चांदी बाजार में आया आपूर्ति संकट

एजेंसी। नयी दिल्ली



भारत में धनतेरस के मौके पर चांदी की खरीदारी ने इस बार सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए. सिर्फ देश ही नहीं, इसका असर लंदन के अंतरराष्ट्रीय चांदी बाजार तक पहुंच गया. भारत की सबसे बड़ी कीमती धातु रिफाइनरी एमएमटीसी-पंप इंडिया के ट्रेडिंग हेड विपिन रैना के मुताबिक, उनके 27 साल के करियर में उन्होंने चांदी की ऐसी मांग कभी नहीं देखी. हालात यह हो गए कि रिफाइनरी का चांदी का स्टॉक इतिहास में पहली बार पूरी तरह से खत्म हो गया. रैना ने बताया कि भारतीय खरीदार विशेष रूप से लक्ष्मी पूजन के लिए चांदी खरीदने उमड़ पड़े थे. अचानक आई इस भारी मांग ने उद्योग को चौंका दिया. इस उछाल के पीछे एक वजह यह भी रही कि चीन, जो चांदी आपूर्ति का एक बड़ा स्रोत है, एक सप्ताह की छुट्टी पर था. इससे वैश्विक आपूर्ति पर दबाव और बढ़ गया. भारत में चांदी पर प्रीमियम तेजी से बढ़ा. आमतौर पर जो प्रीमियम कुछ सेंट प्रति औंस होता था, वह 0.50 डॉलर से ऊपर और फिर 1 डॉलर प्रति औंस तक पहुंच गया. इसके चलते भारतीय डीलरों ने चांदी की आपूर्ति के लिए लंदन का रुख किया. लेकिन वहां भी स्थिति कुछ अलग नहीं थी.

लंदन के बाजार में चांदी की भारी कमी हो गई. वहां के प्रमुख बैंकों ने कीमतें बताना बंद कर दिया क्योंकि उन्हें ग्राहकों की शिकायतों और गुस्से भरे कॉल्स का सामना करना पड़ रहा था. व्यापारियों के अनुसार, बाजार लगभग टूटने की कगार पर पहुंच गया था. लंदन की तिजोरियों में मौजूद चांदी का अधिकांश हिस्सा एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड निवेशकों के पास था, जिसे बाजार में नहीं लाया जा सकता था. ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, 9 अक्टूबर तक लंदन का चांदी बाजार अब तक के सबसे बड़े संकट से गुजर रहा था. रातोंरात चांदी उधार लेने की लागत सालाना 200% तक पहुंच गई थी. इसके अलावा, बिड-आस्क स्प्रेड (खरीद और बिक्री कीमत का अंतर) इतना बढ़ गया कि सामान्य व्यापार करना भी मुश्किल हो गया. मेटल्स फोकस की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर की शुरुआत में लंदन के बाजार में फ्री फ्लोट चांदी घटकर सिर्फ 150 मिलियन औंस रह गई थी, जबकि आम तौर पर यह आंकड़ा 250 मिलियन औंस के आसपास होता है. इससे यह स्पष्ट हो गया कि चांदी की मांग ने न केवल भारतीय बाजार, बल्कि वैश्विक बाजारों को भी हिला कर रख दिया है. विशेषज्ञों के अनुसार, यदि यह स्थिति बनी रही तो चांदी की कीमतों में और तेजी देखने को मिल सकती है, जिससे निवेशकों और उपभोक्ताओं दोनों को आगे सावधानी बरतनी होगी.

## धनतेरस के बाद सर्राफा बाजार में हुआ सपाट कारोबार

**नयी दिल्ली।** धनतेरस के अगले दिन घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोना और चांदी बिना किसी बदलाव के सपाट स्तर पर कारोबार करते रहे. कीमत में बदलाव नहीं होने की वजह से देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 1,30,860 रुपये से लेकर 1,31,010 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार करता रहा. इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,19,950 रुपये से लेकर 1,20,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिका. इसी तरह चांदी की कीमत में भी कोई परिवर्तन नहीं होने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,72,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिकी. साप्ताहिक आधार पर देखा जाए तो सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के दौरान जबरदस्त तेजी का रुख बनने के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोने के भाव में 5,780 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की उछाल दर्ज की गई है. इसी तरह 22 कैरेट सोना भी पिछले एक सप्ताह के दौरान 5,300 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हुआ है. सोने के विपरीत पूरे सप्ताह के कारोबार में चांदी के भाव में साप्ताहिक आधार पर 8,000 रुपये प्रति किलोग्राम की कमजोरी आ गई है.

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,31,010 प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार किया, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,20,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई. वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,30,860 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,19,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिका. इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,30,910 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,20,000 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई. इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 1,30,860 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,19,950 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिका. कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 1,30,860 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,19,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार रहा.

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 1,31,010 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,20,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिका. पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,30,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर, जबकि 22 कैरेट सोना 1,20,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिका. जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,31,010 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,20,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है.

**दीपावली और छठ से पहले दिल्ली के रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की भारी भीड़**

नई दिल्ली । दीपावली और छठ पर्व से पहले दिल्ली के रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है . राजधानी के आनंद विहार, नई दिल्ली, सराय रोहिल्ला और हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशनों पर घर जाने वाले यात्रियों का रेला उमड़ पड़ा है . सुबह से ही प्लेटफॉर्म और टिकट काउंटरों पर लंबी कतारें लगी हैं . ट्रेनों में जगह न मिलने के कारण कई यात्री वेटिंग लिस्ट में सफर करने को मजबूर हैं . रेलवे अधिकारियों के अनुसार पूर्व दिशा और बिहार जाने वाली ट्रेनों में आरक्षण फुल है . आनंद विहार रेलवे स्टेशन से मिली तस्वीरों में भारी भीड़ दिखाई दे रही है, जहां यात्री अपने परिवारों के साथ ट्रेनों का इंतजार कर रहे हैं . रेलवे ने त्योहारों को देखते हुए कई स्पेशल ट्रेनों का संचालन शुरू किया है, ताकि यात्रियों को घर पहुंचने में सुविधा मिल सके .

## न्यूज अपडेट

### सिंध में हिंदू नाबालिग लड़की का धर्म परिवर्तन कराकर बुजुर्ग से करा दी शादी

**सिंध।** पाकिस्तान के सिंध प्रांत के बदीन जिले की एक बहरी और गूंगी हिंदू नाबालिग लड़की, जो करीब नौ दिन पहले लापता हो गई थी, अब अचानक मीडिया के सामने आ गई है. बताया जा रहा है कि लड़की के पास इस्लाम धर्म अपनाने का प्रमाणपत्र था और वह एक मुस्लिम व्यक्ति के साथ दिखाई दी, जिससे उसने कथित तौर पर शादी कर ली है. लड़की शनिवार को बदीन प्रेस क्लब में अपने कथित पति के साथ पहुंची, जहां उसने प्रमाणपत्र दिखाया और तस्वीरें ली गईं.यह नाबालिग बदीन जिले के कोरोहा कस्बे की रहने वाली है. उसके माता-पिता ने उसकी गुमशुदगी के बाद स्थानीय पुलिस थाने में अपहरण की शिकायत दर्ज कराई थी. पिता ने सवाल उठाया है कि एक बहरी और गूंगी नाबालिग लड़की, जो अपनी मर्जी ठीक से जाहिर भी नहीं कर सकती, वह कैसे एक ऐसे व्यक्ति से विवाह कर सकती है, जो कथित रूप से नशे के धंधे में शामिल है और जिसकी पहले से सात बेटियां हैं.

### गाजा में तबाही के बाद जिंदगी की जद्दोजहद : पानी व बिजली का संकट

**तेलअवीव।** गाजा पट्टी में जारी लंबे संघर्ष और हालिया युद्धविराम के बाद लोग अब अपनी बिखरी ज़िंदगियों को दोबारा जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं. 35 वर्षीय नूर आबेद, जो कभी उत्तरी गाजा में रहते थे, अब जीपीएस की मदद से अपने पुराने घर की जगह तलाश रहे हैं. वह जब साइकिल पर सेंट्रल गाजा से अपने पुराने इलाके की ओर निकले, तो उन्हें वहां सिर्फ रेत के टीले और मलबे के ढेर मिले. उनके जान-पहचान की सभी इमारतें पूरी तरह तबाह हो चुकी थीं.अबेद फिलहाल अल-अजहर विश्वविद्यालय के टेंट में रह रहे हैं, जिसे शरणार्थी शिविर में बदल दिया गया है. उनके परिवार के कुछ सदस्य अब तक वापस नहीं लौटे हैं, क्योंकि उन्हें अभी भी डर है कि हमास और इजरायल के बीच युद्धविराम कब तक कायम रहेगा.

### ढाका इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लगी आग पर 7 घंटे बाद काबू पाया गया

**ढाका।** हज़रत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (एचएसआईए) के कार्गो विलेज में शनिवार दोपहर लगी भीषण आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया है. देर रात हवाई अड्डे से उड़ानों का संचालन दोबारा शुरू हो गया. आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है.ढाका स्थित हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के कार्गो विलेज एरिया में शनिवार दोपहर करीब सवा दो बजे भीषण आग लग गई थी. आग इतनी तेजी से फैली कि सभी उड़ाने तुरंत रोकनी पड़ीं. आसमान में उठा काला धुआं आसपास के इलाकों में फैल गया.इस दौरान एचएसआईए से विमानों का संचालन रोक दिया गया. सतर्कता बरतते हुए कई घरेलू विमानों को ढाका में उतारने के बजाय चटगांव भेज दिया गया. अग्निशमन सेवा और हवाई अड्डा प्राधिकरण के त्वरित और साझा प्रयासों के साथ करीब 7 घंटे बाद आग पर काबू पाया गया.

### अरुणाचल में अपहृत दो श्रमिकों को उग्रवादियों से असम राइफल्स ने छुड़ाया

**इटानगर।** अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले में 'नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड- खापलांग' (एनएससीएन-के) ग्रुप के हथियारबंद उग्रवादियों द्वारा अपहृत किए गए दो श्रमिकों को असम राइफल्स की खोंसा बटालियन ने करीब 12 घंटे के अंदर बिना किसी नुकसान के बचा लिया है.रविवार को प्रदेश पुलिस मुख्यालय के सूत्रों के मुताबिक, तिरप जिले के दादम सर्कल के लाहू गांव में एक रोड कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट में लगे मेसर्स अग्रवाला कंस्ट्रक्शन कंपनी के दो श्रमिकों को शनिवार की शाम करीब 4.00 बजे एनएससीएन (के) के करीब सात से आठ हथियारबंद उग्रवादियों के एक ग्रुप ने अपहरण कर लिया. बीती रात (शनिवार) भरोसेमंद इंटेलिजेंस जानकारी के आधार पर, असम राइफल्स की खोंसा बटालियन ने लोंगडिंग पुलिस के साथ मिलकर बड़ी सतर्कता के साथ एक संयुक्त बचाल अभियान चलाया.

### केंद्र ने गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान व नागालैंड में नोटरी की संख्या बढ़ाई

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने चार राज्यों में नोटरी पब्लिक की संख्या बढ़ा दी है. विधि और न्याय मंत्रालय के विधि मामलों के विभाग ने नोटरीज(संशोधन) नियम, 2025 को अधिसूचित किया है. यह अधिसूचना 17 अक्तूबर को जी.एस.आर. 763(ई)के रूप में जारी की गई. नए नियम राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से लागू हो गए हैं.केंद्रीय कानून और न्याय मंत्रालय के अनुसार, सरकार ने गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान और नागालैंड में नोटरी की अधिकतम संख्या बढ़ाने का फैसला लिया है. गुजरात में 2900 से बढ़ाकर 6000 तमिलनाडु में 2500 से बढ़ाकर 3500 राजस्थान में 2000 से बढ़ाकर 3000 और नागालैंड में 200 से बढ़ाकर 400 नोटरी की संख्या की गई है.यह बदलाव नोटरीज अधिनियम, 1952 की धारा 15 के तहत किया गया है. मंत्रालय ने बताया कि राज्य सरकारों से मिले अनुरोधों को देखते हुए यह कदम उठाया गया है. राज्यों में जनसंख्या और प्रशासनिक इकाइयों की संख्या बढ़ने के साथ नोटरी सेवाओं की मांग में भी तेजी आई है.

### चीन ने यूएस की एनएसए पर लगाया साइबर हमले का आरोप, कहा

# देश के नेशनल टाइम सेंटर को बनाया गया है निशाना

**एजेंसी।बीजिंग**

चीन ने अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनएसए) पर गंभीर साइबर हमले का आरोप लगाया है. रविवार को चीन के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्रालय ने दावा किया कि अमेरिका की खुफिया एजेंसी ने देश के ₹नेशनल टाइम सेंटर₹ को निशाना बनाते हुए संवेदनशील सूचनाएं चुराईं और चीन की प्रमुख नेटवर्क प्रणालियों में घुसपैठ करने की कोशिश की.

नेशनल टाइम सेंटर, जो चीन के आधिकारिक समय मानक को निर्धारित और वितरित करता है, देश की संचार, वित्त, बिजली, परिवहन और रक्षा प्रणालियों के लिए अहम भूमिका निभाता है. मंत्रालय ने चेताया कि इस केंद्र को नुकसान पहुंचाना व्यापक राष्ट्रीय व्यवधान का कारण बन सकता था.चीन का आरोप है कि यह साइबर हमला 2022 में शुरू हुआ, जब अमेरिकी एजेंसी एनएसए ने एक विदेशी मोबाइल फोन ब्रांड की मैसेजिंग सेवाओं की कमजोरियों का फायदा उठाकर सेंटर के कर्मचारियों के डिवाइसेज़ से संवेदनशील डेटा चुराया. मंत्रालय ने उस ब्रांड का नाम नहीं लिया, लेकिन दावा किया कि उसके पास पर्याप्त सबूत हैं जो यह दिखाते हैं कि हमले कैसे किए गए.राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्रालय के अनुसार, एनएसए ने चीन की आंतरिक नेटवर्क प्रणालियों को निशाना बनाने के लिए कुल 42 प्रकार के विशेष साइबर हमले उपकरणों का इस्तेमाल किया. मंत्रालय ने यह भी बताया कि 2023 और 2024 में अमेरिकी एजेंसी ने फिर से प्रमुख समय प्रणाली में सेंध लगाने की कोशिश की.

एक वीचैट पोस्ट में चीन के सुरक्षा मंत्रालय ने अमेरिका पर पलटवार करते हुए कहा, ₹अमेरिका बार-बार चीनी साइबर खतरों की बात करता है, लेकिन असल में वह खुद वही गतिविधियां अंजाम देता है, जिनका वह दूसरों पर आरोप लगाता है.₹चीन का यह भी कहना है कि अमेरिका की इन हरकतों का उद्देश्य चीन के तकनीकी और आर्थिक ढांचे को कमजोर करना है. मंत्रालय ने हालांकि सबूतों को सार्वजनिक नहीं किया, लेकिन दावा किया कि जांच रिपोर्ट जल्द सामने लाई जाएगी.बीजिंग स्थित अमेरिकी दूतावास ने चीन के इन आरोपों पर फिलहाल कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है. गौरतलब है कि अमेरिका और पश्चिमी देशों ने भी पहले चीन पर सरकारी समर्थन प्राप्त हैकरों द्वारा पत्रकारों, सरकारी अधिकारियों और कंपनियों को निशाना बनाने का आरोप लगाया है.यह नया आरोप ऐसे समय पर सामने आया है जब अमेरिका और चीन के बीच व्यापार, प्रौद्योगिकी और ताइवान को लेकर पहले से ही तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है. विशेषज्ञों का मानना है कि यह मामला दोनों देशों के बीच साइबर युद्ध और कूटनीतिक संबंधों को और अधिक जटिल बना सकता है.यदि चीन द्वारा लगाए गए ये आरोप सही साबित होते हैं, तो यह मामला अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा मोड़ साबित हो सकता है.

### इस वर्ष रिकॉर्ड यात्रियों ने आदि कैलाश के किए दर्शन

**देहरादून।** नरेन्द्र मोदी के आदि कैलाश जाने के बाद श्रद्धालुओं का आदि कैलाश यात्रा को लेकर रुझान बढ़ा है. आदि कैलाश की इस वर्ष यात्रा ने पिछले वर्षों का रिकार्ड तोड़ा है. इस साल 31 हजार 5 सौ 98 यात्री आदि कैलाश और ओम पर्वत के दर्शन कर चुके हैं.पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने बताया कि देवभूमि उत्तराखंड में अध्यात्मिक सुख और शांति की तलाश में श्रद्धालुओं के कदम तेजी से बढ़ रहे हैं. आदि कैलाश यात्रा को और अधिक व्यवस्थित किया जाएगा ताकि यात्रियों को यात्रा मार्ग पर सभी सुविधाएं उपलब्ध हों. वहीं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भी यात्रा सुविधाओं के विस्तार पर जोर दिया है.पिथौरागढ़ जिले में स्थित आदि कैलाश को छोटा कैलाश, शिव कैलाश, बाबा कैलाश व जोंगलिंगकोंग चोटी के नाम से जाना जाता है. हिमालय का यह हिस्सा हिन्दू शास्त्रों में अत्यंत पवित्र माना जाता है. यहां तक कहा गया है कि जिसने आदि कैलाश के दर्शन कर लिए उसने साक्षात शिव का सानिध्य प्राप्त कर लिया. पंच कैलाश में आदि कैलाश दूसरे स्थान पर है. बता दें कि पंच कैलाश मंल प्रथम कैलाश (तिब्बत), द्वितीय आदि कैलाश, ततीय श्रीखंड या शिखर कैलाश, चतुर्थ किन्नौर कैलाश और पंचम कैलाश मणि महेश कैलाश है. यहां गौरीकुंड व पार्वती नाम से दो ताल हैं.

### महाराष्ट्र के नासिक में कर्मभूमि एक्सप्रेस से गिरकर दो की मौत, एक घायल, इनकी पहचान नहीं हो पायी है

**मुंबई।** महाराष्ट्र के नासिक रोड स्टेशन के पास बीती रात मुंबई लोकमान्य तिलक टर्मिनस से बिहार के रक्सौल जा रही कर्मभूमि एक्सप्रेस से गिरकर दो युवकों की मौत हो गई और एक घायल हो गया . इस घटना में घायल युवक का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है. घटना की छानबीन नासिक रोड पुलिस स्टेशन की टीम कर रही है.नासिक रोड पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ निरीक्षक जितेंद्र सपकाले ने रविवार को बताया कि कर्मभूमि एक्सप्रेस से तीन युवकों के गिरने की जानकारी मिलते ही वे पुलिस उपनिरीक्षक माली और कांस्टेबल भोले एक दल के साथ घटनास्थल पर पहुँचे. भुसावल जाने वाली पटरी पर किलोमीटर 190/1 और 190/3 के बीच दो युवकों के शव और एक युवक गंभीर रूप से घायल पाया गया. घायल युवक को तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया.मृतकों और घायल युवकों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है. दीपोत्सव के मद्देनजर उत्तर भारत जाने वाली ट्रेनों में भारी भीड़ होती है, इसलिए प्राथमिक अनुमान है कि दरवाजे के पास खड़े युवक भीड़ के कारण अपना संतुलन खो बैठे और गिर गए. यह पता लगाने के लिए जांच चल रही है कि युवक त्योहार मनाने बिहार अपने गाँव जा रहे थे या विधानसभा चुनाव में मतदान करने जा रहे थे.

### 14,ताइवान: चेंग ली-चुन बनीं केएमटी की नई अध्यक्ष, चीन से संबंधों की दिशा अब तय करेंगी

**ताइपे।** ताइवान की मुख्य विपक्षी पार्टी 'नेशनलिस्ट पार्टी' (केएमटी) ने शनिवार को हुए कड़े मुकाबले में पूर्व सांसद चेंग ली-चुन को अपना नया अध्यक्ष चुन लिया. इस चुनाव में चीन की कथित दखलंदाजी के आरोप लगे थे. चेंग एकमात्र महिला उम्मीदवार थीं और उन्होंने सबसे ज्यादा मत हासिल कर ताइपे के पूर्व मेयर हाउ लुंग-बिन समेत पांच अन्य उम्मीदवारों को हराया.चेंग खुद को एक बदलावकारी नेता के रूप में पेश कर रही हैं. उन्होंने अपने प्रचार में पार्टी को 'भेड़' से 'शेर' बनाने की बात कही थी. चेंग नवंबर में अपना पद संभालेंगी और 2026 के स्थानीय चुनावों के साथ-साथ 2028 के राष्ट्रपति चुनावों में पार्टी का नेतृत्व करेंगी.केएमटी पार्टी चीन से करीबी संबंधों के लिए जानी जाती है. हालांकि, पिछले तीन राष्ट्रपति चुनावों में उसे स्वतंत्रता समर्थक डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) से हार मिली है. फिर भी संसद में उसकी मजबूत स्थिति बनी हुई है और हालिया उपचुनावों में उसे जीत भी मिली है.चुनाव जीतने के बाद चेंग ने कहा कि विदेश नीति में पार्टी समानता, सम्मान और पारस्परिक लाभ के सिद्धांतों पर चलेगी. उन्होंने राष्ट्रपति लाई चिंग-ते के रक्षा बजट बढ़ाने के प्रस्ताव का विरोध किया है. खास बात यह है कि चेंग कभी डीपीपी की सदस्य भी रह चुकी हैं, जिससे उनका नेतृत्व और भी दिलचस्प हो जाता है.

### ड्रग तस्करी में लिप्त संदिग्ध पनडुब्बी को किया नष्ट

**वॉशिंगटन।** अमेरिका ने कैरेबियाई जल क्षेत्र में एक संदिग्ध पनडुब्बी को निशाना बनाकर नष्ट कर दिया, जिसमें फेंटानिल और अन्य मादक पदार्थ भरे हुए थे. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को इस कार्रवाई की पुष्टि करते हुए कहा कि यह पनडुब्बी अमेरिका की ओर एक जाना-माना ड्रग तस्करी मार्ग अपनाकर बढ़ रही थी. ट्रंप के मुताबिक, इस ऑपरेशन में चार ड्रग तस्कर सवार थे, जिनमें से दो मारे गए जबकि दो को हिरासत में लेकर उनके मूल देश कोलंबिया और इक्वाडोर भेजा जा रहा है.ट्रंप ने अपने ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म पर लिखा, ₹एक बड़ी मात्रा में ड्रग्स ले जा रही पनडुब्बी को नष्ट करना मेरे लिए गर्व की बात है. अगर यह अमेरिका पहुंच जाती, तो इसमें मौजूद ड्रग्स से कम से कम 25 हजार अमेरिकी नागरिकों की जान जा सकती थी.₹ उन्होंने यह भी कहा कि ड्रग तस्करी के खिलाफ यह अभियान जारी रहेगा.कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने भी पुष्टि की कि एक कोलंबियाई नागरिक को अमेरिका से वापस भेजा गया है और उसके खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई की जाएगी. हालांकि अमेरिका ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया कि यह पनडुब्बी किस स्थान से आ रही थी और इसके खिलाफ सैन्य कार्रवाई के पीछे क्या ठोस सबूत थे.इस हमले को ट्रंप प्रशासन की नार्को-तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा माना जा रहा है.

### छत्तीसगढ़ में आ रहे दूसरे राज्यों से नक्सली, सीमाई इलाके बने नए ठिकाने

**जगदलपुर।** छत्तीसगढ़ में नक्सली संगठन के कमजोर पड़ने के कारण अब दूसरे राज्यों से नक्सलियों को यहां भेजा जा रहा है. आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, झारखंड और केरल के संगठन से जुड़े लोग छत्तीसगढ़ पहुंच रहे हैं. नक्सलियों के बड़े नेता सुरक्षा बलों के लगातार ऑपरेशन की वजह से हथियार छिपाकर यहां के बड़े शहरों में रहने लगे हैं. इस बाबत बस्तर संभाग के आईजी ने कहा कि पुलिस और सुरक्षा एजेंसी सतर्क हैं.पुलिस सूत्रों का कहना है छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के सीमाई इलाकों में ये नक्सली झुग्गी-बस्तियों और लेबर क्वार्टर में रहकर सरकार की गतिविधियों पर नजर रख रहे हैं. हालांकि कई बड़े नेता राज्य से बाहर चले गए हैं लेकिन बाकी बचे हुए छोटे कैडर सदस्य भी शहरों की ओर रुख कर रहे हैं. वे छिपकर संगठन को फिर से मजबूत करने की कोशिश में हैं. छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के सीमाई इलाके अब इन नक्सलियों के नए ठिकाने बन गए हैं. उन्होंने इन इलाकों को अपने छिपने की सुरक्षित जगहें बना लिया है. एक तरफ जहां छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में बीते तीन दिनों के भीतर पोलित ब्यूरो सदस्य एवं सीआरबी सचिव भूपति और केंद्रीय समिति सदस्य तथा दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (डीकेएसजेडसी) प्रवक्ता रूपेश उर्फ विकल्प सहित 271 माओवादियों के सामूहिक आत्मसमर्पण से नक्सली संगठन की कमर टूट चुकी है.

# पाकिस्तान और अफगानिस्तान युद्ध विराम पर सहमत, दोहा में हुई उच्चस्तरीय वार्ता

**एजेंसियां।दोहा**

कतर की राजधानी दोहा में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच हुई एक उच्चस्तरीय वार्ता में तत्काल प्रभाव से संघर्ष विराम को लेकर सहमति बनी है. संघर्ष विराम के प्रभावी कार्यान्वयन पर चर्चा के लिए दोनों देशों के प्रतिनिधि अगले चरण में दोहा और इस्लामाबाद में बैठक करेंगे. दोनों देशों के बीच सीमा पर पिछले एक पखवाड़े से चल रहा टकराव लगातार गंभीर रूप ले रहा था जिसमें दोनों तरफ से सैन्यकर्मियों के साथ-साथ आम लोगों की भी मौत हुई.कतर के विदेश मंत्रालय की तरफ से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जारी बयान के मुताबिक उसके और तुर्की की मध्यस्थता में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच दोहा में हुई उच्चस्तरीय वार्ता में दोनों देश तत्काल संघर्ष विराम पर सहमत हुए हैं. कतर ने उम्मीद जताई है कि यह समझौता पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमा पर बढ़ते तनाव को कम कर क्षेत्रीय स्थिरता स्थापित करेगा.दोहा में हुई इस बातचीत में दोनों देशों के उच्चस्तरीय प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया. गल्फ न्यूज के मुताबिक पाकिस्तान की तरफ से रक्षा मंत्री ख्वाजा मुहम्मद आसिफ और खुफ़िया प्रमुख जनरल असीम मलिक ने हिस्सा लिया. अफगान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद के मुताबिक रक्षा मंत्री मुल्ला मुहम्मद याकूब के नेतृत्व में एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल इस बातचीत में शामिल हुआ जिसमें खुफिया प्रमुख अब्दुल हक वकीक भी शामिल हुए.वार्ता से पहले पाकिस्तान विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा कि अफगानिस्तान से सीमा पार आतंकवाद समाप्त करने और सीमा पर शांति और स्थिरता की बहाली के उपाय किए जाने पर यह बातचीत केंद्रित होगी. बयान में कतर की मध्यस्थता पहल की सराहना करते हुए उम्मीद जताई गई कि ये चर्चाएँ क्षेत्र में शांति और स्थिरता हासिल करने में योगदान देंगी.

### गुजरात के सोमनाथ मंदिर में 3डी लाइट एंड साउंड शो

**सोमनाथ।** गुजरात के सोमनाथ महादेव के दर्शन के लिए देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के समक्ष श्री सोमनाथ तीर्थ की युगों-युगों की गौरवगाथा को उजागर करने वाला 3डी लाइट एंड साउंड शो, मानसून के विराम के बाद पुनः यात्रियों के लिए 19 अक्टूबर से शुरू किया जा रहा है.दीवाली की छुट्टियों में सोमनाथ आने वाले श्रद्धालु सोमनाथ तीर्थ के इतिहास से परिचित हो सकें कि कैसे चंद्रदेव के तप से भगवान सोमनाथ इस भूमि पर अवतरित हुए?कैसे भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी अंतिम लीला दिखाकर निजधाम गमन किया और कैसे यह तीर्थ "प्रभास" कहलाया? इन सभी धार्मिक कथाओं को आधुनिक 3डी तकनीक के माध्यम से दर्शाने के लिए यह लाइट एंड साउंड शो तैयार किया गया है, जो यात्रियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है.यह शो हर वर्ष मानसून के दौरान बंद रहता है, लेकिन दीपावली से पूर्व इसे पुनः यात्रियों के लिए प्रारंभ किया जाता है. बारिश की ऋतु के समापन के बाद सोमनाथ मंदिर में यह लाइट एंड साउंड शो 19 अक्टूबर से शुरू होगा. शो का समय संध्या आरती के बाद शाम 7:45 बजे रहेगा.शनिवार, रविवार तथा त्योहारों के दिनों में यात्रियों की अधिक संख्या को ध्यान में रखते हुए दो शो आयोजित किए जाएंगे. शो के टिकट मंदिर परिसर के बाहर स्थित डिजिटल कैशलेस काउंटर पर शाम 6:00 बजे से तथा मंदिर परिसर में साहित्य काउंटर के पास अलग टिकट काउंटर पर शाम 6:30 बजे से उपलब्ध होंगे.

### ब्राजील में यात्री बस पलटी, 17 की मौत, कई घायल

**ब्रासिलिया।** उत्तरपूर्वी ब्राजील में एक यात्री बस के पलटने से 17 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए हैं. यह हादसा बहिया राज्य से साओलोआ शहर, पेर्नामबुको राज्य की ओर जा रही बस के साथ हुआ. पुलिस के मुताबिक, बस में लगभग 30 यात्री सवार थे. दुर्घटना की वजह बस चालक का नियंत्रण खो देना थी, जिसके कारण वाहन सड़क के विपरीत दिशा में चला गया और सड़क किनारे चट्टानों से टकरा गया. इसके बाद बस अपनी लेन में वापस आई लेकिन फिर एक रेत के टीले से टकराकर पलट गई.पुलिस ने बताया कि चालक को हल्की चोटें आई हैं और उसकी शराब जांच रिपोर्ट निगेटिव पाई गई है. घायलों की संख्या अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन उन्हें नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है. हादसे के कारणों की जांच जारी है.बहिया के गवर्नर जेरोनिमो टेक्सेरा ने सोशल मीडिया पर इस दुखद घटना पर संवेदना व्यक्त करते हुए राहत कार्यों और पीड़ितों की पहचान में प्रशासन की मदद की पुष्टि की है. उन्होंने मृतकों, घायलों और उनके परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की. राहत और बचाव कार्य जारी हैं.

### रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने अटल बिहारी वाजपेयी व पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजेअब्दुल कलाम की प्रतिमा का अनावरण किया, कहा

# देश के साथ लखनऊ विकास के पथ पर तेजी से बढ़ रहा है

**एजेंसी।लखनऊ**

रक्षामंत्री और क्षेत्रीय सांसद राजनाथ सिंह ने रविवार को लखनऊ में भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजेअब्दुल कलाम की प्रतिमाओं का अनावरण किया. इसके अलावा राजनाथ सिंह ने जानकीपुरम सेक्टर एफ में सामुदायिक केन्द्र और सेक्टर 6 में पुस्तकालय का भी लोकार्पण किया.इस मौके पर लखनऊ के सांसद व रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हम सांसद रहें न रहें. लखनऊ के विकास के प्रति हमारी पूरी प्रतिबद्धता कायम रहेगी. जहां तक मुझसे हो सका है मैंने करने की कोशिश की है. राजनाथ सिंह ने कहा कि दुनिया के अन्य देशों से लखनऊ का एयर कनेक्शन बन जाना चाहिए. इसके लिए प्रयास हो रहा है.उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड करिश्माई काम कर रहा है. लोगों को शादी ब्याह करने के लिए स्थान नहीं मिलता था. लखनऊ के हर विधानसभा क्षेत्र में एक बड़ा सामुदायिक केन्द्र स्थापित किया जाएगा. इसके रख-रखाव के लिए थोड़ा बहुत पैसा ही लगेगा. रक्षामंत्री ने कहा कि एक भी पार्क नहीं बचना चाहिए, जहां ओपेन जिम की व्यवस्था न हो. लखनऊ के 301 पार्कों में ओपेन जिम शुरू हो गया और 250 स्थानों पर ओपेन जिम की शुरूआत आज से हो रही है. लखनऊ में 1250 सोलर लाइट लगी हैं. 25 फलाईओवर स्वीकृत है. उसमें 14 बन गये हैं. इसके अलावा 11 फलाईओवर और स्वीकृत हैं.

राजनाथ सिंह ने कहा कि लखनऊ विकास के पथ पर तेजी से बढ़ चला है. विश्व के 10 शहरों में हमारा लखनऊ भी आ गया है. मैं चाहता हूं कि यह लखनऊ नंबर एक पर आ जाय. हमारा शहर विश्वस्तरीय लखनऊ बनना चाहिए. अभी कुछ दिन पहले भारत के स्वच्छता सर्वेक्षण में लखनऊ को भारत के टॉप श्री शहरों में चुना गया. उत्तर प्रदेश में नंबर वन, भारत में नंबर श्री. हमारी कोशिश होनी चाहिए कि लखनऊ स्वच्छता के मामले में नंबर वन बने. मेरी दृष्टि में लखनऊ को एक ऐसा विश्व स्तरीय शहर बनाना है जहां परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत समागम होकार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा, राज्यसभा सांसद बृजलाल, महापौर सुषमा खर्कवाल, एमएलसी मुकेश शर्मा, रामचंद्र प्रधान, महानगर अध्यक्ष भाजपा, आनंद द्विवेदी, विधायक नीरज बोरा, योगेश शुक्ला , राम औतार कनौजिया, सौरभ वाल्मीकि एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे. कार्यक्रम के बाद रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक पार्षद राजकुमारी मौर्य के आवास पहुंचकर उनकी माताजी के चित्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की.


स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 (***पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार**).

आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.